बागी आत्मा

रचना काल-1970-71

उपन्यास

रामगोपाल भावुक

सम्पर्क- कमलेश्वर कोलोनी (डबरा)

भवभूतिनगर

जि0 ग्वालियर ;म 0 प्र 0 475110

मो09425715707, , 8770554097

एक

सुबह की किरणों ने सारी दुनियाँ को तो रात्री की अचेतन अवस्था से चेतन अवस्था में ला दिया, पर माधव के जीवन का दीपक बुझ चुका है। सुबह के सूर्य की किरणों के साथ तो वह नहीं बल्कि उसकी मृत्यु षैया उठी है। ज्यों ज्यों उसकी अन्तिम यात्रा श्मशान के निकट आती जा रही है त्यों-त्यों उदास अर्थी के पीछे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही थी।

जब उसकी अर्थी मरघट तक पहुँची अच्छी खासी भीड़ थी। सभी दुखित जान पड़ रहे थे। जब उसकी मृत शरीर अग्नि ने भस्म कर डाला तो धीरे- धीरे लोग मरघट से जाने लगे। कुछ ही क्षणों में अधिकांश लोग जा चुके थे। पीछे जाने वालों में थे कुछ पढ़े लिखे नव युवक।

लोग मरघट से लौटते वक्त, उस मानव के अतीत में खोये हुए रहते हैं। इस अन्तिम जत्थे का भी यही हाल था। ज्योज्यों कस्बा पास आता जा रहा था त्यों त्यों भावनाओं का बाँध फूटता जा रहा था। एक कह रहा था-'

'अरे! दीन दुखियों की मदद तो कुछ महापुरुष ही करते हैं।'

दूसरा बोला-'क्यों जबरदस्ती माधव को महापुरुष बना रहे हो।'

तीसरे ने पहले वाले की बात का समर्थन करते हुए कहा-'भाई, मैं तो उसे मार्क्स के सिद्धान्तों को मानने वाला सिपाही मानता हूँ।

दूसरे ने फिर बात काटी-' तब तो ये डाकू लोग पक्के साम्यवादी होते हैं।'

पहले वाले ने कहा-' इस व्यवस्था का विरोध करना दोनों का काम है।

दूसरे ने प्रश्न किया-'लेकिन?'

उत्तर में तीसरा बोला-'- कुछ डकैत तो पक्के साम्यवादी होते हैं, अमीरों के उस धन को लूटते हैं, जो मेहनतकश मजदूरों का हिस्सा है जो तिजोरियों में बंद रखा जाता है।

बात पहले ने बढ़ाई-' आप क्या सोचते हैं। सेठ साहूकार पूंजीपति लोग डकैत नहीं हैं बोलो?'

पहला बोला-' अन्तर है मित्र! ये पूंजीपति लोग गरीबों को लूटते हैं और ये डाकू लोग बस अमीरों को।'

तीसरा बोल पड़ा-' माधव तो अमीरों से गरीबों का धन छीन कर गरीबों में ही बाँट देता था। उसने अपने लिये किया ही क्या है?' अमीरों से धन छीना और गरीबों के लिये अस्पताल बनवा डाला।

अब पहले ने बात पूरी की-' इस प्रकार के लोग इस दुनियाँ में थोड़े ही हो जाये तो दुनियाँ से गरीबी मिटते देर नहीं लगेगी। इन स्वार्थी पैसे वालों से तो आज किसी बात का डर है ही नहीं।तभी तो पैसे के बल पर और अधिक पैसा तिजोरियों में बन्द करते जा रहे हैं। समाज में अव्यवस्था फैला रहे हैं।'

दूसरे ने कहा-'इन पूंजीपतियों से तो मैं भी इन डकैतों को अच्छा मानता हूँ। अन्तर इतना है कि ये लोग चोर हैं और वे डकैत। ये चोरी को सरकार की निगाह से बचाते हैं, ब्लेकमेल करते हैं और ये सरे आम इस ब्लेकमेल के धन को लूट ले जाते हैं।'

पहला झट से बोला-'हाँ अब की तुमने मानवता की बात।'

दूसरे ने उत्तर दिया-' नहीं, ऐसीं बातें तो तुम्ही कह पाते हो।'

पहला फिर बोला-' भैया, जानते तो सभी हैं पर कुछ जाने किस लोभ में फसकर गरीब होकर भी अमीरों का साथ दे रहे हैं।'

तीसरा बोला-' चलो ठीक है कस्बा आ गया, उसकी यह बात सुनकर सभी चुप रह गये।

00000

बागी आत्मा 2

दो

दस वर्ष पूर्व.....

वही मकान वही जगह, जहाँ माधव ने अन्तिम साँस ली थी। माधव का पिता विस्तर पर पड़ा पड़ा कराह रहा है। उसके कराहने बातावरण दर्दभरा हो गया हैं। रात का सन्नाटा छाया हुआ है। उसे दम दिलासा देने वाला कोई नहीं है। माधव सोच में है कि वह अपने पिताजी की जान कैसे बचाये? पास में एक पैसा भी नहीं है जो कुछ था वह भी पिताजी की लम्बी बीमारी में स्वाह हो गया। चार माह से तो कोई दिन ऐसा नहीं गया जिस दिन बिना दवा के काम चले। उनका जीवन दवाओं पर निर्भर हो गया है।

जमीदार साहब के घन्टों की आवाज सुनाई दी-'टन.., टन.... टन.।'रात के ग्यारह बज चुके थे। देश को स्वतंत्र हुए कितना समय व्यतीत हो गया। जमींदारी चलीं गई लेकिन उनकी शान शौकत की वजह से जमींदार के यहाँ घन्टे बजने वाला नियम अभी भी समाप्त नहीं हुआ है। वे भले ही कितने ही निर्दयी हो लेकिन आज भी जनता के लिये यह काम उन्होंने बन्द नहीं किया है।

घन्टों की आवाज सुनकर, माधव बड़बडाया ग्यारह बज गये। यकायक उसके मस्तिष्क में एक विचार आया। अपने पिता की जान की खातिर पैसे वालों के यहाँ एक बार और उधार माँगने जाये। किसी न किसी को उस पर दया आ ही जायेगी। वह उठा और एक नजर अपने पिता के जर्जर शरीर पर डाली और दरवाजे से बाहर निकल गया।

दरबाजे से बाहर निकल कर वह सीधा गली के रास्त से चल दिया। जल्दी बापस आने की इच्छा से तेज चाल में चलने लगा। थोड़ा ही आगे बढ़ा होगा कि रास्ते में पड़े पत्थर से टकरा गया। अगर हाथ जमीन पर न टिकता तो निश्चय ही भग्रंकर चोट लगती। वह शीध्रता से सँभलकर उठा और पुनः आगे बढ़ने लगा। थोड़ा ही आगे बढ़ा होगा कि उसके कानों में खुसुर पुसुर की आवाज सुनाई पड़ी। उसने अपने पैरों की पदचाप को रोक लिया। सँभल सँभलकर बिना आवाज किये आगे बढ़ा , वह उस दीवार से जा टिका जिधर से आवाजें आ रहीं थीं।

उसका मस्तिष्क जल्दी जल्दी काम करने लगा। इस सुनसान मकान में रात्री के इतने बक्त ये लोग यहाँ क्यों? ये मकान तो जमींदार साहब की खण्डहर गोशाला है। इसमें किसी के अन्दर जाने का साहस कहाँ से आ गया? क्या ये लोग राव वीरेन्द्र सिंह की मर्जी के बिना यहाँ होंगे?

जमींदार राव वीरेन्द्र सिंह का नाम जुबान पर आते ही उसके चेहरे पर घ्रणा के भाव उभर आये। वह मन ही मन बड़ बड़ाया-' ये वही राव वीरेन्द्र सिंह है जिसने मेरी माँ को कहीं लेजाकर....।

रोंगटे खड़े हो गये। बुरी तरह काँप् गया। तभी उसके कानों में राव वीरेन्द्रसिंह की आवाज कानों में सुनाई पड़ी। वह सोचने लगा - यह मीटिंग क्यों चल रही है? क्या रहस्य है इसके पीछे? मैं भी कैसा हूँ ! जिस कार्य से घर से निकला था क्यों इस व्यर्थ के कार्य में अटक गया। उसे इन बातों से क्या मतलब है? पिताजी बीमार पड़े हैं और मैं इधर जासूसी करने में लग गया। यह सोचकर वह आगे बढ़ गया।

सेठ रामकृष्ण दास का मकान आ गया। माधव ने रात के कारण डरते डरते आवाज लगाई'- सेठजी.....ई.....ई। सेठजी ऊपर पलंग पर पड़े पड़े छत से ही बोले-'क्या है रे माधव, रात को तो नींद लगने दी होती!'

माधव गिड़गिड़ाया- सेठ काका, आज पिताजी की हालत ज्यादा खराब है। कुछ पैसे दे दें तो रात में ही किसी डाक्टर को दिखा दूं।'

सेठजी, गुस्सा बगराते हुए बोले-' तुम्हारा क्या भरोसा? आखिर रात के समय मैं पैसे किस भरोसे पर दूं तुम्हें? भैया कहीं और देख लो। मेरी समझ में तुम्हें तो कोई छदाम नहीं देगा।'

माधव और अधिक गिड़ गिड़ाया, पर उसे रहम कहाँ आने वाला था। जब उसने एक न सुंनी तो वह अपना सा मुँह लिये वहाँ से चल दिया और आगे बढ़ गया। सोचा- पण्डित इन्द्रप्रकाश जी ही शायद कृपा करदें। सोचते सोचते कदम आगे बढ़ते रहे, अब वह पण्डित जी के घर के सामने खड़ा था। रात का समय संकोच में धीरे से आवाज लगाई, अन्दर से काई जबाब नहीं मिला। सोचा- बारह बज गये होंगे। वे सो गये होंगे। यह सोचते हुए वह निराश होकर घर के लिये लौट पड़ा।

अब वह उसी रास्ते से नहीं लौटा। उसने सोचा आशा के पिताजी से कुछ ले आऊंगा। वे तो घर में होंगे तो दे ही देंगे। सोचते हुए वह उनके घर के सामने पहुँच गया पर उन्हें संकोचवश आवाज न लगा सका। सोचा- न हो तो पिताजी को ही पीठ पर लादकर, डाक्टर के यहाँ लेकर जाता हूँ। वे तो भगवान का रूप होते है। यों वह मन मार कर लौट पड़ा। सोचा- डाक्टर के यहाँ उन्हें ले जाने

की जरूरत नहीं है। वे उनकी हालत से पूरी तरह परिचित हैं। न हो तो सीधा उन्हीं के यहाँ चलता हूँ। यह सोचते हुए वह डाक्टर के यहाँ पहुँच गया।

संयोग से उनका दरवाजा खुला था। डाक्टर साहब किसी अन्य मरीज को देख रहे थे। वह उनके सामने पहुँच गया। बोला-'डाक्टर साहब पिताजी की हालत बहुत अधिक खराब है।'

वे बोले- हम रात दिन आप लोगों की सेबा करें, तुम हो कि दवाओं के पैसे तक तो दे नहीं पाते।'

माधव गिड़गिड़ाया-'डाक्टर साहब, पिताजी को तेज बुखार है। सुबह आपके पैसे दे जाउंगा।'

' ठीक है सुबह दे जाना, ये दो गोली लिये जाओ, जाकर अभी एक गोली उन्हें खिला देना। आराम मिल जायेगा। एक गोली सुबह खिलाकर मेरे पास ले आना।'

मधव इतने में ही संतोष कर लौट पड़ा। जब वह घर पहुँचा, उनका शरीर तप रहा था। पिताजी बेहोशी की अवस्था में थे। उसने कैसे भी उनका मुँह फाडकर, उन्हें एक गोली खिलाई। खटिया के पास जमीन पर ही बैठ गया। बुखार कम होने की प्रतिक्षा करने लगा।

गोली खिलाने के वाद भी बुखार कम नहीं हुआ। उन्हें होश नहीं आया। वह घबड़ा गया। डाक्टर के पास पुनः जाने की सोचने लगा। सोचा-' बिना फीस लिये इतनी रात में आने वाला नहीं है। मन नहीं माना तो वह डाक्टर के यहाँ जाने के लिये उठ खड़ा हुआ।

00000

बागी आत्मा 3

तीन

रात के लगभग साढ़े बारह बज चुके थे। रात का सन्नाटा छाया हुआ था। तारों की रोशनी में रास्ता चलने में परेशानी नहीं हो रही थी। तभी लोगों की भाग-दौड़ की आवाज सुनाई पड़ने लगी। माधव सोचने लगा-कहीं डकैत तो नहीं हैं तभी रात में ये हलचल, ये संकेत की आवाजें सुनाई पड़ रहीं हैं। इस कस्बे में बारदातों का यह चौथा पाँचवा नम्बर है। माधव सारी स्थिति समझ गया। उसके मस्तिष्क में आया, क्या राव वीरेन्द्रसिंह खण्हर वाली गोशाला में इसी बात की मीटिंग हो रही थी। अब सब बातें जो उसने सुनी थीं, समझ में आ गईं-' तुम इधर से जाना, जब तक यह वहाँ नहीं पहुँचे तुम्हें वहाँ से हटना नहीं है।'

इसका मतलब इन सब बातों में राव वीरेन्द्रसिंह का हाथ। बहुत दुष्ट है यह । इस पर गुस्सा तो बहुत आता है पर जब आदमी विवश होता है अपना मुँह भी नहीं खोल सकता है। इतना ही सोच पाया था कि उसे लगा कुछ लोग इधर ही आ रहे हैं तो वह वहाँ से हटकर पास की गली में घुस गया और ऐसे स्थान पर आकर खड़ा हो गया जहाँ, किसी की निगाह न पड़े।

उसी समय माधव को फुसफुसाहट सुनाई पड़ी-' गली में डाकू! मधव समझ गया रात के अंध्ेरे में मुझे डाकू समझ लिया गया है। मैं डाकुओं से बचने जान बचाने गली में आया। इन लोगों ने मुझे डाकू समझ लिया। माधव वहाँ से भागा। वह भग भी न पाया था कि किसी ने ऊपर की मुड़ेर से पत्थर पटक दिया। यदि वह भागकर गली से न निकला होता तो पत्थर उसके सिर पर ही आकर गिरता और उस की चपेट में आने से उसका कचूमर निकल जाता।

माधव समझ गया कि ये शिलाखण्ड मेरे ऊपर ही गिराया गया था। मैं पहले सोचा करता था - ये घनी लोग अपने मकानों की मुडेरों पर इतने बड़े बड़े पत्थर क्यों रखते हैं। आज उनका उपयोग समझ पाया हूँ। अब वह तेज कदमों से घर की ओर चला जा रहा था।

उसका घर थोड़ी ही दूरी पर था। उसे घर पहुँचने के लिये एक चौराहा पार कर रहा था तभी उसके कानों में कुछ षब्द सुनाई पड़े-'वह एक मकान की आड़ लेकर खड़ा हो गया। जिससे वह लोगों की निगाहों से बच सके। अब वो आवाजें स्पष्ट सुनाई देने लगीं-' कोई किसी के पीछे अपनी जान मत दे देना। कोई किसी के पीछे अपनी जान मत दे देना।' यह आवाज पास आती चली गई। यह निश्चित हो गया कि डाकू लोग यहीं से निकलकर जायेंगे।

माधव हतप्रभ सा खड़ा रह गया। उसके सोचने में आया- लोग कहते हैं, कभी कभी डाकू लोग बड़ी दया दिखलाते हैं। सुना है गरीबों पर तो बडे दयाबन्त होते हैं। इनके दुश्मन होते हैं तो ये पूजीपति लोग। मैं क्यों न अपने पिताजी के इलाज के लिये इनसे ही माँगकर देखता हूँ। अरे! बहुत होगा मार ही तो देंगे। अभी भी तो मरा मराया ही हूँ। यह सोचकर वह थोड़ा आगे बढ़कर उनके रास्ते में जाकर खड़ा हो गया जिससे वह उनके सामने पड़ जाये।

जैसे ही डाकू लोग वहाँ से निकले, दस बारह लोग रहे होंगे। उसका दिल घड़कने लगा। यदि वह एक भी मिनिट वहाँ और खड़ा रहता तो यातो मारा जाता, या उसका उदेश्य ही पूरा नहीं हो पाता।। उन्हें आते देख माधव बोला-'अरे! सारे कस्बे को छानमारा पर इस कस्बे में कोई गरीबा परें, दीन दुखियें पर, दया दिखाने वाला कोई नहीं दिखा।'

उनमें से एक बोला-' क्या बकता है? साफ साफ कह।'

माधव ने साहस करके कहा-' मेरे पिताजी बीमार पड़े हैं। मैं उनकी देखभाल के चक्कर में कोई काम भी नहीं कर पाया। सारे कस्बे में उनके इलाज के लिये पैसे माँगता फिरा हूँ जिससे अपने पिताजी का डाक्अर से इलाज करा सकूँ। इस कस्बे में कोई दयावान नहीं निकला जो मेरी सहायता कर देता।'

उसके कानों में आवाज सुनाई पड़ी-' अबे साले क्या बकता है, तुझे मरनास तो नहीं हैं। तभी उनमें से एक आगे बढ़ा और बोला-' क्यों रे बातों में उलझाकर धोखा तो नहीं दे रहा है?'

उसकी यह बात ध्यान से सुनते हुए हाथ में माउजर लिये पास आकर बोला'-'मैंने इसकी बातें सुन लीं हैं, मुझे तो इसके कहन में इसकी चीख सुनाई पड़ रही है। रे! तेरी बातें सुनकर मुझे अपनी माँ और बापू की याद आ गई। काश! तुम्हारी तरह मै ंअपने माँ बाप की सेबा कर पाता। बोल-' इलाज के लिये कितने रुपये चाहिए, बोल?'

' जितने आप सहजता से दे सकें। मगर मैं भीख नहीं माँग रहा हूँ। उधार चाहता हूँ।'

' उधार चुका सकोगे?'

' जी, पर यह नहीं कह सकता कि कब चुका पाउंगा। पर चुकर अवश्य दूंगा।'

‘ उधार मुझे क्या चुकाओगे! ऐसे ही किसी बेवश को दे देना।’ यह कह कर उसने एक सौ का नोट उसके हाथ में थमा दिया और चलने लगा। माधव ने पूछज्ञ-‘ आपका परिचय?’

वह जाते हुए बोला-‘ रें हम बागियों का भी कोई परिचय होता है! यह कहते हुए वह चला गया। माधव मूर्तिवत् वहीं खड़ा रहा। जब डाकू चले गये तो वह सोचते हुये दबे पाँव आगे बढ़ा-लोग इन डाकुओं को बुरा क्यों कहते हैं। सच्चे डाकू तो ये पूंजीपति लोग होते हैं पर इन्हें कोई डाकू नहीं कहता। गरीब और अमीर दोनों ही इन्हें बागी कहते हैं। क्या नीति की इस मनोवृति पर पूंजीपतियों का ही अधिकार है। इसी कारण यह व्यवस्था आज तक स्वीकारी जा रही है। यही सोचने में उसका घर आ गया।

माधव ने घर में प्रवेश किया। उसके पिताजी की हालत बैसी की बैसी ही थी। रोज तो करवटे बदल बदलकर नींद भी आ जाती थी आज नींद भी गायब थी। कमजोरी के कारण जी घवरा रहा था। माधव को लगा कि डाक्टर को बुलाना अनिवार्य है,यह सोचकर घर से निकल पड़ा।

सुबह का संकेत देने वाले जमीदार साहब के घन्टों की आवाज रोज की तरह सुनाई पड़ी। सुबह के चार बज चुके थे। वह डरा सहमा सा डाक्टर के पास पहुँचा। आवाज दी।वह अभी अभी ही सोया था। माधव के आवाज देने पर कोई उत्तर नहीं आया तो उसने पुनः आवाज लगाई-‘ अरे! डाक्टर साहब.....।’

डाक्टर ने आवाज पहचान ली। बोला-‘क्या है माधव, क्या डाकुओं से मरवाना चाहता है?

मधाव झट से उत्तर दिया-‘ डाक्टर साहब डाकू तो चले गये। अब तो चलकर मेरे पिताजी को देख लो। आपकी जो फीस होगी नगद दे दुंगा।’

फीस की बात सुनकर वह बोला-‘ तुम्हें पता है रात्री के समय मैं किसी के घर जाने की दस रुपये फीस लेता हूँ।

‘ डाक्टर साहब आप चिन्ता नहीं करें, आप तो चलें।’

डाक्टर माधव के साथ चल दिया। थोड़े ही आगे बढ़े होंगे कि माधव बोला-‘डाक्टर साहब आप तो मेरा एक काम कर दो।’

‘ क्या काम?’

माधव ने झट से कहा-‘ आप तो मेरे पिताजी को ठीक करने का ठेका सौ रुपये में ले लो।’

सौ रुपये की बात सुनकर डाक्टर बोला-‘ सौ रुपये में उनके ठीक होने का इलाज! पक्का रहा वायदा। तुम्हें रोज रोज की पैसे की झंझट नहीं रहेगी। पर इतनी रात गये तुम्हारे पास इतने रुपये कहाँ से टपक पड़े?’

डाक्टर की यह बात सुनकर वह घबड़ा गया। सोचा क्या बहाना बनाऊँ? बात खुल न जाये इसलिये झट से बोला-‘ इन बातों से आपको क्या? आप तो पिताजी के इलाज की बात करो।’

डाक्टर के मन में प्रश्न खड़ा होकर बैठ गया। वह घन्धे की बात छोड़ना नहीं चाहता था। यह सोचकर वह बोला-‘ ठीक है मुझे क्या?

यह सुनकर माधव ने देर नहीं की, जेब से सौ का नोट निकाला और डाक्टर की ओर बढ़ा दिया। डाक्टर ने उसे जेब के हवाले करते हुए कहा-‘ माधव आप अब अपने पिताजी के इलाज की चिन्ता नहीं करें। वे जल्दी ही ठीक हो जायेंगे। उनका इलाज करना मेरा जुम्मा रहा, समझे।’

मधव म नही मन इस सब के लिये डाकुओं को दुआयें दे रहा था।

सुबह होते ही गांव की चहल-पहल देखने के लायक थी। सभी डरे हुए से जान पड़ते थे। कस्बे में सभी जान गये थे कि माधव रात डाकुओं से मिला है। पूंजी के नुमायन्दों ने जाल फैलाना शुरू कर दिया। एक गरीब पूंजी के चंगुल में फंस गया। फड़फड़ाने लगा। अपने को कोसने लगा रात क्यों डाकुओं से मुलाकात हो गई ? आह ! काश ं ं ं‘

माधव को तो इन बातों का उस वक्त पता चला जब उसके दरवाजे पर पुलिस आ गई। उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी कुछ भी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे ? लेकिन इतना उसे स्पश्ट हो गया कि डकैती का अपराध उस पर लगा दिया गया है।

कोई भी आदमी बागी कब बनता है। जब उस पर झूठे अभियोग लगा दिये जाते हैं। आदमी उनसे बचने को छटपटाता है, पर बच नहीं पाता। विवश हो जाता है। उसकी आत्मा बागी बन जाती है।

जब पुलिस माधव को ले जाने लगी। उसने स्थिति को समझकर धीरज से काम लिया और चलते-चलते अपनी पड़ोसिन चाची से कह गया। ‘‘चाची मुझे जैसा समझा जा रहा है, मैं वैसा नहीं हूँ। चाची यह बात बिल्कुल गलत है। अब आप ही पिताजी की देखभाल करना। उन्हें सांत्वना देती रहना।

पुलिस माधव को लेकर जागीरदार के घर पहुंची। माधव चारों ओर से निराश हो चुका था। मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं। उसे लगने लगा यह सब उसी ने करवाया है। वह अपने मुख की मुद्रा में परिवर्तन लाने की कोशिश करने लगा। लेकिन ं ं ं ।

जब किसी शरीफ आदमी पर कोई अभियोग लगा दिया जाता है। उसके चेहरे की रौनक चली जाती है।

उस वक्त उसके मन में यह बात घर कर जाती है कि हर कोई उसे अभियोगी समझ रहा है। यदि वह न्यायालय से मुक्त भी हो गया तो समझा जाता है ले देकर कैसे भी बच गया। वह इस चिन्ता में डूबा था कि राव वीरेन्द्र सिंह ड्योढ़ी से निकलकर बैठक में आये। माधव को देखकर चेहरे पर क्रोध लाते हुए, बोले- 'क्यों रे मधुआ तुझे यह सब करने में शर्म नहीं आई।'' माधव को भी क्रोध आ गया बोला-

''क्या काम करते काक ? फिर से तो कहियो।''

''हां हां कह तो रहा हूँ रे मधुआ। तूने तो डाकुओं से भी दोस्ती कर ली।''

'मेरी उनसे दोस्ती काक ?'

'तो क्या रे मधुआ, उनसे लूट में से हिस्सा उस चौराहे पर मैंने लिया था।'

'लेकिन काका मैंने तो उनसे उधार लिया था।'

'देखा इंस्पेक्टर साहब, लिया हिस्सा और कहता है उधार लिया है। मैंने सुना है दरोगा जी ये बड़ी रात तक गांव में चक्कर लगाता रहा। रात को गांव में चक्कर लगाने का क्या काम है ?'

'दरोगा जी आप अभी देख लो कि मेरे पिताजी बीमार हैं या नहीं। उन्हीं के इलाज के लिए पैसे मांगता फिरा। पर कहीं नहीं मिले तब मैंने ं ं ं।'

'तो क्यों रे मधुआ, पैसे नहीं मिले तो क्या बदमासों से दोस्ती करते हैं। अपने बाप को बचाने मैं दूसरे का धन लुटवा दिया।' माधव ने सोचा कि फंस तो गया ही हूँ। अब क्यों डरूं ? यही सोचकर बोला 'काका यह सब तुम्ही ने कराया है तभी तो आपके उस गोशालो वाले मकान में वे सब लोग छिपे हुए थे।'

यह सुनकर राव वीरेन्द्र सिंह गुस्से का भाव प्रदर्शित करते हुये दरोगा जी की ओर इशारा करके बोला- 'देखा इन्सपेक्टर यह बदजात उल्टे मुझे ही लांछन लगाने लगा। इसे समझाओ न।'

यह बात सुनकर दरोगा जी ने उसकी अच्छी मरम्मत कर दी। माधव को अपना मुंह बन्द कर लेना पड़ा। वह सोचने लगा- यहां सच कहना भी पाप है। यदि कुछ कहूँगा तो फिर मार पड़ेगी।' इस वीरेन्द्र सिंह को मैंने ही मजा नहीं चखाया तो किसी ने न चखाया। इसने तो झूठ को सच और सच को झूठ कर दिया।'

राव वीरेन्द्र सिंह तिरछी दृश्टि से माधव की ओर देखते हुए दरोगा जी से बोला-' 'देखो दरोगी जी, मार पड़ी और बच्चू चुप। अरे मार के मारे तो यह खुद ही सच-सच बता देगा।'

अब दरोगा महेन्द्र ंिसह बोला- 'छोड़ो साहब, कुछ धन्धा पानी हो तो करा दो।'

धन्धे पानी की बात सुनकर राव वीरेन्द्र सिंह सोचने लगा-

' दरोगा को सारी बातें पता चल ही गईं हैं। इस मधुआ को बचा दिया तो ये मेरे सिर पर सवार हो जायेगा। यही सोचकर वीरेन्द्रसिंह बोला - 'अरे इन्सपेक्टर साहब आप धन्धे पानी में क्या चोर को छोड़ दोगे, फिर इससे धन्धा पानी। इस पर क्या रखा है ?' यह कहते हुए एक लिफाफा दरोगा जी की ओर बढ़ाकर बोले-

'जरा इस बेचारे का ध्यान रखना, अपना आदमी है।'

'आप बिलकुल चिन्ता न करें। इसका ध्यान रखना मेरा काम है।' कहते हुए इन्सपेक्टर उठ खड़ा हुआ और माधव को लेकर थाने चला गया।

बागी आत्मा 4

चार

जब से पुलिस माधव को लेकर गई थी, माधव के पिता मायाराम की तबियत और अधिक खराब हो गई थी। लेकिन भागवती, माधव की चाची की सेवा एवं सान्तवना से उसके स्वास्थ्य में कुछ सुधार हुआ। जब मायाराम घबड़ा जाता तो भागवती मायाराम को सांत्वना देती हुई कहती-

'अरे लाला ऐसे घबड़ाओगे तो तुम अच्छे ही नहीं हो पाओगे फिर उसके केस की देखभाल कौन करेगा ? उसे कौन बचायेगा।'

यही विचार मायाराम को स्वस्थ बनाने की कोशिश कर रहा था। डॉक्टर भी अपना फर्ज पूरा कर रहा था, फिर भी उसे चलने-फिरने लायक होने में एक माह लग गया। जब वह माधव से मिलने गया, कोर्ट में माधव की तारीख थी। किसी ने उसकी जमानत नहीं दी थी। मायाराम ने जमानत कराने की कोशिश की, लेकिन उस पर तो पक्का अभियोग था। जमानत न हो सकी मुकदमा चला, पैसे की कमी से अच्छा वकीन न मिल पाया।

अन्त में वह दिन आ ही गया जब केस का फैसला होना था। अब तो मायाराम अपने भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि उसे सजा तो होगी ही पर कम से कम हो।

माधव को फैसला सुनाया गया। उसे 6 माह की सजा हुई। माधव का पिता 6 माह की सजा सुनकर बेहोश हो गया।

अब तो उसे राव वीरेन्द्र सिंह पर गुस्सा आ रहा था। वह बड़बड़ाया 'वाह रे वीरेन्द्र सिंह, क्या अभी भी तेरे दिल में दया नहीं आई। बचपन में ही तूने माधव की मां छीन ली और अब इसे जेल। अरे कुछ बिगाड़ा था तो मैंने ं। सजा देता तो मुझे, इसने क्या बिगाड़ा ? बिगाड़ा भी क्या ? अन्याय के प्रति विद्रोह करना क्या पाप हो गया ? दो-दो बार लगान कोई भी नहीं वसूल करता है। मैंने इसका विरोध किया तो उसकी सजा मुझे दी अब मेरे बच्चे को भी दे रहा है।'

जब मायाराम गांव आया तो घर-घर में यही चर्चा थी। गांव के अिाकांश लोग दुखित थे, पर वीरेन्द्र सिंह से कुछ भी न कह पा रहे थे। सच्चाई सभी जान गये थे। मायाराम का हृदय जल रहा था। क्या करे ? क्या न करे ? इतनी बड़ी हस्ती से टकरा पाना सम्भव भी नहीं था। उसने अपने मन को समझाया। उसे तो 6 माह व्यतीत करने थे।

ि

ि

वह दिन आ ही गया, जब माधव को जेल से मुक्ति मिली। जब वह घर आया उसके पिताजी की तबियत ज्यादा खराब थी। खटिया पर पड़े थे। माधव उनकी हालत देखकर दनके चरणों में गिर पड़ा। शब्द निकले -'पिताजी मैं पूर्ण निर्दोश हूँ।'

'जानता हूँ बेटा। जानता हूँ। मुझे सब मालूम हो गया है। ये राव वीरेन्द्र सिंह है न ं ं ं, खों ं ं ं खों ं ं तेज खांसी आई दम फूल गया। आंखों से आंसू झरने लगे और एक क्षण बाद आंखें खुली की खुली रह गईं। माधव चीखाा, पिताजी-इ-इ-शेश रह गया मृत शरीर।

उस दिन उसने चाचा-चाची एवं आशा के पिताजी के सहयोग से पिताजी का अंतिम संस्कार किया।

माधव को कस्बे का कोई भी व्यक्ति सान्तवना देने न आया। वह अकेला सोचता रहा - कितना डर है लोगों को राव वीरेन्द्र सिंह का। लोग सुख - दुःख की दो बातें भी नहीं कर सकते। चाचा-चाची एवं आशा के पिताजी ही पूरे गांव में ऐसे थे, जो माधव के पास यदाकदा आ जाते।

धीरे-धीरे समय व्यतीत होने लगा। कई प्रश्न, कई उत्तर, पर अधिकांश प्रश्नों का एक ही उत्तर आता था राव वीरेन्द्र सिंह। पर कब तक चलेगा यह क्रम। पुश्तैनी दुश्मनी का अन्त राव वीरेन्द्र सिंह के रहते तो सम्भव नहीं। क्या वह इन सब का बदला ले पायेगा ?

चम्बल के बीहड़ों में इस प्रकार के बदला लेने के जाने कितने क्रम चलते रहते हैं। कितने लोग प्रतिदिन बागी बनते हैं, जिससे सारा क्षेत्र आतंकित रहता है।

ि

ि

माधव के कस्बे से कुछ दूरी पर एक देवी का मन्दिर है। गर्मियों के दिनों में चैत्रमास के नव दुर्गाओं के दिनों में सप्तमी के दिन मेला लगा करता है। मेले का आनन्द दोपहर के बाद आता है। सुबह के समय से देवी के दर्शन करने वालों की भीड़ लग जाती है। दूर-दूर के लोग यहां अपनी अपनी अभिलाशाएं लेकर आते हैं।

मन्दिर के पास पहाड़ियों के बीच एक पानी का कुन्ड है। नीला स्वच्छ जल देखकर लोग उसके आस-पास झाड़ियों में बैठने आ जाते हैं। माधव भी मन बहलाने के लिए देवी दर्शन करने गांव से चल पड़ा। उसके वस्त्र उतने साफ सुथरे तो न थे वह सोचते हुए चला जा रहा था -

'मैं चाहे जितने अच्छे वस्त्र पहन कर जाऊं लोग तो मुझे डाकुओं का यहयोगी ही समझेंगे। वस्त्रों से आदमी का आचरण नहीं बदला जा सकता है।'

रास्ते में ही दोपहर हो चुकी थी। कस्बे के अधिकांश लोग मेले में जा चुके थे। कुछ लोग अभी भी मेले में जा रहे थे। वह भी एक टोली के साथ हो लिया। लेकिन माधव ने महसूस किया कि लोगों को उसका साथ खल रहा है तो उसने लोगों को आगे निकल जाने दिया और स्वयं पीछे-पीछे चलने लगा। चलते-चलते वह सोचने लगा- आज मैं देवी से क्या मांगूगां ?

क्यों न देवी से यह मांग ुलियो जाये कि हे देवी ! मेरे अन्तर में छिपी दया छीन ले और मुझे बागी की आत्मा दे दें। यह सोचते में उसका हृदय कांप गया। मैं इतने दिनों से मेले में जाता रहा हूँ। कभी कुछ मांगने को मन भी नहीं हुआ। आज मेरी इस हृदय की बात को देवी ने सुन तो नहीं लिया। उसे साथी कैदी की बात याद हो आई। वह कहा करता था -

'यार माधव मैं ईश्वर पर कभी विश्वास नहीं करता था। मेरे गांव के किनारे पर नदी थी। नदी के ऊपर महादेव जी का एक मन्दिर था। मैं स्नान करने नदी पर जाया करता था लौटते वक्त मन्दिर के पीछे से निकल आता था।'

एक दिन मैं स्नान कर मन्दिर के पिछवाड़े वाले रास्ते से निकल कर घर जा रहा था। सामने नदी की ओर स्नान करने आते हुए एक महात्मा जी दिखे। हमें आते देख बोले-' 'तुम मन्दिर में होकर जाते हो न !'

'नहीं तो मैं ईश्वर पर विश्वास नहीं करता।' यही तो कहता था वह कैदी।

'ठीक है तुम ईश्वर पर विश्वास करो, चाहे न करो पर मैं एक बात कहता हूँ।'

'क्या ?'

'स्नान करने के बाद भगवान के सामने से निकलकर जाया करो।'

'उनके कहे अनुसार मैं स्नान करने के बाद, मन्दिर के सामने से निकल कर जाने लगा। एक दिन मन में आया कि आज मूर्ति के दर्शन करता चलूं। यह सोचकर मैं शंकर जी के शिवलिंग के सामने पहुंच गया। मन में आया 'तू कैसा भगवान है ? मैं अपने शत्रु से बदला ही नहीं ले पा रहा हूँ और सच मानिये, ऐसा संयोग बना कि मैंने उसी दिन अपने शत्रु से बदला ले लिया और उसके बाद यहां कैद खाने में हूँ।

इस सोचने में माधव का रास्ता कट गया। उसका दिल कांप गया कहीं देवी ने उसकी प्रार्थना सुन तो नहीं ली। अब उसे सुन पड़ रहा था- आज हो रही देवी के आंगन में भक्तों की भरमार रे।

अब वह भीड़ को चीरता हुआ दुकानों का दृश्य देखता हुआ, मन्दिर के दरवाजे पर पहुंच गया। घन्टों के बजने की झन्कार उसके कांनों में गूंजने लगी। अब वह दर्शन करने और आगे बढ़ गया। भीड़ की वजह से क्या मांगूंगा ? वाली बात भूल गया। पर जब माधव देवी के सामनें पहुंचा तो उसके हृदय में एक बात गूंज गई ं ं ं मां मुझे बागी की आत्मा दे दे जिससे मैं ं ं ं ' सोचते ही कांप गया। इतने में लोगों का पीछे से धक्का पड़ा तो वह देवी के सामने से हट गया। तब वह परिक्रमा देने में लग गया।

माधव वहां से निवृत्त होकर कुन्ड की ओर चला गया जहां पानी पीने वालोंका तांता लगा हुआ था। माधव ने उस कुन्ड का जल ग्रहण किया। एक पेड़ की घनी छाया देखकर बैठ गया।

देवी ने मेरी आत्मा की बात सुन ली हो, तो मां मेरी यह बात और सुन ले कि 'मैं गरीबों को सताया न करूं। दीन-दुखियों की मदद किया करूं।'

आज मैंने भी मांगा तो क्या मांगा ? रावण की अमरता की तरह कुम्भकरण की नींद की तरह ये क्या मांग बैठा ? क्यों नहीं विभीशण की तरह राम की सेवा, पर ं ं ं। पर शब्द जोर से निकल गया तो वह समझ गया। किसी ने सुन तो नहीं लिया। इसी समय एक नारी की आवाज उसके कानों में पड़ी- पर क्या माधव ?'

वह सम्हलते हुए आशा की ओर देखने लगा। एक सुन्दर सी प्रतिमा, यौवन की महक लिये मुस्कराहट बिखरती कोई अप्सरा धरती पर विचरण करने आई हो। कई मनचलों की निगाह उस ओर उठी हुई थी, उत्तर में देर न हो जाये, सम्हलते हुए माधव बोला-मेरे साथ तुम होती पर ं ं ं । तुम नहीं थीं।'

'झूठ बोल रहे हो माधव ?'

'झूठ बोलना तो अब मेरा पेशा हो गया ?'

'सच ?'

'सच ही समझो ं ं ं। मेरा सच झूठ है और लोगों का झूठ सच।'

'तो क्या ?'

'देखा तुम्हें भी मेरी बातों पर यकीन नहीं आ रहा है। डाकुओं का सहयोगी हूँ।'

'माधव मैं तो यह नहीं मानती हूँ।'

'सच कहती हो।'

'हां ।'

'तब तो मैं बहुत बड़ा भाग्यवान हूँ। कि इस संसार में ऐसा भी कोई है जो मुझे शरीफ समझता है। आशा ऽ ऽ ऽ, मैं अपने जीवन से तंग आ गया हूँ। कहीं ! मेरे चाचा-चाची न होते तो ं ं ं तो भूख से तड़प-तड़प कर मर जाता।'

'तो क्या तुम्हें सारी जिन्दगी चाची ही खिलाती रहेगी। कुछ काम किया करो बैठे-बैठे।'

'मेरा तो किसी काम में चित्त नहीं लगता है। फिर इस कस्बे में मेरे से कौन काम करायेगा ? चोर डकैतों से तो सभी डरते हैं।

तो क्या ? डाकू बनकर ही तुम्हारा काम चलेगा।'

'क्यों व्यंग्य कसती हो आशा ! पर इस व्यंग्य में भी कितनी सच्चाई है ?'

'सच्चाई है, तो क्या सच में डाकू बनोगे ?'

'मुझे तो लगता है, बिना बागी बने कुछ न हो पायेगा।'

'तुम कुछ नहीं कर सकते इस दुनिया का। क्लाश में जिन सिद्धांतों पर लड़ जाते थे वे शायद छोड़ देने पड़ेंगे।'

यह बात सुनकर तो उसे चेतना हो आई। चेहरे पर चमक आ गई। इस एक वाक्य ने उसे नई दिशा प्रदान कर दी, वह बोला-'ठीक कहती हो आशा, शायद मुझे अपने सिद्धांत छोड़ने पड़ेंगे पर बागी बन कर भी तो गरीब और असहयोग की सेवा की जा सकती है।

'तुम्हारी बातों से तो ऐसा लगता है कि तुमने बागी बनने का इरादा पक्का बना लिया है।

'इरादा पक्का होता जा रहा है। इस विकल्प के अलावा कोई दूसरा विकल्प भी तो नहीं दिख रहा है।'

'विकल्प ढूंढने पर अनेकों निकल सकते हैं। तुम्हें तो मेरी जिंदगी से खिलवाड़ करने की पड़ी है।

'कैसे ? कैसे ? समझा नहीं ?'

'तुम्हें इतनी समझ होती तो बागी बनने की बात न सोचते।'

'यानी तुम चाहती हो अत्याचारी का विरोध न करूं।'

'विरोध करने का क्या मात्र यही तरीका है।'

'मुझे कुछ और नहीं दिखता ?'

'मेरे मां बाप तुमसे, फिर मेरी शादी न कर सकेंगे। चाहे उन्हें बचन से मुकर जाना पड़े। ये चिर-मिलन की आशायें चिर-जुदाई में बदल जायेंगी।

'आशा मैं कोशिश करूंगा कि राव वीरेन्द्र सिंह के अत्याचार सहन करता रहूँ।'

'अच्छा ये बातें फिर कभी हांेगी। अभी मैं चलती हूँ। मम्मी बाट देख रही होगी।' कहते हुए वह वहां से चली गई और भीड़ में अदृश्य हो गई।'

'माधव सोचता रहता- अब तो ऐसा मौका आ जाये, जिससे अपने पिता का बदला ले सकूं। मेरा यह जीवन भी क्या, मृत जैसा ही है। जिसमें न चैन है न आत्म सम्मान है। भोजन की समस्या सामने खड़ी है। इस गांव में काम भी नहीं मिलता। ?

वीरेन्द्र सिंह के घण्टों ने आठ घन्टे बजाये। माधव के चाचा ने खना खाने के लिये बुलाया। माधव को लगा- आज चाचा खाने पर बुला रहे हैं, आश्चर्य, चाचाजी मुझ से कभी बात ही नहीं करते, चाची जी ही मेरे खाने पीने का ध्यान रखतीं हैं। चांद कहीं पश्चिम से तो नहीं निकला। माधव ने अवसर नहीं खोया। वह खाना खाने रयोईघर में पहुया।

दोनों खाना खाने लगे। चाचा सुखनन्दन बोले - 'हमारे सिंचाई विभाग में एक नौकरी की जगह खाली है। ईमानदारी का काम है। तुम चाहो तो चलना। मैं साहब से कह दूंगा। शायद काम हो जाये।'

दूसरे दिन माधव चाचा के साथ गया था। माधव को लेकर सुखनन्दन साहब से मिला। साहब ने पूछताछ की। उन्हें पता चल गया कि माधव सजा काटकर आया है तो उसने उस नौकरी देने से इंकार कर दिया। बेचारा माधव निरोश होकर घर लौट आया। घर आकर सोचता रहा। काश ! ये राव वीरेन्द्र सिंह पीछे न पड़ता तो आज ं ं ं। इस बात के मन में आते ही उसके दिल में राव वीरेन्द्र सिंह के प्रति क्रोध की ज्वाला सी जलने लगी। जो तन, मन दोनों को झुलसा कर राख बनाने लगी।

बागी आत्मा 5

पांच

समय अपनी गति से चलता है। शेश संसार के सभी कार्य समय के साथ घटते, बढ़ते रहते है। शिशु पौधा समय के साथ पनपता है। यौवन को प्राप्त होता है। उस समय उसकी सुन्दरता दर्शनीय होती है।

आशा यौवन की ऊची सीढ़ी पर पहुंच चुकी थी। पूर्णिमां के चांद की चांदनी चारों ओर बिखेरने लगी थी। माधव को उस विशय पर सोचने में आनन्द आता था। आशा की बातों पर ध्यान आते ही वह स्वप्न लोक में खो जाता था। उससे शादी कैसे होगी ? यह चिन्ता उसके मन में समा जाती थी।

इस विकराल परिस्थिति के बाद भी आशा के माता-पिता अपनी बात से नहीं मुकरे थे। शिवरात्री का दिन था। आशा मन्दिर में शिवजी पर जल चढ़ाने जा रही थी। व्रत के कारण चेहरे पर अपूर्व सन्तोश था। बालों में कभी कंघी नहीं की थी तो वह जूड़ा बांधे मदमाती चाल में हाथ में जल का कलश लिए मन्दिर की सीढ़ियों पर चढ़ने लगी।

इस भेश ने उसकी सुन्दरता को कई गुना बढ़ा दिया था। सामने से जल चढ़ाकर आते हुए राव वीरेन्द्र सिंह दिखे। धोती कुरता में सजे राव वीरेन्द्र सिंह शिवजी के सच्चे भक्त नजर आ रहे थे। आकर्शक चेहरा, रंग गोरा। सामने वाले को अपनी ओर आकर्शित करने के लिए पर्याप्त था। आशा उन्हें देख घबड़ा गई। सोचने लगी, उल्टे पांव लौट जाए, वह इतना ही सोच पाई थी कि वह नजदीक आ चुका था। सामने आकर रास्ता रोक कर खड़ा हो गया। बोला-

‘कहो आशा रानी, हम पर भी कभी मेहरबानी होगी ?‘ यह बात सुनकर भी वह चुप रही। निगाहें झुका लीं। स्थिति को देखते हुए वह बोला-‘मैं तो मनुश्य हूँ। देवता भी तुम्हारी मेहरबानी के लिए तरस जायेंगे।‘

आशा बोली- ‘आप मेरे पिता की उम्र के हैं आपको ऐसी बातें शोभा नहीं देती।‘

‘शोभा तो बदनाम माधव को देती होंगी।‘

‘मैं समझी नहीं ?‘

‘मेरी यह बात क्यों समझोगी,रानी ? तुम मेरा अपमान कर रही हो।‘

‘मैंने आपका क्या अपमान किया है ?‘

‘तुम्हारी मेहरबानी हम पर न होकर ं ं ं।‘

‘मैं अपनी जान दे सकती हूँ पर-।‘

‘फिर ये अमानत किसकी है ?‘

‘अभी तो किसी की नहीं।‘

‘मैं समझता था माधव की होगी।‘

‘आप जानते हैं बचपन में माता-पिता ने उसके पिता से वादा कर दिया था।‘ पर आप जैसे महानुभाव ं ं ं।

‘अरे इसमें तुम्हारा क्या बिगड़ जाएगा।‘

‘मेरा क्या बिगड़ जाएगा ?‘

‘आपकी मां, बहिन, बेटी से कोई ऐसी बात करे तो उनका क्या बिगड़ जाएगा ?‘

बात पर राव वीरेन्द्र सिंह गुस्से में आ गया। बोला- ‘तुम अपने को भूल रही हो।‘

‘जब मौत निश्चित है तब क्यों न भूलूंगी ?‘

‘ये अन्तिम फैसला है तुम्हारा ?‘

‘हां ़ ़ ़।‘

‘रानी ़ ़ ़SSS हम तुम्हें ़ ़ ़ मरने भी नहीं देंगे और जीने भी नहीं देंगे।‘ हां अगर तुम्हें माधव के जीवन से प्यार है तो कल ़ ़ ़ । अन्यथा माधव की खैरियत न समझी जाये। यह मेरा भी अन्तिम फैसला है। जिसे परमात्मा भी नहीं बदल सकता। इतना कह कर वह बनावटी मुस्कराहट छोड़ता हुआ आगे बढ़ गया।

कुछ देर तक तो वह वहीं खड़ी रही, फिर शिवलिंग के निकट पहुंची। जल चढ़ाते हुए कहने लगी- ‘तुम्हारे दरबार में किसी के इज्जत का सौदा हो रहा है और तुम चुपचाप बैठे देखते रहो। इसी कारण लोग पत्थर की मूर्तियों में विश्वास नहीं करते हैं। क्या सच-मुच तुम पत्थर की प्रतिमा हो ? नहीं-नहीं तुम मैं भी प्राण हैं कोई शक्ति है तभी तो सदा संसार तुम्हें पूज रहा है।‘ यह कहकर उसने उनके ऊपर चल चढ़ा दिया।

जब वह घर पहुंची। उसने अपनी माता जी को यह बताना उचित नहीं समझा। जब मां ने उसका चेहरा देखा तो पूछने लगी- ‘बेटी क्या बात है ? आज चेहरा उदास हुआ दिख रहा है। आशा ने फीकी मुस्कान तोड़ते हुए कहा- कुछ भी तो नहीं ़ ़ ़। मां चुप रह गई सोचने लगी। आज व्रत है शायद इसलिए उदास हो। सयानी हो गई है कहीं कुछ सोचने लगी हो। माधव ने तो कुछ नहीं कह दिया। सोचते-सोचते काम में लग गई।

प्रतिदिन शाम को माधव घूमने के लिए निकलता था। आशा पानी लेने निकली दोनों की मुलाकात हो जाया करती थी।

सच पूछिए तो माधव कभी का बागी बन गया होता या आत्म-हत्या करके मर गया होता। आशा की आशाएं उसे किनारे लगाये हुए थीं। आज भी वह घूमने निकला। इधर-उधर टहलता रहा। निगाहें आशा को खोजती रहीं। चिन्ता लगी, जरूर कोई बात है। आशा के घर की ओर कदम चलने लगे। मानो किसी गली में कोयल कुहुक कर बुला रही हो।

जब वह घर पहुंचा। आशा उसे दरवाजे पर ही मिल गई। माधव उसे देखकर बोला- ‘आज तुम पानी भरने नहीं गई ?‘ आज मेरा व्रत था न इसलिए माता जी गई हैं।

‘पिता जी कहां हैं ?‘

‘वे ग्वालियर चले गये हैं।‘ आशा उसे सामने खड़े देखकर, बोली- ‘आइये न ़ ़ ़SS।‘ माधव उसके पीछे हो गया। दोनों बैठक में पहुंच गये। कमरे में एक चारपाई थी। माधव उसी पर बैठ गया। आशा भी एक स्टूल खींच कर बैठ गई। माधव ने उसके चेहरे को गौर से देखा। कुछ भांपते हुए पूंछ बैठा-

‘आज खिले हुए गुलशन में मायूसी कैसी है ?‘

‘इस जालिम दुनिया के कारण।‘

‘क्या मुझसे कोई गुस्ताखी हुई है ?‘

‘मैंने ऐसा कब कहा है ? पर आपका नाम बीच में अवश्य आया है।‘

‘क्या मतलब ?‘

‘जब मैं मन्दिर पर जल चढ़ाने गई थी तब ़ ़ ़।‘

‘तब क्या ?‘

‘तब राव वीरेन्द्र सिंह ने छेड़-छाड़ कर दी और मुझे अपने यहां बुलाया है। आप अच्छे आ गये। मैं आपसे कहना चाहती थी, माधव अपनी अमानत को सम्हालो अन्यथा मुझे दोश न देना।‘

‘राव वीरेन्द्र सिंह की ये हिम्मत ़ ़ ़।‘

‘मैं डरती हूँ माधव, वह कह रहा था कि मैं तुम्हारे माधव को ठिकाने लगा दूंगा।‘

‘मैं तो उसके द्वारा बहुत पहले ही ठिकाने लग चुका हूँ। अब तो मेरी बाजी है।‘ कहते हुए वह खड़ा हो गया तो आशा ने रोका, ‘जरा बैठ तो लो। कहां चल दिये ?‘

‘आज मैं उसे ठिकाने लगाकर ही रहूँगा। उसने तुमसे ़ ़ ़ ।‘

‘मेरे कारण आप यह नहीं करेंगे।‘

‘ मेरे लिये हिसाब चुकता करने का इससे बड़ा और क्या करण हो सकता है ?‘

‘मेरे कारण ऐसा नहीं करेंगे, फिर मैं तुम्हारी अभी कौन हूँ बोलो ?‘ कहते हुए रो पड़ी।

'मेरे रहते तुम्हारा ?' आशा उसका क्रोध बढ़ाना नहीं चाहती थी वह समझ रही थी, इनका क्रोध अब रूप् बदलकर बैर बन गया है। घटना ने उ बैर को परि-वर्तित कर क्रोध के रूप में पुन बदल दिया है इसलिए माधव इतना उत्तेजित हो उठा है। यही सोचकर आशा को कहना पड़ा-

'काश ! उसे किसी का भी डर होता तो ं ं ं।'

'तो मुझे जाने दो न।'

'यदि जाने दूंगी तो क्या करेंगे ?'

'उसे मार दूंगा।'

'फिर'

'जंगल की हवा ं ं ं।'

'यानी आप बागी बनेंगे।'

'हां ं ं ं।'

'और गरीबों को सतायेंगे।'

'नहीं।'

'तब तो तुम समाजवादी बागी बनोगे। गरीबों की मदद करोगे, उन्हें शोशण से मुक्त कराओगे।'

'हां ।'

'और क्या करोगे ?'

'इस कस्बे में एक अस्पताल खोलूंगा। क्योंकि मेरे पिता जी इलाज के अभाव में मरे हैं।'

'तब तो तुम्हार ेबहुत ऊंचे विचार हैं पर मैं बागी से व्याह नहीं करूंगी।'

'क्यों ?'

'उनके जीवन का क्या भरोसा ? बागी से याह करके जीवन बर्बाद नहीं करना चाहती। किसी दिन गोली के शिकार बन गये तो ं ं ं?'

'अभी से अशुभ बात सोचने लगी।'यह बात सुनकर वह उठ खड़ा हुआ।

आशा झट से बोली- अरे ! अरे ! थोड़ा और बैठ जाइये आप तो सचमुच ही कहीं चल दिये।

वह बोला-'मैं सोच चुका हूँ।'

'माधव तुम्हें मेरी कसम है। इस बार उसे क्षमा कर दो अबकी बार यदि वह कुछ करता है तो मैं तुम्हें मना नहीं करूंगी।'

'किस बात की मना नहीं करेगी बेटी ?' कहते हुए आशा की मां शान्ति ने कमरे में प्रवेश किया। उसे आया देख माधव हड़बड़ा गया। माधव को देखकर बोली - 'अरे बेटा तुम ं ं ं।'

'हां मांजी।'

' देखा बेटा, आज राव वीरेन्द्र सिंह मन्दिर के सामने इसे रोक कर खड़ा हो गया और ये है कि उसी का पक्ष ले रही है।'

'मां मैं पक्ष कहां ले रही हूँ मैं तो कह रही हूँ यदि वीरेन्द्र सिंह अब कोई गड़बड़ करता है तो मैं मना न करूंगी।'

'बेटा,'0 आशा ठीक कहती है। हम भी सब जानते हैं कितने अत्याचार किये हैं उसने तुम पर और तुम्हारे कारण आज मेरी बेटी पर भी ं ं ं।'

मां की बात पर माधव बोला- 'मां जी जब तक मैं जिंदा हूँ उसकी क्या मजाल कि....।'

'बेटा शान्त रहने में ही फायदा है आशा के हाथ पीले हो जाते।'

'इसकी मांजी आप चिन्ता न करें। '

'बेटा, हमें तो तुम्हारी ही चिन्ता रहती है। तुम इतना शर्माते हो कि यहां आते भी नहीं हो। अरे जब संकट का समय आ गया है तो संकोच की जरूरत नहीं है। दुनिया जानती है आशा माधव की है।'

'इसकी रक्षा करना भी तो मेरा फर्ज है। ये ससुरा वीरेन्द्र इसे मुझ से छीनना चाहता है।'

बातों के क्रम में आशा कमरे से निकल गई। शान्ति ने बात को समझाते हुए कहा- 'बेटा जब ये मन्दिर से लौटी तो इसका चेहरा उतरा हुआ तो इसने मुझसे भी कुछ नहीं कहा।'

'मांजी, सोचती होगी मां को क्यों दुःखी करूं।' इतनी देर में हाथ में फलहार की प्लेट लिए आशा ने प्रवेश किया। मां ने प्लेट हाथ से ले ली और बोली- 'ये लो बेटा प्रसाद है कहते हुए माधव के हाथ में थमा दी। अब माधव धीरे-धीरे प्रसाद खाने लगा। शान्ति कहने लगी- बेटा शान्त रहने में ही फायदा है।'

'और माजी जब शान्ति से काम न चले तो।'

'बेटा सोचती हूँ ,कुछ करोगे तो तुम दोनों की जिंदगी बर्बाद हो जायेगी।'

'वैसे भी तो जंदगी बर्बाद ही है फिर भी आशा के कहने से उसे एक बार और क्षमा कर रहा हूँ। अब की बार उसने कोई हरकत की तो ं ं ं।'

'हां बेटा जो भाग्य में होगा उसे कौन टालने वाला है।' बातों में प्लेट का प्रसाद निपट चुका था तो वह उठ खड़ा हुआ। और कुछ सोचते हुए घर चला आया। घर आकर खटिया पर आ गिरा। सोचता रहा, सोचते-सोचते मन में कहा आज वीरेन्द्र सिंह की ओर चलना चाहिये शान्ति से बात करने में क्या नुकसान है। यही सोचकर वह घर से निकला।

राव वीरेन्द्र सिंह के दरवाजे पर हर शाम को बैठक जमा करती थी। चापलूसों की भीड़ लगी रहती थी। प्रतिदिन की तरह राव वीरेन्द्र सिंह कुर्सी डाल कर बैठ चुके थे। घूमते हुए माधव दरवाजे से निकला माधव को देखकर वीरेन्द्र सिंह बोला- 'अरे आओ माधव'।

माधव आगे बढ़कर जमीन पर बैठने का उपक्रम करने लगा। वीरेन्द्र सिंह बोला -'अरे वहां नहीं, इस कुर्सी पर बैठो।' कहते हुए उसने पास पड़ी कुर्सी की ओर इशारा किया। माधव उस कुर्सी पर तनकर बैठ गया।

माधव ने अच्छा अवसर जाना तो बोला- 'आप मेरे पिता की उम्र के हैं, मेरे चाचा लगते हैं। पर यह तो बतलाओ कि मैंने आपका क्या बिगाड़ा है ?'

राव वीरेन्द्र सिंह उसकी बात को समझ गया- मैं उससे से सीधे सीधे उलझना नहीं चाहता। न हो तो इस समय इसे समझा बुझा कर संतुश्ट कर दूं। यही सोचकर बोला- 'और मैंने तुम्हारा ?'

'यह आपका हृदय जानता है।'

'तुम चाहते क्या हो ?'

'आप सब बातें जानते हैं कि मैं क्या चाहता हूँ ?'

'तब कितने में सौदा हो जायेगा ?'

'क्या मतलब ं ं ं ? मैं समझा नहीं साफ-साफ कहे।'

'मतलब तो साफ है बेटा आशा के बदले कितने रूपये चाहिये तुम्हें ?'

'लेकिन मेरा उस पर क्या ं ं ं ?'

'ये बातें तो मैं सब जानता हूँ।' तुम चाहो तो ं ं ं।'

'यह आपका भ्रम है।'

'भ्रम है !' तुम्हारे कारण तो वह मेरा अपमान कर चुकी है।

'अच्छी बेवकूफ लड़की है इतना भी नहीं जानती कि आप यहां के जमींदार हैं।'

'अरे जमींदारी चली गई नही ंतो ं ं ं ।'

'आप अपनी उम्र का भी ख्याल कीजिए। वह आपकी बेटी के समान है।'

'तुम चुप रहो।' ऐसी बातें करने में शर्म नहीं आती। संसार की सभी लड़कियां मेरी बेटी नहीं हो सकतीं।'

'हां आप ठीक कहते है, वे संसार की सभी लड़कियां आपकी बेटी नहीं बन सकतीं। बीबीयां तो बन सकती हैं।'

'तुम्हें शायद याद हो एक बार ऐसी ही बातें तुम्हारे पिता ने कही थीं। जिसका फल तुम्हारे पिता श्री भुगत चुके हैं।'

'मैं सब जान गया हूँ। पर अब ध्यान रखना। आप धूल में लात मारेंगे तो वह सिर पर चढ़ेगी कि नहीं।'यह कहकर माधव उठा और तेज कदमों को रखते हुए वहां से चला आया। '

छः

राव वीरेन्द्र सिंह द्वारा एक सेठ की लड़की सरला के साथ, बलात्कार करने वाली बात, गांव भर में चर्चा का विशय बन चुकी थी। । सभी इस समस्या पर गम्भीर रूप से विचार कर रहे थे।

जब यह बात माधव ने सुनी तो लगा यह सब उसकी आशा के साथ घटित हुआ है। नहीं-नहीं, वह आशा के साथ ऐसा नहीं कर सकता है। क्यों नहीं कर सकता है ? उसकी दाढ़ लपकी हुई है। इस सब के बाद सारा गांव चुप है। सभी कायर हैं किसी में भी साहस नहीं है। सभी जान रहे होंगे आज दूसरे के साथ हुआ है कल वह उनके साथ भी हो सकता है, पर सभी चुप हैं ं ं ं।

इसी क्रम में तीन चार दिन निकल गये। माधव उधेड़-बुन में लगा रहा। सारी रात्री सोचते-सोचते निकल जाती। सुबह देर से उठ पाता। दिन खूब चढ़ आता तब घर से निकलता। माधव दिन चढ़े घर से निकला तो सुखनन्दन चाचा ने उसे बुलाया। बोले-

'माधव अपने से तो ये सब तुम्हारी हरकतें सुनी नहीं जातीं।'

'कैसी हरकतें ?' मैं समझा नहीं चाचा !

बेटा, सच सच बतला कि क्या तूने नुन्हारी गांव में डाका नहीं डलवाया है। नुन्हारी गांव का नाम सुनते ही माधव के सामने सारा का सारा राज समझ में आ गया। यह हमारे गांव से दो किलोमीटर की दूरी का गांव है। चाचा की बात का उत्तर देते हुए माधव बोला-

'मैं समझा नहीं चाचा ं ं ं।'

'देख माधव, गांव के सभी लोग कह रहे है कि उस डकैती में तुम थे। इसी बजह से सुबह ही मुझे राव साहब ने बुलाया था। वे कह रहे थे- 'एक डाकू पकड़ा गया है उसने माधव का नाम ले दिया है। अब पुलिस आयेगी फिर जेल ़ ़ ़।'

'चाचा वे और क्या कह रहे थे ?'

सुखनन्दन ने कहा 'वे कह रहे थे कि तुम उनसे लडने के लिये उनके घर गये थे, अन्यथा वे तुम्हें बचा लेते पर।'

'आपने क्या कहा चाचा ?'

'मैं क्या कहता ? मैंने कह दिया उसने जो किया है वही भोगेगा।'

'तब तो अब फिर जाल रचा जा चुका है।'

'जाल ?'

'हां ।'

'तो क्या बेटा इसमें तुम्हारा हाथ नहीं है ?'

'चाचा जी यदि मैं कहूँ कि इसमें मेरा हाथ नहीं है तो आप कभी विश्वास नहीं करेंगे। इसलिए अब तो उन्होंने जो कुछ कहा है वह सब सच ही है।'

'अच्छा बेटा मैं तो अपनी नौकरी पर जा रहा हूँ तुम्हें जो दिखे सो करना ं ं ं। मुझे बतला, मैं क्या करूं ?' कहते हुए उनका गला भर आया बिन कुछ बोले अपनी नौकरी पर चले गये।

माधव सारी परिस्थिति समझ चुका था। अब उसे क्या करना चाहिए ? अब वह अपनी चाची के पास गया और उसके चरण छूकर बोला-'चाची मुझे आज्ञा दो मैं आज से एक काम करने जा रहा हूँ।'

चाची बोली -'क्या काम करने जा रहे हो बेटा ?'

'यह मत पूछो पर आज्ञा दे दो।'

'अच्छा बेटा आज्ञा है पर काम तो बता ं ं ं?'

'कल तुम्हें खुद ही पता चल जायेगा। कहते हैं चाची शुभ कार्य को कहने से ं ं ं?'

जब वह आशा के घर पहुंचा, आशा के पिताजी गंगाराम जी घर पर ही थे। आशा की माता जी शांन्ति ने माधव का मुस्कराकर स्वागत किया। बोली- 'आज इधर कैसे चले आये बेटा।'

'आप लोगों से बातें करने।'

'क्या बातें बेटा ?' माधव को आया देख आशा भी बैठक के अन्दर के दरवाजे के कोनें से आ खड़ी हुई। माधव ने मां की बात का उत्तर दिया- 'मुझे लगता है दुबारा जेल की हवा किस्मत में लिखी है।' आशा की आवज अन्दर से गूंजी- 'बुरे कर्मों की सजा तो मिलेगी ही।'

'मंा तुम्हें ये विश्वास है कि मैं कोई ऐसा काम कर सकता हूँ और आप लोगों से उसे छिपाकर रख सकता हूँ।'

शान्ति बोली - 'हां यह तो है। अरे हमारे भी कौन हैं जो ?'

'मां जी मुझे दुवारा राव वीरेन्द्र सिंह द्वारा झूठा फंसाया जा रहा है।'

'ऐसे कैसे ?'

'मन्दिर की तरह।'

मन्दिर वाली बात सुनते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसके सामने राव वीरेन्द्र सिंह का चेहरा आ गया। दोनों चुप रह गईं।

यह देख माधव बोला- 'चुप क्यों रह गईं ?'

'सोच रही हूँ इसका इलाज क्या है ?' आशा कह गई।

'इलाज तो है।' माधव ने उत्तर दिया।

'क्या इलाज है ?'शान्ति ने पूछा।

अब जेल के डर से मैं भागना नहीं चाहता।'

'कैसे बचा जा सकता है ?'

माता जी बच तो सकता हूँ।

शान्ति ने पूछा - 'कैसे ?'

'यह बाद में बताऊंगा।'

शान्ति पुनः बोली- 'बेटा मुझे तो लगता है अबकी बार तो हमारी बजह से तुम्हें फंसाया जा रहा है। सो हम भी बेटा तुम्हें धोखा नहीं देंगे।

'बस मां मुझे यही आशीर्वाद की जरूरत थी।' कहते हुए माधव चला गया।

मां और बेटी उसे जाते हुए देखती रहीं।

माधव यहां से अपने घर पहुंचा। बिस्तर पर लेट गया। उसे लगने लगा आज के बाद यह बिस्तर उसे फिर कभी नसीब न होगा। इसी उधेड़-बुन में शाम 5 बज गये। पशुओं के लौटने का समय हो गया। इसी समय गांव के चौकीदार रनधीरा ने दरवाजे पर दस्तक दी।

'ओ माधव ।' माधव दरवाजे पर आ गया। बोला-

'कहो, क्या हुक्म लाये हो ?'

'कल सुबह सात बजे, तुम्हें दरोगा जी ने थाने बुलाया है।' माधव सब बातें समझ गया। बोला- 'ठीक है हुक्म की तामील तो करनी ही पड़ेगी।' यह सुनकर रनधीरा चौकीदार तो चला गया।

माधव दरवाजे पर खड़े-खड़े सोचने में लग गया। अच्छा हुआ चौकीदार के हाथ बुलवाया है। दरोगा जी आते तो साथ लेकर ही जाते। यह सोचकर वह अन्दर गया और दैनिक जीवन के उपयोग के सामान की एक गठरी बना डाली। अब वह अन्धेरा होने की प्रतीक्षा करने लगा।

जैसे ही आकाश में अन्धेरा छाया, माधव घर से निकल गया। एक झाड़ी में अपनी गठरी छिपाई। अब वह पुनः कस्बे की ओर लौट पड़ा। सोचते-सोचते वह स्थान आ गया था जहां डांकुओं ने उसे पैसे दिये थे। वह हड़बड़ाया- 'यही वह जगह है जहां पहली बार बागियों से मुलाकात हुई थी।' कुछ क्षण के लिए वहां खड़ा हुआ, फिर वह सीधा चल दिया।

अब वह राव वीरेन्द्र सिंह के घर पर पहुंच चुका था। दरवाजे पर बैठक जमीं थी। उसने अन्धेरे का लाभ उठाया और वीरेन्द्र सिंह के मकान के पिछवाड़े पहुंच गया। वहां स्थिति का अध्ययन करने लगा। गन्दे पानी का पाइप दूसरी मन्जिल से नीचे तक जाता था। उसे पकड़कर ऊपर चढ़ने लगा। थोड़े से परिश्रम के बाद वह छत के ऊपर पहंुच गया। अब वह जाने किस सोच में डूब गया। उसे

लगा वह ऐसा क्यों करना चाहता है। अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर। क्या मेरे हृदय कितना निश्ठुर हो गया है। इतनी सोचने के बाद तक वह नीचे मन्जिल पर आने के लिए सीढ़ियों से उतरने लगा।

इस दो मन्जिल वाले मकान मंे वह ऊपर वाली मन्जिल पर ही रह गया। उसने एक खिड़की के कमरे के अन्दर झांका। कमरा खाली था उसमें राव वीरेन्द्र सिंह की ऑटोमेटिक बन्दूक खुटी से लटकी हुई थी। वह कमरे में दाखिल हो गया। माऊजर बन्दूक उठाली। राउंडों वाला पट्टा उठाकर कमर में बांध लिया और बन्दूक को चैक करने लगा तभी राव वीरेन्द्र सिंह की छोटी बच्ची चिल्लाने लगी। चोर ं ं ं चोर ं ं ं चोर ।

कुछ लोगों की पदचापें उस ओर आती सुनाई देने लगीं। वह बालिका दरवाजे में खड़ी-खड़ी चिल्ला रही थी। दरवाजे पर राव वीरेन्द्र सिंह आ गया। माधव के हाथ में बन्दूक थी। उसी वक्त माधव की उंगली ने हरकत की। बन्दूक ने गोली उंगली। धड़ाम-सा शब्द हुआ। राव वीरेन्द्र सिंह के सीने में गोली लगी। वह वहीं गिर पड़ा। बालिका जोर से चिल्लाई। आने वालों में भग-दौड़ मच गई। माधव रूका नहीं।

वीरेन्द्र सिंह के मृतक शरीर के पास से निकलकर सीढ़ियों के सहारे उतर गया। चौक सूना था। कोई सामने पड़ने वाला न था। अब वह मुख्य दरबाजे से बाहर निकलकर सड़क पर आ गया। गांव से बाहर निकलने के लिए जल्दी जल्दी चलने लगा। कस्बे के बाहर जाकर उसने अपना सामान झाड़ियों में से उठाया और रात फिर अन्धेरे में खोने के लिये अज्ञात पथ पर चल दिया। कस्बे में अभी भी चीखने चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। इन सब बातों की परवाह किये बगैर आगे बढ़ने लगा।

वह सोचता भी जा रहा था-यह सब क्या हो गया ? मैं तो उसकी केवल बन्दूक ही उठाना चाहता था पर ं ं ं भाग्य ने यह क्या कर दिया ? अन्दर की दया कहां चली गई। हृदय में निश्ठुरता कहां से समां गई। नहीं नहीं यह ठीक नहीं हुआ। यह सोचते हुए भी इसके कदम जंगल की ओर बढ़ते ही चले जा रहे थे।

सात

माधव चार-पांच दिन तक तो योंही इधर-उधर भटकता रहा, खाना जैसा मिला, जिससे मिला छीना और खाया। जीवन का यह पहला अवसर था। जब एक महिला को अपने पति के लिए भोजन ले जा रही थी। उससे छीनकर खाना खाना पड़ा,और करता भी क्या ? अब तो जीवन जीने के लिए यही विकल्प रह गया था। उसे इन दिनों लगने लगा, कि उसे पुलिस के सामने जाकर स्वयं हाजिर होना ही पड़ेगा, क्योंकि इस प्रकार भूख और प्यास के कारण तो वह वैसे ही दम तोड़ देगा।

इससे तो उस जेल में ही चैन से भोजल मिल जाता था। अब उसे ध्यान आया। इस बार तो फांसी के फन्दे से बचा ही नहीं सकता है। तब उसकी आशा का क्या होगा ?

पुलिस से बचकर रहना। दिन में कहीं भी पड़े रहना। रात में सफर करना। धीरे-धीरे बीहड़ों में पैर रखा। रात्रि हो गई। लोगों की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। टार्चों की रोशनी चमकने लगी। वह एक झाड़ी की ओट में छिप गया। कुछ आवाजंे पास आती चलीं गईं। उसका अन्दाज सही निकला। कुछ बन्दूकधारी वहां से गुजरे।

माधव बोला- 'कौन ?'

उधर से आवाज आई 'तेरे बाप।'

'मेरा बाप तो कब का मर गया।

उनमें से एक बोला-'अबे, वो नकली होगा।'

'अच्छा तो तुम असली हो।'

उधर से फिर आवाज आई-'हां ।'

माधव को क्रोध आ गया, बोला- 'तो हो जाये फिर, कौन किसका बाप है!'

एनमें से कोई बोला, 'पंख लग गये क्या? मरने यहां तक चला आया।'

'पंख तो शायद तुम लोगों के लगे होंगे।'

'तू है कौन ं ं ं रे ?'

'और तुम लोग ?'

'बागी।'

'और तू।'

'नया बागी।'

'अबे सारे तब तो तूने पहले काहे नहीं बताई?' अब काहे छिपो है निकरिया।'

उनकी यह बात सुनकर वह चौंकन्ना होकर उस झाड़ी में से निकला। वे सभी समझ गये। उनमें से एक बोला- 'क्या नाम है तेरा ?'

'माधव'

यह सुनकर उसने अपने साथी को डांटते हुए कहा-' नया रगरूट है। तू अभी इतना भी नहीं जान पाया। पहले उसे खाना तो खिला। बेचारा जाने कितने दिनों का भूखा होगा।'

यह सुनकर तीसरे ने उसकी ओर रोटियां बढ़ा दी और बोला- 'भई पहले प्रेम से कुछ खालो। पानी पी लो फिर बातें करेंगे।'

जिस प्रकार नया बच्चा पैदा होता है। खुशियां मनाई जाती हैं। जश्न मनाया जाता है, फिरउसे अपने दल में मिलाने से पहले, उसकी परीक्षा ली जाती है। परीक्षा में खरा उतरने पर ही उसे दल में सम्मिलित होने की आज्ञा दे दी जाती है। कातिल पर सभी बागी पूरी तरह विश्वास कर लेते हैं। उसे ही पक्का बागी माना जाता है।

माधव इन बातें को पहले से जनता था। बोला-'पंचमहल क्षेत्र के राव वीरेन्द्र सिंह का नाम सुना है।'

उनमें से एक ने उत्तर दिया-' जिसका इन दिनों किसी माधव नाम के व्यक्ति ने मर्डर किया है।'

माधव बोला-‘ मैं वही हूँ।’

इस परिचय के वाद ही माधव को उन लोगों की इतनी आत्मीयता मिलने लगी, जितनी उसे कभी किसी से न मिली होगी। अन्य सभी बागी अनपढ़ थे। माधव पढ़ा लिखा था। एक बहुत बड़े आदमी को मार आया था। इससे उसे अधिक इज्जत मिलने लगी। माधव के पास अच्छी बन्दूक थी। इतनी अच्छी बन्दूक दल के किसी भी बागी के पास न थी।

कुछ ही दिनों में लोग उसे अपने दल का सरदार मानने लगे, बागियों में पदों का निर्णय बन्दूक के अनुसार होता है। जिस पर जितनी अच्छी बन्दूक होगी, वही ऊंचे पद पर होगा। माधव को भी सबसे बड़ा पुलिसिया रेंक मिल गया था। पुलिस में होता तो सरी जिन्दगी तपस्या करने के बाद भी यह रेंक नसीब न हो पाता।

पुलिस की तरह बागियों में भी रेंक प्रथा प्रचलित है। इससे एक दूसरे के प्रति अनुशासित बने रहते हैं। अक्सर रेंक बन्दूक देखकर प्रदान कर दिये जाते हैं। नये बागी को भी विश्वास अर्जित होने पर जिसके पास अच्छी बन्दूक हैं बन्दूक के अनुसार रेंक प्रदान कर दिया जाता है।

सरदार बनने के बाद माधव ने सारे जंगल का निरीक्षण करना चाहा। इन घने जंगलों में रात्री में चलने की आवश्यकता न थी। एक बीहड़ में घुसे सारे दिन उसी में चलते रहे। दोपहरी में इस जंगलों में अन्धेरा सा छाया रहता है। सैंकड़ों फीट जमीन की सतह से गहरी खाइयां, जिनमें हजारों आदमी एक साथ वर्शों रह सकते हैं। सरकार जिन्हें खोज भी नहीं सकती। प्रकृति ने इन खाइयों को शायद इन्हीं लोगों के लिए बनाया होगा। मोर्चा बन्दी की सुविधा इनमें हर घड़ी अपने आप बनी रहती है।

आठ

प्रिय आशा-

मैं यह नहीं जानता था कि चिर-मिलन के स्वप्नों में जुदाई की घड़ियां भी होती हैं। आप लोग हर बात में मुझे ही दोशी मानेंगे। पर सच मानो आशामैंने उसकी हत्या जान बूझकर नहीं की। उसकी बन्दूक उठा लेने का मेरा मात्र इरादा था। देवीयोग से ठीक वक्त पर वह दरवाजे पर आ गया। मैं अपने ऊपर होने वाले हमले को टालना चाहता था। बन्दूक का ट्रिगर दब गया। खून की प्यासी गोली ने अपनी प्यास बुझाली ं ं ं फिर तो मुझे वहां से भागने की पड़ी।

सोच रही होगी कि मैं किन परिस्थितियों मं पल रहा हूँ। यह सब जानने को तुम बेचैन होगी। थोड़े दिनों में ही मैं एक छोटे से दल का बागी सरदार बन गया हूँ। पहले चार-पांच दिन तक भूखों मरा। अब यहां कैसे रहना होता है ? यह अच्छी तरह जान गया हूँ। ऐसा अहसास हो रहा है कि इन बीहड़ों में सारा जीवन निकाला जा सकता है।

मैं सोच रहा हूँ ,अब तुम इन बीहड़ों में रहने क्यों तैयार होगीं। तुम्हें अब और कहीं अपनी व्याह कर लेना चाहिये। मेरी क्या ? मेरी तो किस्मत में ही भटकना लिखा है।

मेरा बागी बनने का उद्देश्य एक राव वीरेन्द्र सिंह की हत्या करने से पूरा नहीं हो जाता। मैं अब ऐसे सुरक्षित स्थान पर हूँ, जहां सरकार भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अब तो एक बागी को पथ दिखाने वाला चाहिये, जिससे मैं समाज को कुछ दे सकूं। लोगों को दिखा सकूं सच्चे बागी कैसे होते हैं।

मैंने जो पत्रवाहक तुम्हारे पास भेजा है, यह मेरा विश्वासपात्र है। इससे गंगा क्रिया हुई है। हम लोग गंगा क्रिया में अधिक विश्वास करते हैं। माताजी, एवं पिताजी एवं तुम चाहो तो इन जंगलों में घूमने फिरने चली आओ। मेरे चाचाजी और चाचीजी को समझा आना। वे अपना ध्यान रखें अब मेरी चिन्ता करने की जरूरत नहीं हैं।

मेरा साथी तुम्हारे सामने पहुंचेगा। पहले-पहल तुम उसे देखकर डर जाओगी, बाद में शायदउसी के साथ यहां आओ। इसी आशामें ं ं ं । माता-पिता जी को चरण छूना। पत्र पढ़ने के बाद फाड़ने के जला देना, पास मत रखना।

तुम्हारा अपना

माधव

पत्र पढ़ने के बाद उसे एक नजर फिर उस आदमी पर डाली। वह बन्दूक लिये था। चेहरे पर बड़ी मूछें। भयानक चेहरा। आशाउसे बैठक में ही छोड़ स्वयं माता पिता के पास अन्दर आई। पत्र पढ़कर सुनाया। और बोली -'मेरी तो इच्छा हो रही है मैं वहां न जाऊं।

बात सुनकर गंगाराम बोला- 'नहीं बेटी माधव क्या सोचेगा ? आदमी सुख में चाहे साथ न दे पर दुःख में अवश्य साथ देना चाहिये।'

षान्ति बोली- 'मेरी बेटी जंगलों में कहां फिरेगी ?'

बात सुनकर गंगाराम बोला- 'इस काम के होने से पहले माधव से शादी हो गई होती तो ं ं ं ?'

'किस्मत के लेख को कोई नहीं मेट सकता।'

'तो तुम बाप-बेटी जानो, मुझे क्या है ? वैसे वह उसे क्यों मारता। उसने मन्दिर में उसे छेड़ दिया। आदमी है खून सवार हो गया।

'यही सोचकर तो मैं मना नहीं कर पा रहा हूँ। अब जो हो आशाहै तो माधव की ही।'

षान्ति पुनः बोली-'ठीक है तो भेज दो आशा को ं ं ं ।' इस बात के बाद तो आशा को लगने लगा आशा का यह घर छूट रहा है। उसे शान-शौकत से पति के घर जाना चाहिए था किन्तु वह जा रही है पति के घर, रात के अंधेरे में चोरी-छिपे।

माधव का दल एक योजना बना रहा था। वीरू कह रहा था, इतने बड़े सेठ को लूटना खेल नहीं है सरदार। माधव ने इसका उत्तर बड़े प्यार से दिया -'वीरू जब लूटना ही है तो बड़े सेठों को लूटो, बड़े-बड़े नेताओं को लूटो आई० ए० एस० अफसरों को लूटो।'

बात सुनकर वीरू बोला - 'इससे तो सरकार हमारे पीछे पड़ जायेगी।'

'वीरू हम सरकार से जूझने को तैयार हैं'

'तो फिर ?'

'आज हमला वहीं करो जहां मैं कहता हूँ। मैं भी साथ रहूँगा।'

'सरदार सरदार ज्यादा पीछे पड़ जायेगी, यहां मौज में अपना जीवन काटो, साथी बहादुर ने समझाते हुए कहा।

'यार बहादुर हम बागी हैं। हम मरने के लिए बागी बने हैं। जो न्याय हमें समाज और कानून से नहीं मिल सका। उसे हम सब ने उस न्याय को अपनी बन्दूक से लिया है।'

'वीरू बोला - 'समाज की व्यवस्था ही भ्रश्ट है चोर को साहूकार कहती है और साहूकार को चोर।'

'यही तो हमारा विद्रोह है। गरीब और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। पूंजीपति पूंजी तिजोरियों में बन्द करते जा रहे हैं। जीने की वस्तुओं पर पूंजीपतियों का अधिकार है। न्याय खरीदा जाता है।'

बात सुनकर बहादुर बोला-'अरे न्याय होता कहां है अदालतें बिकी हुई हैं। कानून को तोड़मोड़ कर लोगों ने उसे अपने अनुकूल बना लिया है।' हम बागी हैं वीरू ! व्यवस्था से विद्रोह हमारा काम है। इसलिए अधिक सोचो मत,े जाकर तैयार हो।'

ब्हादुर ने प्रश्न किया सरदार हम सब चल रहे हैं लूटने पर कुछ हाथ न लगा तो।'

'तो बहादुर उस सेठ के बच्चे को पकड़ कर लाना है।'

बीच में एक साथी बोल पड़ा-'जा धन्धों तो बड़े तगड़ो है। जामें अपनी सुरक्षा भी है।'

इसी समय एक खद्दरधारी व्यक्ति का उनके परिसर में प्रवेश-

उसे देखकर माधव बोला- 'तो तुम कर रहे हो मुखबरी।'

'हां सरदार।'

'ध्यान रखना कहीं धोखा तो ं ं ं।

'अरे नहीं सरदार, मुझे उससे बदला लेना है। उसने मुझे सरपंची के चुनाव में हरवाया था।'

'धोखा हुआ तो हमारी सजा जानते हो।'

'हां हां क्यों नहीं जानता ? भड़ाम मौत ं ं ं ।'

'मौत से नहीं डरते ?'

'मौत से डर तो भगवान को भी लगता होगा।'

'उसकी बात सुनकर माधव थोड़ा-सा मुस्कराया और बोला- 'बहादुर ं ं ं। समय हो गया चलो।' कहते हुए माधव उठ खड़ा हुआ।'

वीरू बोला -'सरदार सुना है आज वो आ रहीं हैं और आप ं ं ं।

'यार, तब तक तो वापिस लौट आयेंगे। शायद वे कल तक आयें कहते हुए आगे बढ़ गया।

डकैती डालकर सभी सकुशल लौट आये थे। सभी बागी मस्त होकर जोर-जोर से बातें कर रहे थे। माधव और बहादुर में बातें चल रहीं थीं। माधव बहादुर से कह रहा था - कहो बहादुर आज मैं तुम्हारे साथ न होता तो ं ं ं तो ं ं ं सरदार सब-के-सब मारे गये होते।

'रे! फिर मेरी शादीका जश्न कौन मनाता।'

'आपने जाकर पहले उस सेठ की बन्दूक को जा दबोचा, नही ंतो ससुरा कुछ करामात जरूर दिखाता। और हां, शादी वाली बात कुछ समझ में नहीं आई।

'बहादुर आज वे आ रही हैं, हम अभी अविवाहित हैं।'

'तब तो खूब मजा मौज छानने को मिलेंगे।'

'बहादुर ये कैसा जीवन है ?'

'जीवन क्या ? रोज रोज मौत से जूझना।'

'बहादुर हम मौत से नहीं डरते। हमारा जीवन ही मौत से जूझ कर चलता है, फिर भी उस झूठे सामाजिक जीवन से अच्छा है, जिसमें आदमी न्याय के नाम पर अन्याय करता है। झूठ को सच और सच को झूठ साबित करना मामूली बात है। जो दिखो हैं वह गलत दिखता है जो सुना जाता है। वह भी गलत ही होता है।

'सरदार आज आप कहना क्या चाहते हैं ?'

यही कि इन पूंजीपतियों को मारने से मुझे कोई कश्ट नहीं होता। हां, यदि कोई गरीब न मारा जाये।उनकी रक्षा करना हमारा फर्ज है। इस गरीब वर्ग को आज तक सभी ने चूसा है।

'हां बहादुर दीन दुखियों को सताना ठीक नहीं है फिर हमें भगवान भी कभी नहीं माफ करेगा।'

'लेकिन सरदार ये जो आप दया दिखा रहे है, हम बागियों के लिए वह मौत की निशानी है।'

'यार बहादुर मौत ं ं ं मौत ं ं ं मौत जबकि आज तो तुम्हें मेरे व्याह की व्यवस्था करना है। मौत की बातें ऐसे शुभ समय पर बन्द कर दी जाये।

कुछ रूककर।

'आज वो यहां आ जायेगी। व्याह की तैयारी करना शुरू कर दो।

'वो न आई तो।'

'यह नहीं हो सकता बहादुर वे जरूर जायेगीं। जरूर जायेंगी।

'यह सुनते हुये बहादुर वहां से चला गया।'

नौ

जंगलों के ये लोग दिन में आराम करते हैं और रात सैर-सपाटे, लूट-खसोट में गुजारते हैं। इनकी रात अमानवीय कृत्य करने के लिए, जश्न मनाने के लिए देवी-देवताओं की पूजा करने के लिए रहती है। जंगल की शरण पाने वाल,े इन्हीं सब बातों में अपना गौरव अनुभव करते हैं।

यहां के वातावरण में सूनापन होता है। इसमें भी लोग मौज करते हैं। किसी के बच्चे किसी की पत्नी, संयोगवश मिलने आ जाती हैं। तो उनके ठहरने के लिए जंगलों से घिरे गावों की शरण लेना पड़ती है। कभी-कभी ठहरने की व्यवस्था तम्बू लगाकर भी कर ली जाती है। उनमें उनके बच्चे, पत्नी स्वयं मौज करते देखे जा सकते हैं।

आशा को पता चल गया था कि किस खोह में इनका पड़ाव है। इनके पड़ाव तो बदलते रहते हैं। प्रतिदन या मौका समझा गया तो दिन में दो-दो बार तक बदलना पड़ जाते हैं। सुरक्षित स्थान हुआ तो 8-10 दिन तक एक ही जगह पड़े रहते हैं। दिन अस्त होने से पहले यदि वहंा पहुंच पाये तो रात्री में उस क्षेत्र की कल्पना नहीं की जा सकती। वह यही सब सोचते हुए चलती जा रही थी-

मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यहां आना पड़ेगा। मैं यहां आने को मना क्यों नहीं कर सकी। मुझे क्या हो गया था ? जो यहां आने का विरोध भी न कर सकी। मेरे माताजी पिता जी मेरी खुशी देखते हैं। जैसा कहती हूँ करने को तैयार हो जाते हैं। मैं भी कैसी हूँ जो अपराधी से प्यार। लेकिन प्यार करने के समय तो माधव अपराधी नहीं था। शादी हो जाती, उसके वाद माधव अपराधी बन जाता तो ं ं ं मैं उसे छोड़ देती।' इतना ही सोच पाई थी कि सामने माधव दीख पड़ा। खाकी ड्रेस। कन्धे पर बन्दूक टंगी थी। छोटी-छोटी मूछें, रोब देने वाली थी। आशाको देखकर वह तेजी से आशा की ओर बढ़ा। पास आ गया। चेहरे पर की खुशी साफ-साफ दिख रही थी। माधव की आवाज उसके कानों में सुन पड़ी?'

' जंगलों में चलते चलते थक गई होगी।'

' आप से मिलने की आकांक्षा में थकान कहां?'

किसन जो आशाको साथ लेकर आया था पीछे चला आ रहा था उसने ये बातें अच्छी तरह सुनली तो बोला -'बिटिया,यहां आने में जो थका, वह गया काम से। क्या पता अभी हाल ही यहां से भागना पड़ जाये। हम ऐसी जगह पर आ खड़े हुए हैं जहां आदर्श की बात करना मौत है, जेल है, फांसी है।' माधव को आधार मिल गया बोला- देखो आशाहमारे किसन काका भी कितने गहरे अनुभव की बात बताते हैं ? अब तक बातें करते-करते पड़ाव पर पहुंच चुके थे। एक पत्थर की पटिया पर बिस्तर पड़ा था। आशाको उस पर बिठा दिया गया। वहीं आस पास सभी लोग खड़े हुए थे। आशाके वहां पहुंचते ही थोड़ी सी हलचल हुई और सभी वहां से हट गये। माधव भी वहीं आ बैठा। एक आदमी जो सिपाही की ड्रेस में था, खाना ले आया दोनों खाना खाने बैठ गये। खाना देख कर आशा बोली -

'सोच रही हूँ ये मिठाइयां, ये बिस्कुट यहां कहां से ं ं ं?'

मिलने को तो आशायहां सभी चीजें सुगमता से उपलब्ध हो जाती हैं पर कभी भूखा रहकर जीना पड़ता है। यहां सबसे बड़ा प्रश्न है मौत से कैसे बचे रहें ?' और मौत है कि हर क्षण सिर पर सवार रहती है। बात सुनकर आशा बोली-

'मौत तो सभी जगह सभी के सिर पर सवार रहती है कबीर दास जी ने एक दोहा कहा है-

साईं गरव न कीजिए काल गहे कर केस।

न जाने कहां मरिहैं कै घर कै परदेश।।

अरे वाह भई, क्या ऊंची बात कही है ? तुम्हारी बात तो मुझे मौत की ओर से निश्चिन्त बना रही है। मौत है यहां भी आ सकती है कहीं भी आ सकती है।

'आशा अब पता नहीं क्यों मौत का डर नहीं लगता।'

ऐसी बातों में दोनों खाना खा चुके। रात्री में जमीन पर ही सोने की व्यवस्था थी। दोनों के बिस्तरे पास-पास ही थे। आशा यह देखकर बोली-

'बिस्तरे इतने पास-पास हैं कि संयम का बांध फूट सकता है, और एक विश्वास जिसके सहारे मैं आपसे मिलने चली आई टूट सकता है।'

'मैं भी यही सोचता हूँ आशा कि विश्वास आधार क बिना रिश्ता नहीं है' एक बात कहना चाहता हूँ ं ं ं।

'कहो ?'

'अब रहा नहीं जाता।' आखिर कब तक इस बांध को रोके रहेंगे।

'जब तक हमारी शादीनहीं हो जाती।'

'शादी की व्यवस्था कर ली गई है।'

'मेरे बिना पूछे।'

'इसमें पूछने की क्या बात है ? वह तो होनी ही थी।

'लेकिन ं ं ं ?'

'लेकिन मैं सब बागियों में इसकी घोशणा कर चुका हूँ।'

'इसका मतलब है आप अपना निश्चय नहीं बदल सकते।'

'आशानिश्चय बदलना पड़ सकता है लेकिन बागी जो कुछ कह देते हैं उसके लिए जान की बाजी तक लगा देते हैं।'

यह कहकर माधव चुप रह गया कुछ सोचने लगा। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद आशाबोली -

'चुप क्यों रह गये क्या सोचने लगे ?'

'कुछ नहीं यों ही सोच रहा था। बिना तुमसे पूछे घोशणा करके मैंने ठीक नही किया।'

'मुझे तो कोई बात नहीं है लेकिन माताजी पिताजी को तो यहां होना चाहिए।'

उनके लिये अलग से आदमी भेजा है। शायद कल तक वे भी आ जायेंगे।

'सच ?' यहाँ

'हां आशा।'

तभी बन्दूक चलने की आवाज सुन पड़ी। सब अपने अपने हथियार लेकर इस ओर दौड़ पड़े। माधव ने अन्धेरे में चमकती रेडिय से युक्त घड़ी पर नजर डाली। रात्री के 11 बजे थे। माधव भी इतनी देर में अपना हथियार संभाल चुका था। आशासे यह कहते हुए उस ओर लपका। सोरी, आशा शायदसमय नजदीक आ गया है स्थान बदलना पड़े। आशादेखती रही। सोचती रही ये क्या जीवन है ? जिसमंे हर समय जीने के लिए लड़ना पड़ता है।

लेकिन जीने के लिए कहां नहीं लड़ना पड़ता। कहीं अधिक कहीं कम। यहां जीने के लिए लड़ाई आमने-सामने की तो है। वहां तो पीठ पीछे लोगों के छूरा भोंका जाता है। मिलावट की जाती है। दवाओं में मिलावट होती है। सभी जगह लड़ाई लड़नी पड़ती है। एक-एक पैसे पर खून हो जाता है।

डर ं ं ं ? डर कैसा ? कहां नहीं है सभी जगह है। मैं यहां अकेली रह गई फिर भी डर नहीं लग रहा है।' अब वह सोचना बन्द करके आवाजे सुनने का प्रयत्न करने लगी। टिटहरी के बोलने की आवाज आभास दे रही थी। सब यहीं आस-पास मोर्चा पर हैं। वह बड़बड़ाई 'आदमी के होने का आभास होने पर ही टिटहरी बोलती है। इतना ही कह पाई कि माधव वापस लौट आया था। आशापूछ बैठी।

'क्या बात हो गई ?'

'बात क्या थी आशा? कोई मजनू आया है कहता है, उसकी प्रेमिका की शादीजबरदस्ती पैसे का लालच देकर एक बूढ़े के साथ की जा रही है। सरकार तो इस बात की शिकायत कहां सुनती है। इसलिये वह यहां चला आया।

'क्या कह दिया आपने ं ं ं?'

'मैंने कह दिया उसकी शादीउससे नहीं तुम्हारे साथ होगी व षर्त लड़की तुम्हारे साथ शादीकरने तैयार हो।

'शादी कैसे कराओगे ?'

'वैदिक रीति से।'

'पुलिस पीछा करेगी।'

'शादी कहां होगी पुलिस को पता ही नहीं चल सकता। फिर किराये के टट्टू मरने, सामने नहीं आ सकते।

'तब तो वे देश के बहुत बड़े गद्दार होते हैं।'

'आशापैसे का लालच अच्छे-अच्छों को ठिकाने ले आता है।'

'इतना अगाध विश्वास है आपको लक्ष्मी पर।'

'आशालक्ष्मी से वयवस्था ही नहीं न्याय को भी खरीद लिया जाता है। अच्छे अच्छे न्यायाधीश बिकते नजर आते हैं। मेरे मामले में और क्या हुआ ?'

'क्या हुआ ?'

' अरे न्यायाधीश के पास पैसे पहंुच गये थे। मुझे ठिकाने लगाने के लिए।'

'तुम्हें कैसे मालूम चला ?'

'जब मैं सजा भुगतकर घर लौट आया, किसी बहाने उन गवाहों से मिला। गवाहों ने कहा कि हमने तो पैसा लेकर गवाही दी है।'

आशा, इन दिनों , बडे बडे नेताओं की खबरें आ रही हैं कि आप हाजिर हो जाइये। लूट का धन कुछ हमें दीजिये, आप न्यायालय से बरी हो जायेंगे। अब 'बरी किसके लिए होना है।'

'किसके लिए नहीं होना। यह बात न होती तो मैं यहां तक न आती। जो बचपन से बंधन बंध गये हैं उन्हें तोड़ पाना ं ं ं।'

' तुम चाहो तो तोड़े जा सकते हैं।'

' कहीं मैं बन्धन तोड़कर चली गई। मैंने जाकर किसी दूसरे से विवाह कर लिया। आप मुझे छोड़ देंगे ?'

'छोड़ना तो नहीं चाहूँगा पर मैं जीकर भी क्या करूंगा ?' जिस जीवन में कोई अपना न हो। मैं तो चाहता हूँ आप लौट जायें किसी दूसरे से व्याह कर ले। सुख से रहें। मेरे लिये जो सेवा हो ं ं ं।'

'हा..... हा..... हा.... कितने कोमल हृदय के हैं आप। यह सब देख सकेंगे। मुझे विधवा नहीं बना डालेंगे।'

'अरे हट पगली, मैं इतना कायर नहीं हूँ। मैं जानता हूँ किसी बागी के साथ विवाह करने वाली युवती अपने को विधवा समझकर शादीकरे।'

बागी का भी जीवन होता है। जितने समय वह जीता है वेदनायें, मृत्यु की आशंका उसको हर क्षण घेरे रहती है। इन छोटी-छोटी दो भुजाओं की ताकत, षासन से कभी भी अधिक षक्तिशाली नहीं हो सकती।

यह मत कहिए। हर बार विद्रोहियों ने ही सत्ता परिवर्तन करने की कोशिश की है। इतिहास साक्षी है वे कई बार सफल भी हुए हैं। यह कहकर मैं आपको और अधिक साहसी नहीं बना देना चाहती, पर जीने के नये रास्ते अवश्य खोजना चाहती हूँ।'

'मैं यह जान गया हूँ आशा, तुम्हारे बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं है।'

'संसार के लोग समझेंगे मैंने धन के लालच मंे आकर माधव से शादीकर ली है।'

'ऐसी बातें करके तुम तो अभी से बोर करने लगी हो।'

'अभी क्या है ? अभी बोर करने की शुरूआत है। तुम्हें तो बोर किया करूंगी कि मजा आ जाया करेगा।'

'अच्छा-अच्छा तुम्हें जो ठीक लगे करना अभी थोड़ा आराम कर लो। थक गई होगी।' यह सुनकर वह लेट गई। माधव खिसक कर और पास आ गया। आशाउसकी हरकत समझ गई बोली -

'माधव तुम ठहरे बागी तुम्हारा क्या विश्वास ? कहीं इस सब होने के बाद तुमने शादीनहीं की तो मैं कहीं की न रहूँगी। मैं चाहती हूँ शादीसे पहले संयम का बांध न टूटे।'

'आशा आदर्शवादता नारी की संगिनी रही है। पर मुझे तुम्हारी इन बातों से कोई लगाव नहीं है।'

'तो किन बातों से लगाव है?'

'मौजमस्ती बागियों के जीवन का एक अंग होता है। इसके अलावा उनके पास रह भी क्या जाता है।'

'ठीक है माधव अब तुम आराम कर लो। कहते हुए वह उठ कर बैठ गई। तो माधव अपने बिसतरे पर पहुंच गया।

बागी आत्मा 10

दस

माधव की गैंग की संख्या दस हो गई थी। दो आदमियों को तो उसने ठिये पर छोड़ दिया था बाकी आठ आदमियों को अपने साथ ले जा रहा था। आज घोड़ों की व्यवस्था हो गई थी। आशा ने जब घोड़े देखे तो दंग रह गई। सभी अलग अलग घोड़ों पर सवार थे।

आशा सोचने लगी- आज ये जाने कितनों का सुहाग सूना करेंगे। यह बात वह माधव से कहना चाहती थी पर उसकी यह बात दिल की दिल में रह गयी। सभी लोग चले गये। एक घोड़ा ठिये पर रह गया। बस वहां रखा समान, ढोया जाने लगा। आशा ने वहां ठहरे एक बागी से पूछ लिया -'क्या नाम है तुम्हारा ?'

'तीतुरिया'

'तीतुरिया जी यह घोड़ा -

' भाभी जी, हम लेगों का स्थान बदला जा रहा है।'

'क्यों ?'

'आपकी षादी, की व्रूव्स्था दूसरी जगह की गई है।'

'कहां ?'

हम लोग उस स्थान को किसी को नहीं बतलाते हैं। पर आज आपको बतलाये देता हूँ। आगे ऐसा प्रश्न किसी से न करना ?'

'क्यों ?'

'इससे हम लोगों का विधान भंग होता है।'

'अब समझी।' वह इतना ही कह पाई थी कि घुड़सवार पुनः उस स्थान पर आ गया। आकर बोला- 'चलो भाभीजी, आप भी घोड़े पर बैठो।'

'

यह बात सुनकर वह उस बदले हुए स्थान पर पहुंचने के लिये घोड़े पर बैठ गई। वह घुड़सवार घोड़े की बाग लिये आगे-आगे चलने लगा।'

'आधा घन्टा चलने के बाद उस स्थान पर पहुंच गये। वहां सभी लोगों को मौजूद पाया। घोड़े से उतरने के लिये एक ने आशा को सहारा दिया। आशा नीचे उतर पड़ी । घोड़े से उतरते ही बोली - 'क्यों माधव आज एक सुहाग के बदले कितने सुहाग सूनेकर डाले ?'

'सुहाग सूने हो गये होते ,पर आज मैं आपने हाथों को खून से रंगना नहीं चाहता था । इन हाथों पर तो आज मेंहदी रची जायेगी और उस जबरदस्ती के दूल्हे राजा को भी पकड़ लाया हूँ।'

'उसे क्यों ?'

'अरे कन्यादान कौन करेगा ?'

'माधव तुम यह क्या कर रहे हो ? जो पति बनना चाहता था। उसे जबरदस्ती पिता बनाया जा रहा है।

'आशा तुम देखोगी तो कहोगी यह तो पिता ही बनने लायक है।'

'तब तो आपने यह अच्छा किया। जिससे ऐसा करने वालों को सबक मिल सकेगा। उनकी शादी के बाद यह खबर जब अखबारों में छपेगी। सारा संसार पढ़ेगा। लोग तुम्हारे इस काम की प्रशंसा किये बिना न रहेंगे।'

'अरे अरे इतनी बड़ाई मत करो वरना ं ं ं। उसकी इस चापलूसी बात सुनकर वह शरमा गई। अब दोनों आगे बढ़ गये उस स्थान पर पहुंच गये जहां शादी की व्यवस्था की गई थी। वहां के लिये दो ओर से रास्ता है। माधव ने अपने जवानों को दोनों ओर

पहरे पर लगा दिया था। पास में निर्मल जल का झरना बह रहा था। पास में मन्दिर था। वहां एक साधू जी रहते थे। वे साधू जी महाराज भगवान के नहीं बल्कि बागियों के भक्त थे।

माधव और आशा पहिले मन्दिर में भगवान के दर्शन करने गये। शिवलिंग के सामने अपनी अपनी मनोकामनाओं को लेकर हाथ जोड़े प्रार्थना करते रहे।

अब माधव बोला- 'चलो आशा तुम्हें साधू जी के दर्शन करा दूं।

वे इस बियाबान जंगल में अकेले पड़े रहते थे। भक्तगणों का आना जाना लगा रहता है।' बातचीत करते हुए दोनो साधू जी के पास पहुंच गये। माधव के साथ आशा को देखकर समझ गये कौन हो सकती है ? बोले -'आओ बेटी तुम्हें यहां किसी प्रकार का कश्ट न होगा।' आशा ने कुछ नहीं कहा। माधव की तरह उनके चरण आशा ने भी छू लिये। साधूजी ने उसे अखण्ड सौभाग्यवती रहने का आशीर्वाद दे डाला।

आशा ने सोचा -'यहां तो सौभाग्य की एडवांस बुकिंग होने लगी।' अब तक साधू जी साथ चलने के लिए खड़े हो चुके थे।

20-25 मिनट चलने के बाद बातें करते हुए सभी विवाह स्थल पर पहुंच गये। आशा के माता-पिता वहां मौजूद थे। उन्हें देखकर आशा मां से लिपटकर फूट-फूटकर रो पड़ी। मां उससे कुछ कहे बिना सिर पर हाथ फेर फेरकर सांत्वना देने में लगी थी। पिताजी कहने लगे बेटी चिन्ता न कर कोई ऐसा रास्ता निकालेंगे जिससे ○ ○ ○। माताजी पिताजी के आने से उसका मन कुछ हल्का हो गया था।

आशाबोली -'मां कुछ खाया-पिया या नहीं।'

'अरे बेटी इन जंगलों में खाने-पीने की क्या कमी है ? अभी-अभी खाना खा-पीकर निवटी हूँ। तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रही थी।

'कितनी देर हो गई यहां आये ?'

लगभग एक घण्टा हुआ होगा। अब माधव उनके सामने था। माधव माताजी पिताजी के पैर छूने को हुआ तो उन्होंने उसे गले लगा लिया। मानों वर्शों से बिछुड़ा कोई मिल रहा हो। इसी समय माधव के मिलने जुलने वाले आने लगे। माधव वहां से अलग चला गया। मां आशा से हाल चाल पूछने लग गई। तभी जंगलों में सहनाई की मधुर ध्वनि गूंजने लगी।

दो जगह मण्डप बनाये गये थे।

एक जगह मण्डप उन दोनों प्रेमीजोड़े के विवाह के लिए था। दूसरी जगह माधव और आशा के विवाह के लिए। माधव के तथा अन्य बागी साथियों के मिलने-जुलने वाले आ गये।

जंगलों क बीहड़ में वह सूनसान घाटी गूंज उठी। आठ-दस गड़रियों का यह छोटा सा गांव था। इस तरह का कार्यक्रम यहां पहली बार हो रहा था। गांव के सभी लोग आमन्त्रित किये गये थे। सभी लोग भोजन खा पी रहे थे। पंगत का कार्यक्रम दिन से ही शुरू हो गया था।

गोधूली का समय हो गया शाम के छः बज गये। पण्डित जी आ गये। उन्होंने बेदी का काम संभाल लिया। विधिवत मन्त्रों उच्चारणों के साथ शादी का कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया।

दहेज में उस प्रेमी जोड़े को माधव की ओर धन बरतन, इत्यादि दिये गये। और उन्हें उनके घर के लिये विदा कर दिया गया। उनका कन्यादान उन्हीं दूल्हेराजा जो पैसें के बल पर अपनी शादी उससे रचाना चाहते थे, से कराया गया। उन्हें भी विदा कर दिया गया। और कह दिया उस लड़की को वह जिन्दगी भर लड़की तरह मनेगा।

ठीक नौ बजे तक सारे कार्यक्रम निपटा दिये गये। यह स्थान भी बदल दिया गया। इस स्थान से दो मील दूर एक जगह ठहरने की व्यवस्था पहले से कर ली गई थी। यह सात मन्जिल का मकान बना हुआ है। पास में ही पानी का कुन्ड भरा हुआ था। यहां भी एक महात्मा जी रहते थे।

अब माधव नीचे से ऊपर की मन्जिलों में आशा को लेकर जाने लगा। आशा के माता-पिता नीचे महात्मा जी के पास ही छोड़ दिये गये। और सभी बागी ऊपर की दूसरी मन्जिल में ठहर गये। माधव और आशा टार्च के प्रकाश के सहारे ऊपर बढ़ते चले गये। छठवीं मन्जिल पर एक खटिया पड़ी थी। कमरा साफ-सुथरा था। यहां ही उसे ठहरना था।

रात्री के 11 बज गये। सब अपने बिस्तरो पर पहुंच गये। माधव भी अपने कमरे में आ गया। आशा बोली और ऊपर क्या है ? यह सुनकर माधव बोला - 'चलो चलें ऊपर घूम-फिर आते हैं। दोनों ऊपर पहुंच गये।'

आशा वहां की व्यवस्था देखकर दंग रह गई। विल्डिंग के ऊपर से पहाड़ी पर लांघा जा सकता है। यदि इधर से दबस पड़ जाये तो नीचे से भागा जा सकता है। आशा सोचने लगी- साधू-सन्तों ने यह बिल्डिंग बागियों की सुविधा देखकर बनवाई होगी।

बड़ी देर तक दोनों छत पर टहलते रहे। बातें करते रहे। फिर दोनों अपने कमरे में लौट आये। जैसे ही वे फूलों से सजी सेज पर बैठे संयम का बांध टूट गया। आशा की दबी आवाज में करते बातें, नीचे बागियों के कानों में पड़ी तो सभी का दिल धड़कने लगा। सभी सारी रात्री सो न सके। माधव और आशा सारी रात्री प्रणय की कहानी लिखते रहे।

सुबह के पांच बज गये थे। अभी तक सभी अलसाये पड़े थे। माधव और आशा की अपेक्षा किसी में फुर्ती नहीं दिखती थी। कल के काम-धाम से सभी थके हुए थे। नीचे वाले कमरे से ऊपर अपने की आवाजें अने लगी। दोनों सम्हल गये। आशा बिस्तर से उठकर खड़ी हो गयी। पर बहादुर व्यंग किये बिना न रहा-

'सरदार अब तो उठो काहे को इतनी लाद रखी है।' हाथ में चाय की केतली लिये हुए बहादुर ने कमरे में प्रवेश किया। आशा ने बहादुर के हाथ से चाय ले ली तो वह लौटने लगा। माधव बोला-

'अरे क्यों भागे जा रहे हो।'

'अभी आया' कहते हुए चला गया आशा ने चाय दो जगह डाली। और दोनों पीने लगे। थोड़ी देर बाद बहादुर फिर लौट आया और बोला-

सरदार नीचे माताजी पिताजी जाने को तैयार खड़े हैं। आपको बुला रहे हैं। चाय पीकर माधव और आशा दोनों नीचे पहुंच गये। माताजी पिताजी जाने को तैयार खड़े थे। आशा और मां जी गले मिलीं, तो दोनों आंसू भर कर रोने लगीं। माधव बोला- मांजी मुझपर विश्वास रखो। आशा को जीवन भर किसी प्रकार का कश्ट नहीं होगा।'

वीरू बोला- 'सरदार इन्हें जल्दी भेजिये। देर हो जायेगी। दोनों को अलग घोड़ों पर बिठा दिया गया। कुछ ही देर में दोनों आंखों से ओझिल हो गये।

माधव और आशा अपने कमरे में लौट गये थे। दोनों उदास थे। थोड़ी देर बाद बहादुर आशा के लिये लाये हुये उपहार लेकर कमरे में आया। आशा उपहार देखकर खड़ी हो गई। बड़ी उत्सुकता से उन्हें बहादुर से लेने के लिये आगे बढ़ी। उसने बहादुर से उपहार ले लिये। एक एक करके उन्हें गौर से देखने लगी।

हर उपहार देखने के बाद उसकी दृश्टि बदल जाती। चेहरे के विभिन्न उतार-चढ़ाव देखकर बहादुर तो चला गया। माधव उसके चहरे पर के उतार चढ़ाव देखने में व्यस्त हो गया। कुछ क्षणों के सन्नाटे के बाद आशा बोली-

'माधव ये मेरे लिये उपहार हैं।'

'जी।'

'आप क्या लाये हैं ? मेरे लिये।'

सुनकर माधव ने अपने गले से एक सोने की जंजीर उतारी और बोला- 'यह मेरी ओर से।'

' इसका मैं क्या करूंगी।'

'क्यों उपहार का क्या किया जाता है ?'

'पर उपहार, उपहार सा होना चाहिए।'

'इसमें क्या कमी है ?'

'यह उपहार किसी की गरदन काट कर लाया गया होगा।

माधव झुंझलाते हुए बोला -'देख नहीं रही हो, तुम्हारे लिये ये नया खरीद कर लाया गया है।

जब मैं नीति की बात पूछने लगी तो आप झुंझला उठे। अरे यह उस धन के बदले में है जो जाने कितनों के गले काट कर लाया गया होगा।' बात सुनकर माधव को याद हो आया वह दृश्य, जब उसने सेठजी की हत्या कर दी थी किशन और मजबूत सिंह बागी ने उसके गले की जंजीर खींच ली थी। बटवारे में मेरे हिस्से मंे पड़ गयी। यह वही जंजीर है।

' आपने जवाब नहीं दिया।'

'यह सच भी हो तो यह जिनका गला काट कर लायी गयी है वे रोज किसी न किसी का ऐसा गला काटते हैं कि उसकी तीन तीन पीढियांे तड़-फड़ाती रहतीं हैं।

'वे किसका गला काटते हैं, आदमी अपनी स्वेच्छा से उनके पास जाता है। जैसे मैं तुम्हारे पास आई हूँ।'

'तुम्हारा कौन गला काट रहा है ?'

' मैंने तो एक बागी से स्वेच्छा से व्याह किया है। मैं तो स्वयम् ही समर्पित हो गई हूँ।'

'चाहो तो वापिस जा सकती हो।'

'माधव मैं वापिस जाने के लिये नहीं, तुम्हें समाज में वापिस लाने के लिए आई हूँ। माधव इस धन पर न मेरा अधिकार है न तुम्हारा। यह तो गरीबों का है। इस धन को उन्हीं के पास पहुंचा देना चाहिए।'

'पर अपने लिए।'

'मुझे अपने लिए कितना चाहिए ?' रोटी, कपड़ा और मकान ! उसकी कौन कमी है। गरीबों को यह भी नसीब नहीं होता।'

'तो तुम ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं।'

'हां माधव तुम पर जितना धन हो वह सब मेरे साथ भिजवाने का कश्ट करेंगे। शादी के उपलक्ष में।'

'तो गरीबों की सेविका बनोगी।'

'नहीं।'

'उनकी तो वस्तु उन्हीं में बांटने का प्रयास करूंगी।'

'वाह आशा ! मैं धन्य हो गया। जिसे इतने ऊंचे विचारों वाली पत्नी मिले उसका कभी अमंगल नहीं हो सकता।'

'अब छोड़ो मुझे घर कब भेजोगे।'

'घर में क्या है ? अभी माताजी पिताजी गये हैं।' तुम अभी ही जाने की बातें करने लगी। क्या मुझसे उक्ता गई ?जब तक मन नहीं भरता, जाने न दूंगा।

'आपसे उक्ताहट तो जिन्दगी भर नहीं हो सकती। लेकिन पुलिस तो परेशान करेगी ही।'

'क्यों करेगी ? कह देना माधव पकड़ कर ले गया था जंगल मंे। उसने विवाह कर लिया तो मैं क्या करूं ? वे कुछ न कहेंगे। फिर भी उनसे बातें करने का साहस तो जुटाना ही पड़ेगा।

बात सुनकर वह चुप रही। कुछ न बोली। सोचने लगी- अब तो जिन्दगी इसी तरह गुजरेगी। मेरा घर तो जंगल के पेड़-पौधे ही हैं। पति का सुख इन्हीं की छत्रछाया में ही मिल सकेगा। आशा को चुप देखकर माधव पूछ बैठा-

'चुप क्यों रह गईं साहस ही हमारा जीवन है। और डरना ही मृत्यु है।'

'मैं मृत्यु से नहीं डरती।'

'आखिर बागी की पत्नी होकर मृत्यु से क्यों डरोगी।'

'तभी नीचे बागियों में जोर-जोर से हंसने की आवाज सुनाई पड़ी।'

ं

ं

आज 10 दिन बाद आशा घर जा रही थी सभी आवश्यक बातें माधव उसे पहिले ही समझा चुका था। जाते वक्त सभी बागी वहां आ गये। आशा उससे बोली- आप एक काम कर सकेंगे ?'

सभी के मुंह से निकला - कहें , कहं भाभी जी हमारे लिये क्या आज्ञा है?'

'मैं यह जानती हूँ ,आप लोग अपना धन्धा बन्द नहीं करेंगे। यदि धन्धा बन्द कर देंगे तो उसी वक्त मारे भी जायेंगे। यहां जीवन ही पैसा है, यहां का भगवान पैसा है। बिना पैसे के पैर भी नहीं रखा जा सकता है। आप सब लोगों से अपने व्याह के उपलक्ष में बस एक ही उपहार मांगती हूँ।'

'क्या उपहार ?' वीरू के मुंह से निकल गया।

उसने उत्तर दिया -'आपके धन्धे में कहीं कोई निर्दोश व्यक्ति न मारा जाये।'

'बात सुनकर माधव बोला- 'पर आत्म-रक्षा के लिये।'

'मजबूरी की बात ही अलग है।'

'आशाजी, हमारा दल आपकी इस आज्ञा का पालन जरूर करेगा।'

यह बात माधव की सुनकर वह आगे बढ़ी। सभी बागी वहीं रुक गये। माधव उसका साथ देने आगे बढ़ा। किशन उसे भेजने साथ जा रहा था। थोड़ी दूर चलने के बाद माधव ने मौन तोड़ा-'अच्छा आशा, यहां से आगे मेरा चलना ठीक नहीं है दिन निकलने वाला है। मुझे लौट जाना चाहिए।'

आशा बोली- 'घर कब आओगे ?'

जब समय पहुंचाये। वैसे जल्दी कोशिश करूंगा। तुम्हारे बिना यहां मन भी तो नहीं लगेगा।'

'अच्छा किशन आप ले जायें इन्हें, देर न करें।' बात सुनकर किशन घोड़े की लगाम पकड़े आगे बढ़ गया।

माधव खड़ा-खड़ा उन्हें जाते हुए, तब तक देखता रहा जब तक वे दूर निकल गये।

जिस दिन से माधव बागी बना था। उस दिन से उसकी आत्मा बहुत निश्ठुर सी बन गई थी। माधव अपने आप में बदला-बदला सा लग रहा था। आज उसका अर्न्तद्वन्द चल रहा था। सभी खुश दिखाई दे रहे थे, पर माधव के चेहरे से पीड़ा साफ-साफ झलक रही थी।

वह विचारों के गहरे सागर में तैर रहा था, उन्हीं विचारों के सहारे वह उस बेगवती नदी को तैर कर पार करना चाहता था। अब वह ऐसे दलदल में आकर फंस गया था, जिसमें से निकलने के लिये हाथ पैर चलाये तो और अधिक फंस जायेगा। इससे निकल पाना असम्भव सा लगने लगा।

उसके मुंह से शब्द निकले-''मैं अब बागी नहीं रह सकता।' यह बात उसके सभी साथियों ने सुनी तो वे उसे घेर कर समझाने बैठ गये।

'मैं जेल चला जाऊंगा।'

डसकी यह बात सुनकर बागी मजबूत सिंह बोला -'फांसी के फन्दे से न बचोगे।'

अब वीरू बोला- 'फांसी पर चढ़ना ही था तो आशा भाभी से व्याह क्यों किया ?'

'मजबूत सिंह फिर बोले बिना न रहा -'अब तो सरदार इसी में सार है, जिन्दगी के जितने दिन गुजरे, इन्हीं जंगलों में गुजारें।'

माधव चेतन अवस्था में लौट आया इन सभी बातों को सुनकर बोला, 'ठीक है आप लोगों के साथ ही जीवन गुजारना है फिर जीवन के लिये कोई दूसरा विकल्प भी तो नहीं है।

उसकी यह बात सुनकर वीरू फिर बोला -'आज सरदार आप कैसी बहकी-बहकी बातें करके हमें डरा रहे हैं। आप ही इस तरह सोचने लगे तो कल हम सबका क्या होगा ?'

माधव बोला- 'अभी मेरे रहते हुए तुम्हें किसी तरह की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। अब इन बातों को छोड़ो, उठो चलो, अब यह स्थान बदलना जरूरी हो गया है।' आदेश सुनकर सभी उठ खड़े हुए।

आशा और किशन कस्बे के निकट पहुंचे। शाम हो चुकी थी। किशन ईश्वर को बार-बार धन्यवाद दे रहा था कि रास्ते में उन्हें किसी ने नहीं टोका। किशन यदि अपनी बन्दूक डाले होता तो यहां तक आना और भी मुश्किल हो जाता। उसने यह अच्छा किया बीहड़ से निकलकर अपनी बन्दूक को घोड़े के काठी में छिपा ली थी। जब कस्बे के निकट पहुंच गये तो आशा बोली -

'दादा, अब यहीं रूक जावें। घर रात में चलेंगे।'

किशन भी यही चाहता था ,इस लिए एक नाले की तरफ बढ़ गये। खन्दक में जाकर दोनों ठहर गये। रात्री होने का तीव्रता से इन्तजार करने लगे।

जैसे अन्धेरा छाया आकाश में एक दो तारे दिखे। यह सोचकर खन्दक से निकले कि कस्बे में पहुंचते-पहुंचते गहरा अन्धेरा हो जायेगा। घोड़ा वहीं छोड़ दिया गया। किशन ने आशा का सामान अपने साथ ले लिया।

आशा उसके पीछे-पीछे चलने लगी। मानो कोई वधु अपनी ससुराल से लौटकर आ रही हो। पहली-पहली बार ससुराल से लौटने पर जैसे शर्मांती है वैसे ही आशा शर्माते हुए चली जा रही थी। बार-बार साड़ी को सम्हालती, पर अन्धेरे मे किसे दिख रही थी साड़ी। रात में कौन आया ? कौन गया ? किसी को मतलब न था।

जब वह घर पहुंची। मां आंगन में मौजूद थी। रात्री के भोजन की तैयारी कर रही थी। बेटी मां को देखकर उससे लिपट गई। बड़ी देर तक मां बेटी रोती रही। आशा के पिताजी अपलक दृश्टि से बड़ी देर तक देखते रहे। उनकी आंखों में भी आंसू आ गये। उन्हें पोछने लगे।

आशा ने देख लिया तो बोली - 'पिताजी इतने दिन मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। ये लोग जंगलों में भी मौज करते हैं।'

'वह तो ठीक है बेटी, पर जंगज जंगल ही है।' बात पर दोनों कुछ न बोले। मौन हो गये। दोनों को ही जंगल का अस्तित्व स्वीकार था।

अब आशा के मां-बाप किशन के पास आ गये। आशा किशन के लिये खाना ले आई और बोली -'दादा, बातें फिर करना, पहले आप खाना खा लें। किशन खाना खाने बैठ गया। सभी बातें करने के मूड में थे तो खाना खाने में बातें होने लगीं।

किशन बोला-'अभी गांव में शादी वादी की बात नहीं करना है। कोई पूछे तो कह देना आशा मामा के यहां गई थी।' आशा की मां बोली -'अरे जो होना है हो गया। सरकार जो करे कर ले। बात छिपाने में भी फायदा नहीं है।' किशन आशा की मां की दूरदृष्टि भांप गया। बोला -'आप चिन्ता न करें मांजी। समय आने पर सब बातें कह दी जायेंगी। लेकिन अभी गर्म आग है। ठीक नहीं है।'

तभी आशा के पिताजी बोले -'भईया, एक रोटी और ले लो।'

'अरे दादा, घर आकर भूखा रहूँगा? हम लोग जंगलों में भूखे नहीं रहते। और हां.... उस दिन आप लोग सकुशल तो लौट आये थे ना।'

आशा की मां बोली -' हां भईया, हमारे बारे में किसी को कुछ भी शक नहीं है। अब चाहे जो शक करें।'

'फिर तो ठीक है कोई कुछ न जान पायेगा। मां जी हम लोगों के जीवन की यही समस्या है। हम करते तो ऐसे-ऐसे काम हैं जो कोई नहीं कर पाता, पर हम लोग अपने मुंह से कह नहीं पाते।

'हमें भी ये बातें क्यों कहना है?

' बात सुनकर किशन बोला-'आप चिन्ता न करें हम लोग यहां के दरोगा की व्यवस्था कर देंगे। वह कुछ न कहेगा। अरे मां जी पैसों में तो वह ताकत होती है कि ये तो दरोगा है, आज के जमाने में चाहे जिस मिनिस्टर को खरीद लो। न्यायाधीश खरीद लिये जाते हैं।'

किशन की बातें सुनकर सभी अश्चर्य चकित थे। इन बातों ने तो सभी के दिल का डर निकाल दिया था।

खाना खा-पीकर समझा-बुझाकर किशन चला गया। किशन के जाते ही सभी को खूब जोर की रूलाई आई पर सभी शांत रह गये। पड़ोसी सुनेंगे तो सब जान जायेंगे।

सुबह जब उठी। उसकी निगाहें मां पर पड़ गईं। मां उपहारों की गठरी को खोलकर देख रही थी। वह तुरन्त उठ बैठी और बोली -मां इन्हें क्या देख रही है ? इनमें मेरा क्या है ?'

'तो ये किसके लिये हैं बेटी ? अरे इतने सारे गहने, इन्हें सम्हाल कर रख दे। इनके बिना भी काम नहीं चलता।'

'लेकिन मां मैंने कहा ना इसमें मेरा क्या है ?'

'क्यों नहीं है इसमें तेरा ? फिर वही बातें, इतने सारे गहने तो इस कस्बे में किसी के पास न होंगे। अरे कोई समझदार औरत हो तो इन्हीं में सारी जिन्दगी कट सकती है।'

'मां यह सब गरीबों का है। उनकी चीज उन तक पहुंच जाये। बस मुझे और क्या ?'

'पागलों जैसी बातें मत कर।'

मं, ऐसी बातें तो मैं उनसे ही सीखकर आई हूँ।

'बेटी बागी के जीवन का कोई विश्वास नहीं होता। उसके जीवन के बाद तूं क्या करेगी ? इसलिए इस धन का दुरूपयोग न कर, उसे भविश्य के लिये रख ले। अन्यथा भूखों मरना पड़ेगा।'

'मां तू ऐसे न कह। ईश्वर न करे मां मुझे वे दिन देखना पड़े। और यदि ऐसा भी हो गया तो मां मैं मेहनत-मजदूरी करके पेट भर लूंगी।'

'फिर भी इसको बर्बाद करना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।'

'मां ये गरीबों की आहें हैं, जो सेठ साहूकारों की तिजोरियों में बन्द थीं। माधव ने इसे निकाल फेंका है। इसका मतलब यह नहीं है मां कि इस धन का दुरूपयोग करूं। मैं चाहती हूँ ं ं ं ।' बात अधूरी छोड़ दी।

मां को समझाना पड़ा-'एक ओर बागी से शादी, दूसरी ओर गरीबों पर दया। मेरे तो यह बात समझ में ही नहीं आती। बेटी तुझे ये क्या हो गया है !' तू जो करना चाहती है कर। मैं और तेरे पिताजी तो बस तेरी स्वेच्छा चाहते हैं। समझदार है जैसा चाहे कर। हां इतना अवश्य चाहते हैं, जीवन में तुझे कोई कश्ट न हो।

'आप चाहती हैं मां मुझे कोई कश्ट न हो, पर मैंने तो कन्टकों की राह पर चलना ही स्वीकार किया है।'

मां बात बदलने के लिये बोली-''यह बता बेटी, माधव कब आयेगा ?'

'मां वो कब आयेंगे कह नहीं सकती ? शायद कभी न आयें।

'अरे हट पगली ऐसी अशुभ बातें नहीं कहते।

‘मां जो दूसरों को अशुभ करते हैं उनसे कितने लोग रोजाना अशुभ नहीं कहते।‘

‘पर बेटी तुझे तो।‘

‘जब इतने लोगों के कहने का असर नहीं होगा तो मेरे कहने, से भी नहीं होगा।‘

‘अच्छा-अच्छा चल उठ। बहुत बातें करने लगी है।‘

‘अभी तक बिस्तर पर पड़ी ह।ै हाथ मुंह धोने भी नहीं गई है।‘ मां की यह बात सुनकर वह हाथ-मुंह धोने के लिये घर से बाहर निकलना चाही। ठिठक कर रह गई। अपने बिस्तरे पर पुनः जा गिरी और सिसक-सिसक कर रोने लगी। एकदम ये क्या हो गया जो ?‘

सिसकियों की आवाज सुनकर मां उसके पास आ गई और पूंछने लगी-एकदम तुझे ये क्या हो गया जो ?

‘कुछ नहीं मां।‘

‘कुछ तो हुआ है, नहीं तो क्यों रोने लगी ?‘

मां मैं घर से बाहर निकलने को थी कि उनकी यह बात याद हो आई कि शादी वाली बात किसी से मत कहना। मां तूं ही बता कोई नारी व्याह की बाते छुपा सकेगी। ये व्याह का सुहाग, उतार कर ही, कुछ दिनों के लिये छुपाया जा सकता है और यह मंगलसूत्र तो उस समय उतारा जाता जब ं ं ं ।

‘वाह रे भाग्य जिसका पति जीवित है, अभी व्याह हुये कुछ ही दिन नहीं गुजरे हैं और ये मंगलसूत्र उतारना पड़ रहा है । ये सुहाग की निशानी मिटानी पड़ रही है। मां तू ही बता मै क्या करूं ?

मां यह सब सुनती रही। जब कोई उत्तर न सूझा तो वह कमरे से बाहर आंसू पोंछते हुए निकल गई। आशा ने रोना बंद कर दिया कुछ सोचने लगी। सोचते-सोचते वह उठी। उठकर पूजा के घर में गई। वहां राधा कृश्ण की छोटी-छोटी मूर्तियां रखी थीं। उसने उनके सामने हाथ जोड़े। आंखें बन्द कर लीं। एक क्षण बाद आंखें खुलीं। अब आंखों में सोच की जगह चमक थी।

उसने अपने गले से मंगलसूत्र उतारा और राधा जी के गले में पहिना दिया। सुहाग की सारी चीजें उतार डालीं। एक-एक करके राधा जी को पहिना दीं। हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी। राधा जी सम्हालना ये सुहाग की मेरी निशानी। इनकी लाज रखना। कहीं ऐसा न हो कि ये मंगलसूत्र आपके गले से उतारना पड़े। यह कहते हुए रोती पड़ी।

मां भी उसे देखने उस कमरे में पहुंच गई थी उसकी ये बातें सुनकर हिचकियां भर भर कर रोने लगी। रोने की आवाजें सुन पिताजी भी उस कमरे में आ गये। मंगलसूत्र राधा जी के गले में पड़ा देख, वे सब समझ गये और वे भी रोने लगे ?‘

ग्यारह

माधव ने जब से आशा को विदा किया था । गरीबों को सताना छोड दिया था। वह सोचनं लगा-‘ बे-मतलब गरीबों को परेशान भी क्यों किया जाये। उन पर रखा क्या है ? जो उन्हें कश्ट दिया जाये। माधव ने अपने दल के सिद्धान्त बदल डाले थे। गनीमत यह कि माधव की बातों से दल के सभी लोग सहमत हो गये थे। बड़े-बड़े सेठ साहूकारों के दरवाजों पर दस्तकें दी जाने लगीं।

गरीबों में यह बात तेजी से फैलती जा रही थी कि माधव गरीबों को नहीं सताता। गरीब और मध्यम वर्ग के लोग चैन का जीवन व्यतीत करने लगे थे। धनिक वर्ग के लोग अधिक चिन्ता में रहने लगे थे। जिस क्षेत्र में माधव पहुंच जाता वहां के धनी मानी लोग स्वयं अपने आदमी को उसके पास भेज देते। माधव का हुक्म टालने की उसमें हिम्मत न थी। बिना परिश्रम के सभी समस्याएं हल होने लगीं थी। इस क्रम में माधव ने काफी धन इकट्ठा कर लिया था। लूट खसोट, मारकाट के मौके तो आये, पर टल गये।

माधव घर जाने की तैयारी करने लगा। बहुत दिनों बाद अपने कस्बे की ओर जा रहा था। उसने अपने दल को भी उस ओर चलने का आदेश दिया। ग्वालियर से आगे निकलकर जौरासी क्षेत्र में रेलवे लाइन के किनारे-किनारे आगे बढ़े, सोचा आंतारी कस्बे के बगल से निकल जायेंगे। सचेत होकर आंगे बढ़ते चले जा रहे थे।

रेल्वे लाइन डालने के लिये काटी गई पहाड़ियों के बीच से गुजरना चाहते थे माधव ने इधर-उधर दृश्टि दौड़ाई कोई नजर नहीं आया। सभी एक लाइन से चले जा रहे थे। रात होने को थी। आवाज सुनाई पड़ी-‘बागी पहाड़ी के नीचे हैं।’

ऊपर से फायर हुआ। सभी बागी मौत के मुंह में थे। सभी पोजीशन लेने मुड़े। बुरी तरह फंस गये। गोलियां बरसने लगीं। माधव पीछे हट गया। तीन साथी जो आगे के लिये भागे थे सभी को गोलियां लग चुकी थीं।

कुछ साथी पीछे लौट पड़े थे। वे पत्थर की टोरों की ओट लेकर गोलियां चलाने लगे थे। ये निचाई पर थे। पुलिस ऊंचाई पर थी। कान के पास से सनसनाती हुईं जब गोलियां निकल जातीं तो लगता प्राण गये। पुलिस हावी होती जा रही थी। माधव के दल ने और पीछे पोजीशन लेने के लिए और पीछे हटना चाहा, पर हट पाना मुश्किल हो गया।

घायल साथी घिसिट कर आगे निकल गये। अब वे भी सुरक्षित स्थान का आश्रय ले चुके। उनमें से एक ने गोलियां चलाना शुरू कर दी थीं। माधव का साहस बढ़ गया। पुलिस दोनों की मार से सुरक्षित होने पीछे हटी। माधव को मौका मिलगया। पीछे एक मन्दिर की छतरी बनी थी। अब माधव इसकी आड़ में हो पुलिस पर वार करने लगा।

अन्धकार गहरा हो गया। तभी वहां से ट्रेन के गुजरने का संकेत सिगनल से दिखा। सभी का ध्यान उस ओर गया। माधव के दल ने वक्त का लाभ उठाना चाहा। ट्रेन आने से पहले माधव पटरी के पार हो गया। इस तरह माधव ने अपने घायल साथियों के पास जाने का इरादा पक्का कर लिया। जैसे ही ट्रेन गुजरी। माधव ट्रेन के वेग के साथ दौड़ा और घाटी के उस पार पहुंच गया।

ट्रेन गुजर गई। गोलियां चलना फिर शुरू हो गयीं। अब की बार घायलों की ओर तेजी से गोलियां चलने लगीं। ख्ह देखकर पुलिस ने गोलियां चलाना बन्द कर दीं।

अन्धेरा गहरा होने लगा माधव आगे बढ़ गया। पीछे वाले साथियों को स्वर के गुप्त संकेत से इशारा किया कि मैं आगे आगे चल रहा हूँ। आप लोग चले आये। अ बवह सुरक्षित स्थान पर पहंुच कर साथियों की प्रतीक्षा करने लगा। घायल साथियों की मरहमपट्टी करने लगा। एक की हालत गम्भीर थी गोलियां उसके शरीर में थीं रात के अंधेरे में गोलियां निकालना कठिन था।

साथियों की प्रतीक्षा करते आधा घण्टा व्यतीत हो गया। तब कहीं दल के लोग वहां आ पाये। अब सभी उन्हें ऐसी जगह ले जाना चाहते थ,े जहां डॉक्टर को बुलाया जा सके। आंतरी स्टेशन तक का रास्ता पार करने में रात्री के दस बज गये। पैसीजर ट्रेन के आने का समय हो गया। साथियों के भरोसे घायलों को छोड़ माधव ने ग्वालियर से डॉक्टर लाने का प्रोग्राम बना डाला। सारी रूपरेखा मित्रों को समझा दी। पैसेंजर ट्रेन आ गई। माधव ने अपना बेश बदलकर ट्रेन का टिकट लिया और ट्रेन में बैठ गया।

ग्वालियर में कोई बड़ा डॉक्टर तो ग्वालियर से बाहर आने तैयार न हुआ।

माधव को एक नाम याद आया। डॉक्टर मलहोत्रा चन्द्रबदनी नाके पर रहता है। सोचा- वह पैसे के लालच में चला जायेगा। यह सोचते हुये वह डॉक्टर के घर पहंुचगया। दरवाजे पर वैल लगी थी। दबाया ! थोड़ी देर से डॉक्टर ने दरवाजा खोला पूंछा क्या बात है ?

‘मरीज है सख्त बीमार है।‘

‘कहां है मरीज ?‘

‘मरीज यहीं शहर में नाका चुंगी के पास होटल में है।‘

'बहुत दूर है उसे यहीं ले आओ।'

'साहब वह लाने लायक नहीं है आप जरा जल्दी कीजिए।'

'जानते हो मेरी रात में कहीं जाने की फीस पचास रूपए है माधव ने झट कहा -'जानता हूँ।' डॉक्टर ने अब माधव से पूछा।

'उसे क्या बात हो गई हैं ?'

'साहब उसके घाव है चोट लगी है। आपरेशन भी करना पड़ सकता है।'

'लेकिन वहां आपरेशन बिना थियेटर के कैसे होगा ? भइया तब तो उसे बड़े अस्पताल भर्ती करवा दो।'

'लेकिन डॉक्टर साहब आप साथ चलें, जो फीस होगी दे दूंगा। मरीज को साथ लिवा लाये।'

'ठीक है चलता हूँ, ,पर कोई पुलिस-उलिस का केस तो नहीं है।' भाई एक बार फंस चुका हूँ। डरता हूँ।'

'आप चिन्ता न करें साहब ऐसी कोई बात नहीं है। अरे जो बात होगी। आप से कौन छिपी रहेगी। आप जरा जल्दी कीजिए। बात सुनकर डॉक्टर अन्दर चला गया। थोड़ी देर में बैग लिए हुए डॉक्टर उपस्थित हो गया। बोला चलो -

'कैसे पहुंचेगे वहां तक ?' माधव बोला -

'साहब कोई साधन तो नहीं है तांगा देखते हैं।'

डॉक्टर क्रोध में आ गया।- 'यहां इस समय तांगे मिलने वाले नहीं हैं। इससे तो मैं अपनी मोटर साइकिल निकाल लेता हूँ। लेकिन पेट्रोल का खर्च देना पड़ेगा।'

माधव झट से बोला- हां हां साहब जो होगा दे दूंगा। डॉक्टर ने एक सटर खोलकर मोटर साइकिल निकाली। माधव को पीछे बिठाया और गाड़ी स्टार्ट कर दी।

नाका चुंगी के होटल एक एक करके पीछे छूटने लगे। डॉक्टर ने मोटर साइकिल की रैफ्तार धीमी कर दी। यह देख माधव ने पीछे से पिस्तौल अड़ा दी और बोला- 'तेज चले चलो नहीं तो ं ं ं।'

'गोली मार दोगे। मरीज नहीं बचाना।'

'मरीज तो तब बच पायेगा जब डॉक्टर मरीज के पास पहुंचेगा।'

'लेकिन इस तरह तो काई डॉक्टर किसी मरीज के नाम पर विश्वास न करेगा।'

'जब डॉक्टर मरीज के पास पहुंच जायेगा तब समझ जायेंगे। सच क्या है ? झूठ क्या है ? क्या उचित अनुचित है। ?'

'तुम कौन हो ?'

'माधव डाकू का नाम तो आपने सुना होगा ?'

'हां ं ं ं ं हां ं ं ं सुना ं ं ं तो ं ं ं है।' माधव नाम सुनते ही उसकी घिघी बंध गई।

'आप घबरायें नहीं। धोखा नहीं दूंगा। वैसे जो कहता हूँ करके दिखला देता हूँ। पुलिस मेरे नाम से कांपती है। मेरे तीन साथियो के गोली लगी है।'

'मुझे बाद में पुलिस परेशान करेगी।'

'कोई मरीज मृत्यु से जूझ रहा है और आपको पुलिस की परेशानी की पड़ी है। मरीज की सेवा करना डॉक्टर का फर्ज है।' माधव गुर्राया तो वह बोला -

'फर्ज का निर्वाह तो तन-मन से करूंगा। पर इस तरह काम करने में उतना मन नहीं रहता।'

'मजबूरी है डॉक्टर ! मौत का विकल्प है, आपके कानून में भी तो इन लोगों के लिये मौत है।'

'आप लोग सरकार से हाजिर होने की बात क्यों नहीं करते ?'

'डॉक्टर बात तो चला रहे हैं। सरकार भी तो इतनी जल्दी झुकने वाली नहीं है।'

'बातें करते करते में जौरासी की घटी निकलकर आंतरी स्टेशन पर पहुंच गए। दल तक पहुंचते-पहुंचते रात्री के साढ़े बारह बज गये। मरीजों की हालत गम्भीर हो गई थी। गोलियां लगने से खून बह रहा था। हवा तेज चल रही थी। आपरेशन की व्यवस्था का अभाव था। स्थिति देखकर डॉक्टर बोला -

'भइया इस स्थिति में ऑपरेशन करना सम्भव नहीं है। खून बहुत निकल चुका है। खतरा बढ़ गया है।'

माधव बोला -'डॉक्टर आप तो ऑपरेशन करें। कैसे भी इनके शरीर से गोलियां निकलना चाहिए।

एक नाले की खाई में आपरेशन की व्यवस्था करली। टार्च के प्रकाश में आपरेशन करना प्रारम्भ कर दिया। पहले ऐसे मरीज को लिया जो सरलता से निपटाया जा सकता था। उसके शरीर से गोली निकालने में देर न लगी। जांघ में गोली लगी थी इसलिए परेशानी अधिक नहीं हुई। डॉक्टर की मदद स्वयं माधव कर रहा था।

उसके बाद तत्काल रामसिंह को लिटाया गया। इसके कन्धे में गोली लगी थी। पहले वाले से इसकी स्थिति गम्भीर थी। आपरेशन करने में एक घण्टा लग गया। पट्टी बांध दी गयी। उसे आराम से लिटा दिया गया।

अब बल्देव पंजाबी का नम्बर था। पेट में गोली लगी थी पर राम सिंह से स्वस्थ दिख रहा था। लेकिन जैसे ही पेट से बंधा फेटा खोला। खून तेजी से बहने लगा। घाव देखकर माधव भी घबड़ा गया। स्थिति गम्भीर हो गई। डॉक्टर ने साहस करके आपरेशन करना शुरू कर दिया।

गोली गहरे पर थी। गोली खोजते-खोजते एक घण्टा हो गया। खून तेजी से बह रहा था। डॉक्टर भी कोई अच्छा न था काम चलाऊ था। आपरेशन के बीच में डॉक्टर ने कई बार कहा-' इसे बड़े अस्पताल में ले जाना पड़ेगा।'

माधव हर बार कहता-' वहां ले जाना असम्भव है। डॉक्टर आपरेशन में लगा रहा। इसी क्रम में आधा घण्टा और व्यतीत हो गया। तब कहीं गोली दिखी। अन्दर से गोली निकालते ही खून तेजी से बहना शुरू हो गया। बेहोशी आ गई। सभी समझ रहे थे बच पाना मुश्किल है। डॉक्टर बोला - इसे खून चाहिए। खून देने को सभी तैयार थे। मगर साधनों का अभाव, व्यवस्था कर पाना सम्भव न हुआ।

सुबह के चार बज गये। सुरक्षित स्थान पर पहुंचने का समय हाथ से निकलता जा रहा था। इसी समय उसने दम तोड़ दिया। अब माधव ने आदेश दिया। डॉक्टर जी आप स्टेशन पहंचें। वहीं, आप की गाड़ी खड़ी है उससे बापस चले जायें। उसे सौ सौ के दस नोंट देकर विदा कर दिया गया।

उस साथी को ऐसी जगह डाल दिया गया, जहां से लोगों की सुबह सुबह नजर में न आये। जिससे दल को दूर निकल जाने का समय मिल जायेगा। उसका सारा सामान और बन्दूक इत्यादि लेकर सभी वहां से चल पड़े। चलते-चलते सुबह के पांच बज गये। अन्य दोनों घायल साथी ठीक थे। धीरे-धीरे वे भी साथ चलने लगे। सड़क पार कर कुई- भटपुरा के जंगलो में वैजनाथ बाबा के स्थान पर लगभग दिन के आठ बजे पहंुच पाये।

सारा दिन व्यतीत करने की सोचकर यहीं रूक गये। सभी दुःखी थे। एक साथी का बिछोह खल रहा था। आज कुछ खाने-पीने में भी मन नहीं लगा। सभी समझ रहे थे। मृत्यु साथी की नहीं स्वयं की हुई है।

बल्देव के घर वालों को जाकर सांत्वना देना आवश्यक था। दिन भर तो यों ही कटा। रात्री में फिर यात्रा शुरू हो गई। आज बल्देव के घर के लोगों को सांत्वना देने सारा दल रवाना हो गया।

बागी आत्मा 12

बारह

पुलिस से मुठभेड़ के बाद माधव ने सभी बागियों के यहां कुशलता की सूचना भिजवा दी थी। लेकिन माधव अपने घर यह सूचना नहीं भेज पाया था। अखबारों में बड़े-बड़े अक्षरों में यह खबर छप चुकी थी। 'आशा को भी यह खबर लग ही गई होगी। चिन्ता मंे होगी। मैं 'कैसा हूँ ?'

यह बात माधव के मन में आयी तो माधव घर जाने को व्याकुल हो उठा।

मधव बोला -'वीरू मैं चाहता हूँ सारा दल मेरे घर की तरफ चले। मैं अपने घर पर कुशलता की अभी खबर भी नहीं भेज पाया। घर पर चिन्ता होगी।'

'हां सरदार खबर तो भेजनी है। चलो सब उधर ही चले चलते हैं।' वीरू ने यह बात सारे बागियों से कह तो सभी उस ओर चलने को तैयार हो गये। यात्रा शुरू हो गई।

अब तो माधव की आंखों में आशा की तस्वीर आकर बैठ गई थी। उसे लगने लगा- वह कह रही है मैं यहां आपकी चिन्ता में मरी जा रही हूँ। आप इतने बड़े एनकाउन्टर की खबर भी नहीं भेज सकते।

माधव के कस्बे के निकट एक काशीपुर नाम का छोटा-सा गांव है। सभी उस गांव में पहुंच गये। माधव ने साथियों को यहीं रूकने का आदेश दे दिया।

उस गांव मंे एक पुरानी हवेली सूनी पड़ी थी। डाकुआंे के डर से मकान मालिक घर छोड़कर शहर चला गया था। माधव ने उसी हबेली का उपयोग करना उचित समझा। सभी उसमें ठहरा दिये गए। भोजन की व्यवस्था कर दी गई। अब माधव उन्हें छोड़कर अपने गांव की ओर चल दिया। रात्रि में चांदनी रास्ता दिखाने का काम कर रही थी।

जैसे ही माधव अपने कस्बे में पहुंचा। पहिले वह अपनी चाची के यहां गया। माधव को पुलिस जैसी ड्रेस में देखकर चाची डर गयी। जब माधव ने उसके पैर छुये तब कहीं उसने उसे पहचान पाया, छाती से चिपका लिया। बोली-

'आ गया है उस दिन से आज सुध ली है। तू चाची को भूल ही गया था। अब माधव ने दस-दस के नोटों की एक गड्डी निकाली और बोला -'ये ले चाची अब तो चैन से जीवन व्यतीत कर।'

'नहीं-नहीं बेटा, मैं तो मेहनत-मजदूरी करके पेट भर लेती हूँ।'

'अरे ले ना कहते हुए नोटों की गड्डी, चाची के हाथ पर रख दी और बोला -'अरे हां चाचाजी कहां हैं ?'

बेटा, वे तो तेरी याद करते-करते भगवान के दरवार को पहुंच गये। उन्हें मरे तो बेटा तीन महीने व्यतीत हो गए। यह कहकर चाची रोने लगी।

माधव बोला -'तू चाची चिन्ता न कर। अरे कोई बात हो तो ये आशा है ना ! उससे कह दिया कर, समझी। वह तेरी सेवा में कमी न रखेगी, और हां तुझे कोई सताता तो नहीं है।

'नहीं बेटा ! कोई नहीं सताता। इस गांव में तो बस वही एक था अब तो सारा गांव चैन में है।

'ठीक है चाचीजी, मैं अब चलता हूँ जल्दी में हूँ।'

'कुछ तो खा लेता है।'

'नहीं चाची, भूख नहीं है, एक जगह जल्दी में पहुंचना है।' कहते हुए घर से निकल आया। चाची देखती रह गई।

माधव आशा के घर पहुंचा। रात्री के 11 बज चुके थे। आशा अपने बिस्तर पर पड़ी सो रही थी। घर के सभी सदस्य सो चुके थे। माधव ने धीरे से दरवाजा खटखटाया। आवाज देकर बुला सकना सम्भव न था।

उसने अपने फारमूले का उपयोग लिया और मकान के अन्दर दाखिल हो गया। उसने अन्दाज किया आशा कहां सोई होगी। वह उसी ओर बढ़ा। आशा के मां-बाप को इस वक्त जगाना उचित नहीं समझा। अब माधव आशा के बिस्तर पर जाकर चुपचाप बैठ गया। उसने अपने कपड़े उतारे। और उसके पास बैठकर उसके चेहरे की सुन्दरता का आनन्द लेने लगा।

चांद की स्वच्छ किरणें घर के द्वार से आशा के मुख पर पड़ रहीं थीं। जिससे उसका मुरझाया हुआ चेहरा भी सुन्दर लग रहा था। माधव ने उसका चेहरा देखकर अन्दाज लगाया कि निराश होकर सोई है। उसे जगाने के लिए उसका मन व्याकुल हो उठा। उसने धीरे से आवाज दी -'आशा ं ं ं ं ।'

आशा जैसे सब कुछ सुन रही हा,े एकदम उठकर बैठ गई जैसे स्वप्न में उसे बुलाया गया हो। कुछ क्षणों तक तो उसे बात का यकीन नहीं हुआ, पर माधव को सामने देखकर बोली -'कितने दिन हो गयें ?' चाहे यहां किसी के प्राण ही निकल जायें। आपको क्या है ? जब से अखबार की खबर सुनी है आज तक नींद नहीं आई है।' कहते हुए शरमा गई। स्वप्न के इस तरह साकार होते वह पहली बार देख रही थी। दोनों के चुप्पी के बाद वह बोली, 'आप दीवार फांदकर आये हैं ?'

'हां तुम्हें कैसे मालूम ?'

अरे किवाड़ खुलवाकर अन्दर आये होते तो मांजी और पिताजी न जाग जाते।

'मैंने सोचा आशा ! उन्हें क्यों तंग करूं। मेंने उन्हें इतनी रात में कश्ट देना उचित नहीं समझा,लेकिन अब कुछ खिलाओगी पिलाओ भी। बहुत तेज भूख लगी है।'

'अभी खाना बना देती हूँ।'

'अरे नहीं खाना बनाओगी तो मांजी व पिताजी जाग जायेंगे। अभी घर में रूखी-सूखी जैसी हो ले आओ।'

'आप आये हैं और ऐसा खाना, अभी आपको सोने की क्या जल्दी है ? बागियों की रातें तो जागने के लिये होती हैं।'

'लेकिन शरीफों की रातें तो सोने के लिए होती हैं। उन्हंे क्यों जगाती हो कम से कम आज की रात ं ं ं।' आशा समझ गई। धीरे से रसोई में गई और रोटियां और अचार ले आई। माधव खाना खाने बैठ गया। खाना खा चुकने के बाद वह आशा के बिस्तर पर ही लेट गया। यह देखकर मजाक में आशा बोली -'अब मैं कहां सोऊं'

'यहां ।'

'बड़े बेशर्म हो गये हो। सुबह आपको मांजी देखेंगी तो क्या कहेंगी ?'

'कहेंगी क्या ? हालचाल पूछने लगेंगी।' खाना खाया कि भूखे सोये।'

'आप क्या कहेंगे ?'

'कह दूंगा रात के बचे-खुचे ससुराल के टुकड़े खा पीकर सो गया था।'

'हाय राम ! आप तो बहुत खराब आदमी हैं।'

'यह अब जान पाई हो, अरे! कोई बागी कभी अच्छा हुआ है।

'माधव क्या जिन्दगी भर हमारा मिलन इसी तरह चुपके-चुपके होगा और मैं विवाहित होकर भी सौभाग्य के चिन्ह धारण न कर पाऊंगी।'

'क्यों कौन रोकता है? तुम्हें ये धारण करने के लिये?'

'आपने ही तो मना कर दिया था कि किसी से कहना नहीं। मैं न भी कहती लेकिन सुहाग देखकर तो सभी जान जाते। इसलिए मैंने अपना सुहाग राधा जी को पहिना दिया है।'

'अरे वाह वाह ! तभी तो मैं कहूँ, कैसी खाली-खाली दिख रही हैं।'

'मेरी इच्छा तो राधा जी पूरी करेंगी।'

'राधा जी देर भी कर सकती हैं। हम तो आर्डरदानी हैं तत्काल इच्छा पूरी कर देते हैं। यह कहते हुए माधव ने आशा के सुर्ख कपोलों पर चुम्बन अंकित कर दिया। आशा ने पूछा -आज'आप मेरे लिये क्या लाये हैं ?'

'तुम तो कह रही थीं कि गरीबों का धन गरीबों की सेवा में लगा दोगी।

'आज भी यही कह रही हूँ।'

'तुम्हारे मन में यह विचार क्यों दृढ़ हो गया है।'

'तुम्हें बागी, तुम्हारी गरीबी ने ही बनाया है। उस दिन तुम्हारे पास पैसे होते तो क्यों दर-दर की ठोकरें खानी पड़तीं। डाकुओं से रूपये न लेते तो ○ ○ ○।'

'बिना इलाज के बापू को मर जाने देता।'

'इसीलिये तो सोचती हूँ कि गरीबों का पैसा गरीबों तक कैसे पहुंचे। विकल्प में एक ही बात मेरे मन में आती है कि इस कस्बे में एक अस्पताल बनवा दिया जाये।'

'अरे वाह ! आशा तुमने तो यह बातें मेरे मुंह की छीन ली । मेरे बापू इलाज के अभाव में ही मरे हैं। उनकी आत्मा को शान्ति तभी मिल सकेगी।'

'आज मुझे कुछ उपहार देना चाहते हैं तो यही दीजिए न।'

'लेकिन यह तो बहुत कीमती उपहार है।'

'इसके अलावा मुझे चाहिए ही क्या ? तुम्हें याद होगा जब हम साथ-साथ पढ़ते थे तो मैं कहा करती थी मुझे नर्स बनना अच्छा लगता है।'

'और मैं कहता था तुम्हें नर्स न बनने दूंगा।'

'तो क्या आप सच में मुझे नर्स न बनने देंगे।'

'देखो आशा नर्स क्या होती है तुम तो उस अस्पताल की मालिक होंगी और हां तुम यह सब कैसे करोगी।

'आपकी मदद से किसी ठेकेदार से पहिले बिल्डिंग बनवानी पड़ेगी उसके बाद एक कमेटी बनाकर व्यवस्था कर देंगे।-

'यह सब कर सकोगी ?'

'क्यों न कर सकेंगे । जब आदमी बागी बन सकता है। किसी अच्छे काम के लिए तो इस कस्बे के सभी लोग मदद करेंगे।'

'अरे वाह ! ये तो आपने बहुत अच्छी बात सोचकर रखी है।'

'उस समय माधव मैं गर्व से कह सकूंगी कि मैं बागी माधव की पत्नी हूँ। जो दीन-दुखियों का सेवक है। मुझसे हीनता की भावना कोसों दूर रहगी।

'आशा मैं भी भाग्यशाली हूँ जो मुझे तुम जैसी भाग्यशाली पत्नी मिली है।'

'आप तो बहुत मक्खन लगाते हैं।' यह बात कहते हुए वह लजा गई। जिसे देख माधव के संयम का बांध टूट गया। दो प्रेमी दिलों की धड़कनें इतने पास आ गईं कि दोनों एक-दूसरे की धड़कनें सुन सकें।

सारी रात्री दोनों न सो सके। जीवन के बारे में नये-नये स्वप्न सजाते रहे। कुछ मिटाते रहे। कुछ बनाते रहे। अस्पताल की योजना पर गहराई से सोचते रहे। योजना बनाते-बनाते सुबह होने का इन्तजार करने लगे।

मुर्गे ने बांग दी। सुबह के सूचक इशारों ने बातों के क्रम में व्यग्रता ला दी। आशा कह रही थी -

'माधव ! काश ं ं ं ये सपना पूरा हो जाये तो ं ं ं।'

'तो क्या ?'

'मेला के दिन देवी पर प्रसाद चढ़ाऊंगी।'

'तब तो यह शुभ कार्य पूरा ही समझो।' कहते हुये माधव ने कलाई में बंधी घड़ी पर नजर डाली सुबह के साढ़े चार बज चुके थे। माधव वहां से जाने की तैयारी करने लगा। यह देख आशा पूछ बैठी-

'कहां जाने की तैयारी है ?'

'दिन कहीं और गुजारेंगे।'

'अब कब आओगे ?'

'रात को ही आ पाऊंगा।'

'मेरा दिन कैसे कटेगा ?'

'रात के स्वप्न देंखकर।'

'अस्पताल का काम कब से प्रारम्भ करोगे ?'

'आज ही शहर जा रहा हूँ। किसी इन्जीनियर से उसका नक्शा बनवाना है। इस्टीमेट तैयार कराना है।'

'यदि पकड़े गये तो ं ं ं।'

'देखना कहीं ऐसा न हो।'

'चिन्ता न करो आशा, तुम्हारी आशाओं पर पानी नहीं फिरने दिया जायेगा। यह कहते हुए वह आशा के माता जी-पिताजी से मिलने कमरे से निकला। वे दोनों जान गये थे। माधव उनके कमरे में पहुंच गया। बोला -'मांजी मैं रात में ही आ गया था। जल्दी जाना चाहता हूँ। रात फिर आऊंगा तब बातें होंगीं।' माधव यह कह कर दरवाजे से बाहर निकल आया।

सारे दिन इधर-उधर घूमा-फिरा। शाम के समय काशीपुर गांव में साथियों से मिलने पहुंचा। उन्हें सारी स्थिति से अवगत कराया। अपनी योजना बताई। सभी उसके कार्य में सहयोग करने तैयार हो गये।

छूसर दिन वह अपने साथ अस्पताल का नक्शा एवं इस्टीमेट साथ लेकर आया। उसे सभी साथियों के सामने रख दिया। इस शुभ कार्य में खर्च की चिन्ता किसी को भी नहीं थी। सभी कहने लगे सरदार आप यहीं कहीं रहकर इस काम की व्यवस्था करें। इसके लिये पैसा की व्यवस्था हम करेंगे।'

'लेकिन कोई गरीब न सताया जाये।'

'आप ऐसी कोई बात सुन लें तब कहना। 'आश्वासन को पाकर माधव लौट आया था। दल के सारे लोग पैसा कमाने की दृश्टि से चले गये।

माधव का समय अस्पताल के कामों में व्यतीत होने लगा था। दिन कहीं भी गुजारता, पर रात में वह घर पर ही आ जाता। आशा के माता-पिता अत्यधिक रूश्ट इसलिये रहने लगे थे कि वह अपनी सारी कमाई अस्पताल के लिए बर्बाद कर रहा था। इसी कारण माधव की अस्पताल की योजना में कभी सरीख न होते । कस्बे में यह अफवाह फैल गई थी कि एक महात्मा जी इस कस्बे में अस्पताल खुलवाना चाहते हैं।

अफवाह के बाद से लोग महात्मा जी को देखने व्यग्र रहने लगे थे। अभी तक किसी ने उन महात्मा जी के दर्शन नही किये थे। महात्मा जी के सम्बन्ध में नई-नई अफवाहें सुनने को मिलने लगीं। कुछ लोगों का कहना था महात्मा जी एकदम लोप हो जाते हैं। किसी को दर्शन नहीं देते। कुछ अस्पताल वाली बातों को कोरी कल्पना ही मान रहे थे।

लोगों को तो उस दिन इस बात पर विश्वास हुआ जब अस्पताल बनाने वाला ठेकेदार ही गांव में आ गया।

बिल्डिंग बनाने का कार्य प्रारम्भ हो गया। इस शुभ कार्य को माधव के नाम से जोड़ने की कल्पना किसी के मन में नहीं आई। सभी लोग महात्मा जी का चमत्कार ही समझ रहे थे। अस्पताल में लगभग पचास लाख रूपये की लागत आ रही थी। अब तो

लोगों की भीड़ अस्पताल पर आने लगी। लोग महात्मा जी के बारे में चर्चा करते थे तो सोचते किसी न किसी दिन तो उस सन्त के दर्शन होंगे ही।

अस्पताल पर आशा प्रतिदिन सुबह ही पहुंच जाती। ठेकेदार से बातें करती। ठेकेदार आशा की रूचि देखकर बड़ा प्रभावित हुआ। वह इसके निर्माण के बारे में आशा से चर्चा करने लगा। आशा सभी के समाने उस ठेकेदार से पूछती-'कौन बनवा रहा है इसे?'

'ठेकेदार बस इतना ही कहता, मेरे पास तो दो आदमी आये थे वे कह रहे थे एक महात्मा जी हैं वे बनवा रहे हैं।

मैं क्यों पूछने लगा कौन महात्मा हैं? मुझे तो ठेके के पैसयों से मतलब है, तो पैसे उन्होंने बैंक में जमा कर दिये हैं।' कभी-कभी ठेकेदार कहता, जो भी इसे बनवा रहा है, वह कम से कम अपना पचास लाख रूपये इस काम में खसर्च कर रहा है। तुम्हारे गांव के लिये तो वह महात्मा ही है। उसकी बात सुनकर सभी स्वीकार करते हैं, भईया इस गांव के लिए तो वह महात्मा ही हैं।

सारा गांव आश्चर्य में था। इस गांव में कोई अच्छा महात्मा आ गया है जो इतना धन गांव के लिये लुटा रहा है।

माधव का कार्य क्षेत्र यहीं बन गया था। माधव के साथी समय समय पर माधव के गांव में आते। जो भी धन इकट्ठा हो जाता था। माधव को दे जाते थे। माधव उनके पास प्रगति की सूचना भेजता रहता था। कार्य के बारे में आवश्यक निर्देश भी भेज देता। बीच-बीच में माधव पैसों की व्यवस्था करने अपने साथियों के साथ चला जाता, लेकिन उसे शीघ्र ही लौट आना पड़ता था।

माधव कहीं भी जाता, हर बार अलग भेश बनाकर जाता था। अपने कस्बे में माधव रात को ही आता था। आशा के परिवार के अलावा उसके बारे में कोई कुछ न जान पाया था। इसी क्रम में काम चलते एक वर्श व्यतीत होने को जा रहा था। बिल्डिंग बन कर तैयार हो चुकी थी।

आशा लोगों को बुलाती फिर रही थी। सभी को अस्पताल पर बुलाया जा रहा था। आशा राव वीरेन्द्र सिंह की पत्नी को बुला लायी।

आशा लोगों से पूछने लगी -'अस्पताल के काम को चलाने के लिए एक कमेटी बनाना है।' लोग कहने लगे - तुम्हें क्या हक है ? महात्मा जी का काम है जैसा वे कहेंगे होगा।

आशा बोली- 'रात महात्मा जी मुझे अस्पताल पर मिले थे। उन्होंने ही मुझ से इस काम के लिये कहा है। इसलिए मैंने सभी को यहां बुलाया है। नहीं तो मेरी क्या अटकी थी ?'

रात्री का समय हो गया। मीटिंग की कार्यवाही अन्धेरे में ही चलती रही। प्रकाश की व्यवस्था कौन करे। कुछ लोगों ने प्रकाश के लिए कहा तो आशा बोली -'प्रकाश की क्या जरूरत है ? वैसे ही काम चल रहा है।' तभी एक महात्मा सभा में उपस्थित हो गये। उन्हें देख सभी खड़े हो गये। सभी बोले- महाराज आ गये हैं तो प्रकाश ले आओ।

महात्मा जी बोले- 'नहीं प्रकाश की आवश्यकता नहीं है आप सभी लोग चुपचाप बैठ जायें। महात्मा जी अलग एक पत्थर की पटिया पर बैठ गये। सभी का मुंह उस ओर मुड़ गया। कमेटी का चुनाव किया जाने लगा।

अध्यक्ष पद पर राव वीरेन्द्र सिंह की पत्नी कमला देवी का नाम महात्मा जी की ओर से आया। सभी ने इसका स्वागत किया। कोशाध्यक्ष के पद के लिए आशा का नाम महात्मा जी ने रखा तो सब दंग रह गये। शेश पदों पर पुरूश प्रत्याशी चुने गये। अधिकांश लोग गरीबों में से चुने गये। लोग आश्चर्य कर रहे थे महात्मा जी सभीका नाम कैसे जानते हैं। लोगों में आशा के नाम पर काना-फूसी हुई।

माधव समझ गया बोला -'मैं जानता आप लोग आशाजी के बारे में सोच रहे होंगे। इनकी ईमानदारी पर मुझे पूरा विश्वावस है। इसी कारण मैं घोशित करता हूँ-धन के मामलों में आशाजी को निर्णय लेने के सभी से अधिकार होंगे। ' एक विधान मैंने बनाया है उसमें यह बात साफ-साफ लिख दी है।

कुछ लोग बोले -'महाराज कहीं आशा ने धोखा दे दिया तो ... ?'

'यह मेरा जुम्मा रहा। आप लोग विश्वास करें।' उनकी बात सुनकर सभी चुप रह गये। चुपचाप सारी बात मान ली गईं। विधान में परिवर्तन का अधिकार नहीं दिया गया। संविधान में संशोधन दीन-दुखी हिताय की दृश्टि से आशा की सहमति एवं अध्यक्षा की सहमति से किये जा सकते हैं।

मैंने पचास लाख रूपया अस्पताल के नाम पर एफ0 डी0 रिजर्व बैंक में जमा करा दी है जिसके सूद से अस्पताल का खर्च चलेगा। गरीबों को दवाएं मुफ्त दी जाएं। मैं कोशिश कर रहा हूँ डॉक्टर की व्यवस्था सरकार कर दे। दान-पात्र रखा जाये। कमेटी के सामने उसे खोला जाये। उसकी आमदनी गरीबों के लिए खर्च की जाये।'

कमेटी में यह चर्चा जोर पकड़ गई कि अस्पताल का नाम क्या रखा जाये ?

महात्मा जी बोले -'अध्यक्षा महोदया एवं कोशाध्यक्ष कोई नाम सुझावें।'

आशा झट से बोली -'भगवान माधव के नाम पर अस्पताल का नाम रखा जाये।'

कमला देवी को बोलना पड़ा। हां यह नाम भी ठीक है महात्मा जी के धन से इस प्रकार निर्माण हुआ है। माधव आशा औशधालय नाम रखना चाहता था पर आशा के प्रस्ताव से सहमत होना पड़ रहा था। अध्यक्षा महोदया ने जो बात का समर्थन कर दिया था। सर्व सम्मति से 'माधव चिकित्सालय' अस्पताल का नाम रख दिया गया। अब महात्मा जी उठ खड़े हुये बोले -

'भाई ! अब सारी बातें अपनी कमेटी में निपटाओ। हम तो चलते हैं। सभी उनके चरण छूने को बढ़े तो महात्मा जी ने रोक दिया और जिस रास्ते से वे आये थे उसी रास्ते से पुनः चले गये।

कुछ चर्चाओं के बाद मीटिंग समाप्त हो गई।

कुछ ही दिनों में सरकार ने एक डॉक्टर की नियुक्ति माधव डिस्पेन्सरी के नाम से कर दी। उद्घाटन जिला कलेक्टर से कराने का निश्चय किया गया। सभी तैयारियां की जाने लगीं। अस्पताल के लिये आवश्यक उपकरण खरीद लिये गये।

उद्घाटन का दिन आ गया। कमेटी के सभी लोग कार्य में व्यस्त थे। सभी की निगाहें महात्मा जी को ढूंढने में लगीं थीं। आशा निराश मन से काम में व्यस्त थी। पर सब बातें जानती थी। इसीलिए चुपचाप अपने काम में लगी हुई थी। शाम के पांच बज गये। कलेक्टर साहब आये। उद्घाटन किया। सारा गांव कलेक्टर साहब का भाशण सुनता रहा महात्मा जी के बारे में भी कलेक्टर साहब ने चर्चा की। सभी महात्मा जी के कृतज्ञ थे।

रात्री के दस बजे आशा वहां से निवृत्त होकर लौटी। माधव को बिस्तरे पर सोते हुये पाया। माधव को देखकर बोली -'आपकी सब लोग वहां प्रतीक्षा करते रहे।'

'आशा मुझे डर लगने लगा है कि कहीं पहिचान न लिया जाऊं। आते-आते डर लगने लगा तो इधर चला आया।'

'आज आपने ये बागियों की ड्रेस क्यों पहन रखी है।'

'बागी बनने के लिए।'

'क्यों ? बिना बागी बने काम नहीं चल सकता।'

'आशा मेरा यहां का काम समाप्त हो गया। अस्पताल की जुम्मेदारी तुम्हारी हो गई। अब तो आज की अर्द्धरात्री के बाद से मेरी उन्हीं बीहड़ों के लिए पुनः यात्रा प्रारम्भ हो जायेगी।'

'तो क्या वहां जाकर वही सब कुछ करोगे ?'

'आशा, इतना अच्छा कार्य करने के बाद, कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा।'

'अब कब आओगे?'

'सोचता हूँ आत्म-शुद्धी के लिए शीतला देवी के मेले में अवश्य आऊंगा। कहते हुए झट खड़ा हुआ। माताजी पिताजी भी पास आ गये बोले -'बेटे हम क्या सुन रहे हैं ?'

'तुम जा रहे हो।'

' जी, यहां अधिक दिन हो गये हैं , पकड़ा गया तो ं ं ं ।'

बात सुनकर वे कुछ न बोले अब माधव ही बोला -

'मांजी मेरे पास जो धन शेश बचा था। वह आशा के खर्च के लिए दे दिया और हां अब मेरे से आशा की ये सादगी देखी नहीं जाती अब तो सारा रहस्य खोल देना चाहिए।

आशा अब तुम्हें यह बताने में गर्व होगा कि तुम माधव की पत्नी हो।

'पर ?'

'पर क्या ? अब सारे श्रृंगार करो। मुझे तुम्हारा यह सादा जीवन अच्छा नहीं लगता।' यह सुनकर आशा पूजा के कमरे में गई। राधा जी से कहने लगी-

‘राधाजी मैं सुहागिन बन गई। अब मैं पहने लेती हूँ सारा सुहाग। कहकर सुहाग के सारे उपकरण एक-एक करके धारण करने लगी।‘

माधव समझ गया इसलिए उसके पीछे चला आया था। आशा को श्रृंगार करते देख रहा था। श्रृंगार करके जैसे ही आशा मुड़ी सामने माधव खड़ा था। आशा को श्रृंगार में सजी देख माधव से रहा न गया। आशा को आलिंगन में भर लिया। फिर दोनों सहमे हुए से कमरे से बाहर निकले। चौक में आशा के माता-पिता दोनों ही खड़े थे।

माधव बोला -‘अच्छा अब मैं चलता हूँ।‘ कहकर बाहर निगल गया। सभी सजल नेत्रों से उसे जाते हुए देखते रहे।

दूसरे दिन यह खबर सारे गांव में बिजली के करन्ट की तरह फैल गई। आशा सभी से साफ-साफ कह रही थी। मैं माधव बागी की पत्नी हूँ। उसी ने यह अस्पताल बनवाया है। जब यह बात राव वीरेन्द्र सिंह की पत्नी कमला देवी को पता चली तो वह आशा के घर लड़ने पहुंच गई। तमाम खरी-खोटी सुनाने लगी। आशा चुपचाप सुनती रही। जब वे सुना सुनाकर थक गईं तब बोली-

‘मैं क्या करूं? चाचीजी उसने जंगल में बुलाकर ब्याह कर लिया।‘

‘तो अभी तक यह बा क्यों छिपा कर रखी?‘

‘और क्या करती ?‘ पुलिस के डर से, फिर अस्पताल का सपना ं ं ं। कुछ कहती तो ं ं ं। माधव का डर।

आशा के माता-पिता द्वारा समझाने बुझाने पर वह चली गई। कमला देवी का गुस्सा शायद कभी शान्त न होता पर वे जान रहीं थी कि माधव अभी जिन्दा है। उस के डर से कोई भी जुबान न खोल पा रहा था। वे सोचे जा रही थीं।

महात्मा की अफवाह मात्र अफवाह थी। उस दिन रात में माधव ही था। मैं भी समझ तो रही थी पर ं ं ।ं मुझे अस्पताल की कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया है। जिससे मेरा क्रोध शान्त हो जाये। वह दिल से इतना खराब नहीं है। वैसे तो मेरे पति ही कुछ कम न थे।

गांव के कुछ लोग ‘माधव डिस्पेन्सरी‘ अस्पताल का नाम सुनकर चौंक गये थे तभी आशा ने यह नाम रखवाया था और महात्मा जी आशा की बात मान गये थे। बात कितनी गहरी निकली। सभी को साफ-साफ समझ में आ गया था, लेकिन कुछ भी हो। वीरेन्द्र सिंह अच्छा आदमी न था। माधव ने तो इस गांव में अस्पताल बनवा डाला। वह बहुत अच्छा आदमी है। मन ही मन यह सभी सोचे जा रहे थे। मुंह बाहर कुछ बातें निकल रहीं थीं तो अस्पताल के बारे में हीं।

कस्बे भर में तरह-तरह की चर्चायें रंग पर थीं। पर आशा को इन सब बातों की बिलकुल परवाह न थी। गांव के लोग आशा के मुंह पर तो आशा की प्रशंसा करते सुन जाते। ‘वह तो आशा दीदी की महरबानी है जो इस गांव में अस्पताल बन गया।‘

‘वह कहती -

‘मेरी क्यों ? पैसा तो माधव ने लगाया है सब उसी की मेहरबानी है।‘

पुलिस के पास भी खबर पहुंच गई। खबर सुनते ही दरोगा जी का दौरा हो गया। वे सीधे आशा के घर पहुंचे। दरवाजे पर जाकर गालियां बकने लगे। यह सुनकर आशा बाहर निकल आई, ‘दरोगाजी आप ही बताइये इसमें मेरा क्या दोश है ? अरे उसने जबरदस्ती ब्याह कर लिया तो मैं क्या करती ?‘

पुलिस इन्सपेक्टर गुस्से में आकर बोला -‘तुमने पुलिस को सूचना क्यों नहीं दीं ?‘

‘माधव ने मारने की धमकी दे दी थी तो डर गई। अब तो आप सूचित हो ही गये हैं। अब आप कुछ करिये न।‘

‘यह तो बताओ कि वह इस समय कहां है ?‘

‘कहीं जंगलों में पुलिस के मारे इधर-उधर भागता फिर रहा होगा। आप भी पीछा कीजिये। कहीं ऐसी जगह न छिप जाये कि आप उसे जिन्दगी भर ढूंढते रहें और वह न मिले।‘

‘सुना है अस्पताल बनना शुरू हुआ था तभी वह यही है।‘

‘यही तो देखिए दरोगा जी, वह आपके क्षेत्र में इतने समय रहकर एक अस्पताल बनवा गया। आपको तथा गांव वालों को भी पता भी नहीं चला और जब आज वह चला गया तो आप लोग पूंछने आये हैं।‘

‘तुम्हें बात करने का तमीज नहीं है। तुम जिस तरह व्यंग्य में भरी बातें कर रही हो, हम सब जानते हैं।‘

'सच्चाई आपको व्यंग्य लगी है तो मैं चुप हो जाती हूँ।'

यह बात सुनकर दरोगाज आशा के पास जाकर फुसफुसाये।

आशा बोली-' नहीं, मेरे से यह नहीं हो सकता। मैं तो अपना सारा धन अस्पताल के लिये दे चुकी हूँ। फिर दरोगा जी आपका हिस्सा तो आपके पास पहुंच ही चुका होगा।'

'तो क्या चाय भी नहीं पिलाओगी ?' आशा उठी चाय बनाने चली गई। थोड़ी देर बाद चाय लेकर आई।

अकेली चाय देखकर दरोगा जी बोले -'अरे अकेली चाय ं ं ं?'

'और तो कुछ है नहीं।'

दरोगा जी ने यह सुनकर चुपचाप चाय पी और चले गये।

घटना के चार छै दिन बाद वातावरण सामान्य हो गया। आशा का जब घर मन न लगता तो अस्पताल पहुंच जाती। मरीजों की सेवा करने में लग जाती। इस काम में उसे बेहद शान्ति मिलती थी। एक दिन अस्पताल में नर्स का काम करने की अनुमति भी उसने डॉक्टर से प्राप्त कर ली। उसके बाद उसका जीवन मरीजों की सेवा में ही व्यतीत होने लगा था।

बागी आत्मा 13

तेरह

माधव अपने दल में पहुंचा गया। सभी ने उसे बहुत दिनों बाद बागी की ड्रेस में देखा तो एकदम माधव की जय का नारा गूंज गया।

माधव बोला -'जय तो ईश्वर की बोलना चाहिये। जिसने हम सभी से एक ऐसा काम करवा लिया है जिससे किसी के जीवन रक्षा हो सकेगी।'

बहादुर बोले बिना न रहा -'आप ठीक कहते हैं सरदार।'

'सभी का सहयोग सराहनीय रहा। भाई से अधिक सहयोग आप लोगों का मिला। काश ! भाई होता तो शायद उसका भी इतना सहयोग न मिल पाता।' बात सुनकर सभी चुप रहे। माधव ने आगे बोलने का क्रम जारी रखा -

'आज हम गर्व से जी सकते हैं। हम गर्व से मर भी सकते हैं। हमने गरीबों को नहीं सताया बल्कि गरीबों का माल जो सेठ साहूकारों की तिजोरियों में बन्द था उसे बाहर निकाला है और उन्हीं की सेवा में अर्पित कर दिया है।'

किशन बोले बिना न रहा -

'हां सरदार ! सरकार चाहे जो समझती रहे कि हमने कानून तोड़ा है पर हमने तो एक नया कानून बनाया है कि गरीबों का धन तिजोरियों से मुक्त करके गरीबों की सेवा में लगा दिया जायें।'

बहादुर बोला -'अरे बातें ही बातें करोगे या कुछ खाओगे-पिओगे भी ?'

बात सुनकर एक बागी माधव के लिये खाना ले आया। माधव खाना देखकर बोला -'ये रूखी रोटियां।'

'हां सरदार ! अब ऐसी ही रोटियों में मजा आता है। हमने अस्पताल के लिये एक-एक पैसे को बचाकर ं ं ं ।'

'अरे वाह !' कहते हुए माधव का गला भर आया।

बात का क्रम बदलते हुए बहादुर बोला -'सरदार एक बात सुनीं ?'

'कौन सी बात ? बहादुर !'

'सरदार ! बागी उदयभान है न वह तुम्हारे नाम पर आतंक फैला रहा है।'

'माधव ने प्रश्न कर दिया -कैसा आतंक ?'

'बहादुर ने उत्तर दिया -'अरे सरदार तुमने यह बात नहीं सुनी ?वह मऊछ गांव से स्कूल के पढ़ने वाले बीस लड़का पकड़ लाया है और ऐलान तुम्हारे नाम का करके आया है कि माधव की गेंग ने पकड़े हैं। सब गरीबन के लड़का हैं हजार-हजार पांच-पांच सौ लेकर छोड़ता जा रहा है।

'मेरे नाम से इतना घटिया काम ं ं ं? बहादुर मैं उस उदयभान को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।'

'यह दुश्मनी तो मेहंगी पड़ेगी सरदार !'

'पड़ने दे बहादुर। तू बहादुर होकर दुश्मनी से डरने लगा है। हो सकता है इसमें मारे जायें। तो हमें मरने का अब डर नहीं है। या फिर उसका बागीपन ही भुला देंगे।'

किशन बोला -'तुम जानो सरदार ?'

'नहीं दादा ! यदि आप सभी को यह बात अच्छी नहीं लगी हो तो मरने देते हैं।'

माधव सभी की बात सुनकर बोला-" अरे उसे जो करना है करे। पर हमारे दल का नाम काहे को बदनाम कर रहा है।'

बहादुर बोला -'तो हम उसकी खोज शुरू कर देते हैं। पहले उसे समझाने का प्रयास करेंगे। जब न मानेगा तब उसे देख लेंगे।'

मजबूत सिंह बोला- 'न माना तो मार-मार कर उसका कचूमर निकाल देंगे।' कहते हुए सभी के चेहरे गम्भीर हो गये।

ं

ं

उदयभान के पास सब बातें पहंुच गईं थीं। पर उसने अपना रास्ता नहीं छोड़ा, तो माधव उससे टकराने के लिये अवसर की तलाश में रहने लगा। माधव के दल मंे उससे टकराने के लिए योजनायें बनने लगीं। माधव उसी जंगल में पहुंच गया जिसमें उदयभान रह रहा था।

दिन रात दोनों दल इसी टोह में रहने लगे। कई बार आमना-सामना होते-होते बचा। माधव टकराने की पूरी तैयारी में था। माधव ने उदयभान की अपेक्षा अधिक आत्मविश्वास अर्जित कर लिया था।

'सदकर्मों की ओर चलने से आत्मविश्वास अनायास पैदा हो ही जाता है।'

उदयभान स्थिति देखकर मौका टालने की कोशिश करने लगा। उसने माधव के बारे में सब कुछ सुन रखा था। माधव से टकराने के लिए उसकी हिम्मत टूट रही थी।

शाम का समय था माधव का दल बीहड़ों के संकुचित रास्ते से गुजर रहा था। रास्ता इतना सकरा था कि एक आदमी ही मुश्किल से निकल पा रहा था। मोड़दार चढ़ाव पार करके वे एक चौरस स्थान पर आने वाले थे कि शंका हुई। मजबूत सिंह सबसे आगे था तो उसने संकेत की भाशा से सभी को बता दिया। सबके सब पोजीशन में आ गये। उधर से आवाज आई 'कौन ?'

माधव ने उत्तर दिया -'तुम्हारे बाप।'

'मेरा बाप तो कबका मर चुका होगा।'

'अबे मरा नहीं है तेरे सामने है।'

'तो हो जाये।'

'तो बेटा तुम सामने पड़ ही गये। यदि साहस न हो तो अभी भी निकल भागो।'

व्ह बोला-"तुम मेरे रास्ते से हट जाओ।'

'यह नहीं हो सकता, माधव ने पीछे हटना नहीं सीखा है। इच्छा हो रही है तो हो जाये, दो दो हाथ।'

'बाजी आज नहीं फिर होगी।'

'क्यों ?'

'मेरे साथी मेरे साथ नहीं हैं। और तुम पूरे दल-बल के साथ हो।'

'तो वापिस चले जाओ। लेकिन मेरे नाम पर गरीबों को अब न सताना।'

थोड़ी देर बाद एक धमाका हुआ। वह वापिस जा चुका था। सभी समझ गये।

उस दिन की घटना के बाद उदय के दिल में एक कसक पैदा हो गई थी। वह मन ही मन माधव से बदला लेने बेचैन रहने लगा।

इस घटना के बाद माधव की धाक जम गई थी। अब तो माधव अन्य छोटे डाकुओं से जो कुछ वसूल कर लेता, उसी से खर्च चलता था। पुलिस का हिस्सा पहुंचना बन्द हो गया था। पुलिस इन दिनों माधव की गेंग के पीछे पड़ गई थी। खाने-पीने के लाले पड़ने लगे। दल को भूखा प्यासा रहकर समय गुजारना पड़ता था। माधव का स्वास्थ्य गिरने लगा।

शीतला देवी के मेले का समय आ गया। माधव आशा से मेले के समय घर आने को कह आया था। उसे आत्मशुद्धी के लिए देवी के दर्शन भी करने थे। इसलिए उसने सारे दल को जंगलों में ही छोड़ दिया। बोला -

'आप लोग मेरी तरह चलेंगे तो जल्दी ही मारे जायेंगे, इसलिए अब आप लोगों को जैसा लगे वैसे करो मैं शीतला देवी के दर्शन करने जाना चाहता हूँ।'

'सभी बोले -'हम भी साथ चलें।'

'नहीं मैं ही अकेला जाना चाहता हूँ। उधर पुलिस से मुठभेड़ हो गई तो अपने दल के पास उतना अमनेशन भी नहीं है इसलिए ं ं ं। माधव की बात सभी मान गये। माधव देवी दर्शन करने के लिये चलपड़ा।

शीतला देवी का मेला चैत्र की नव दुर्गाओं में सप्तमी के दिन लगता है। मेला तीन दिन तक चलता रहता है। माधव मेले के एक दिन पहले ही अपने गांव पहुंच गया। सीधा अस्पताल ही पहुंचा। चुपचाप अस्पताल में भर्ती मरीजों को देखने लगा। यह देखकर उसे बडा संतोश मिला। अब उसकी नजर एक नर्स पर पड़ गई। मरीजों के बिस्तरों को ठीक कर रही थी। बिस्तर ठीक करते में उसकी सूरत माधव को दिख गई। आशा मरीजों की सेवा में लगी थी।

डसने भी माधव कारे देख लिया। वह डॉक्टर से छुट्टी मांग कर घर चली आई।

घर आकर अपने कमरे में पहुंच गई। माधव आशा के बिस्तरे पर आराम से लेटा, उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा था। आशा उसे देखकर बोली -'अरे आप यहां ! मैं तो सोच रही थी जाने कब तक आयेंगे।

' तुमने मुझे देख लिया था।'

'आप पुलिस की निगाहों से बचकर भाग सकते हैं, पर मेरी निगाहें धोखा नहीं खा सकतीं। तभी तो मैं अस्पताल से छुट्टी लेकर चली आई हूँ।'

'तुम्हें छुट्टी मांगनी पड़ती है।'

'ंहां माधव, जब मैं आपना पेट भरने के लिए वेतन लेती हूँ तो डॉक्टर से पूछकर ही अस्पताल छोड़ना पड़ता है।'

'तो तुम नौकरी करने लगी हो ?'

'सेवा के बदले आपको अस्पताल से जो कुछ मिल जाता है। मैं उससे संन्तुश्ट हूँ।'

'ठीक है भई ! अब तो तुम मेरे पैसे पर भी निर्भर नहीं रहीं।'

' लूट- खसोट के धन पर कब तक जिया जा सकता था?'

'अरे वाह ! भई मान गया। कितनी ऊंची किस्मत है जो इतने ऊंचे विचारों वाली पत्नी मिली हैं।'

'चलो-चलो रहने दो। इतने दिनों में खबर ली है और आपने अपनी ये क्या सूरत बना रखी है ?'

'सूरत बना डाली है या बन गई है।'

'क्यों ?'

'बस एक चिन्ता बनी रहती है।'

'मैं भी तो सुनूं।'

'बस तुम्हारी गोद भर जाती। शादी के इतने दिन हो गये अभी तक ं ं ं ?'

'आपको ऐसा लगता है' लेकिन मुझे कुछ भी नहीं लगता। दिन भर तो बच्चों की सेवा में लगी रहती हूँ।'

'फिर भी मन तो होता ही है। मैं सोचता हूँ देवी से इस वर्श यही मांग लूं।'

'और मैं देवी से क्या मांगूं ?'

'जो चाहो ं ं ं। वैसे तुम भी यही मांगना। दोनों की बात देवी जरूर सुन लेगी।'

'यह सुनकर बात टालते हुए बोली -'आप तो यूं ही कुछ भी सोचते रहते हैं। आज उपवास करोगे या कुछ खाओगे-पिओगे भी ?'

'जैसी घर मालिक की इच्छा हो उपवास कहेंगे उपवास कर लेते हैं। खाना खिलायें, खाना खालेंगे।' यह सुनकर वह चुपचाप रसोई घर में चली गई।

ं

ं

सुबह चार बजे से पहले ही माधव उठ गया। मेले में मिलने का वादा करके घर से चला गया। अब आशा रात की बातों की यादें सजोने में लग गई थी। वह सोचने लगी- 'ऐसी रातें हमेशा मिलती रहें पर अपने नसीब में कहां रखी हैं । ऐसी रातें तो कुछ ही सुहागिनों को मिल पाती हैं।' वह सोचते हुए उठ खड़ी हुई और सुबह से ही मेले में जाने की तैयारी करने लगी।

ं

ं

हर वर्श की तरह मेले में जाने वालों की सुबह से ही भीड़ प्रारम्भ हो गई थी। आशा सुबह का खाना खा-पीकर घर से निकल पड़ी। एक टोले के साथ वह भी चली जा रही थी। औरतें लोकगीत गाती हुई चली जा रहीं थीं।

'सुन ले, सुन ले, रे लंगुरिया।'

और आशा थी कि चुपचाप कुछ सोचते हुए उनके पीछे-पीछे चली जा रही थी। 'मां इन सब झगरों से मुक्ति दिला दे। जिससे मैं चैन का जीवन व्यतीत कर सकूं। और हां माधव की भी इच्छा पूरी हो जाये क्या-क्या मांगूंगी ?' निर्णय नहीं कर पा रही थी।

इस मेले में दूर-दूर से लोग आते हैं। बागी लोग भी मन की मुरादें लेकर बेश बदलकर मेले में आते हैं। माधव मेले में पहुंच चुका था। वह सोच रहा था- देवी से दया की भीख मांग ली जाये। नहीं आशा के लिए बच्चा मांग लिया जाये। हम लोगों को मार तो सकते हैं पर एक बच्चा पैदा नहीं कर सकते ?

इसके लिए देवी से भीख मांगनी पड़ रही है। नहीं, मेरे से यह भीख नहीं मांगी जायेगी। आशा मांगे चाहे न मांगे। मैं तो देवी से आत्मशान्ति मांगने आया हुं। नहीं आशा के लिए भी कुछ मांगना ही पड़ेगा। इसके बिना आत्मसन्तोश मिलना भी सम्भव नहीं है। यह सोचते-सोचते वह देवी के सामने पहुंच गया। मन में कहा -

'मां आशा के जीवन को सहारा दे दे और मुझे आत्म शान्ति।' यह सोचने में पीछे से भीड़ का धक्का पड़ा और वह देवी के सामने से हट गया।

माधव की स्थिति से आज उदयभान की स्थिति भिन्न न थी। वह माधव से बदला चुकाने का वरदान मांगने देवी के पास आया था। उस दिन हुए अपमान ने उसे दिन-रात सोने नहीं दिया था।

मन बुरी तरह से तप रहा था। सारे दल को इस आग में झोंकने के लिए व्याकुल हो रहा था। राधू भी क्या बेवकूफ बागी है ? उस दिन जिस दिन राधू का बाप राधू को डाकुओं के गिरोह में भरती करवाने आया था। कितना गिड़गिड़ाया था। जाने वह ससुरे पर क्यों पसीज गया। मूर्ख है पता चलाने भेजा था कि माधव मेले में किस रास्ते से आयेगा? और वह पता चला लाया कि माधव मेले के लिए रवाना हो गया।

आज तो माधव मेले में अवश्य मिल सकता है। न हो तो वहीं गोली मार दूंगा। यह सोच करके अपनी जेब में पिस्तौल लोड करके डाल ली। गले के अन्दर थोड़ी-सी रम भी डाल ली। सारे दल को मेले के बाहर लगा दिया। स्वयं ने बेश बदलकर मेले में प्रवेश किया। आंखें माधव की खोजने में लग गईं। कहीं देखा तो पहचान पाता। सोचते हुए मेले में निर्द्वन्दता से घूमने लगा जैसे शेर जंगल में निर्द्वन्द होकर विचरता है।

मेले में थोड़ा घूम फिरने के बाद उसने सोचा - आज हो ही जाये। पर वह भी बेश बदल कर आया होगा। यह सोचते हुए उदय भान की निगाहें माधव को ढूंढने में लगी हुई थीं।

आशा, देवी मां के दर्शन करने के बाद, माधव द्वारा निश्चित स्थान की ओर चल दी। आशा को भूख लगने लगी थी वह इसलिए कहीं नहीं जा पा रही थी कि इधर यहां माधव आये तो ं ं ं ं। लम्बी प्रतीक्षा के बाद एक फकीर उधर आता हुआ दिखाई दिया। वह अपने हाथों में खाने-पीने का सामान लिये था। वह आशा के पास आकर खड़ा हो गया। आशा उसे पहचान गई धीरे से बोली -

'कब से प्रतीक्षा कर रही थी। किसी फकीर की। भूख के मारे मरी जा रही हूँ सोच रही हूँ आज किसी फकीर के हाथ का खाना खाऊं।'

'मैं किसी सुहागिन को तलाशता आया हूँ। अपने साथ उसे खिलाने के लिये मिठाइयां ले आया हूँ।' बातें करते-करते एक झाड़ी की आड़ लेकर छाया में बैठ गये। लोगों की निगाहें भीड़ की तरफ थीं। दोनों ने खाना-खाना शुरू कर दिया।

इसी समय सूटबूट में एक बाबूजी वहां आ खड़े हुए। आशा को शंका हुई। शायद पुलिस वाला है। फंस गये।'

'तुम चिन्ता न करो आशा । वे यहां मुझे नहीं पकड़ सकते। ना ही वे यहां गोली चला सकते हैं।'

'क्यों नहीं चला सकते गोली ?'

' यहां भीड़ है। एक गुनहगार को मारने में यदि बे-गुनाह मर जाये। बात करते में वह और पास आ गया। पास आकर बोला- 'आप पर पानी पीने के लिये कोई बर्तन है ?'

आशा बोली -'हां है तो ं ं ं।'

'तो जरा दीजिये पानी ले आता हूँ प्यास लगी है।' कहकर ओठों पर जीभ फेरने लगा।

माधव ने यह हरकत देख ली अपना खप्पर उसकी ओर बढ़ा दिया वह उस खप्पर को लेकर पानी लेने चला गया। लौटा तो पानी लेकर ।'

'ये लो।'

'आशा ने पानी ले लिया।'

वह बोला 'आप महाराज कहां के हैं ?'

माधव ने समझा दाल में काला है बोला -'मैं ं ं ं बेटा फकीरों का क्या ठिकाना ?'

उसने तीर चलाया -'अरे इस मेले में तो ठिकानेदार फकीर भी मिल जाते हैं।'

माधव के मुंह से निकला -'तुम कौन हो ?'

'छोड़ो फकीर जी अपना काम देखो। वे मतलब किसी का पता न पूछा करो।'

'पता पूछने की अपनी यह पुरानी आदत है तुम कहते हो, पता न पूछा करो।'

'मैं सोचता हूँ तुम ं ं ं।'

'हां और मैं सोचता हूँ तुम ं ं ं।'

'पुलिस वाले हो।'

उदयभान बोला और तुम ं ं ं?

'नहीं उदय। हम गलत जगह फिर टकरा रहे हैं।'

'इससे अच्छी जगह कौन सी हो सकती है ?'

'हां यहां पुलिस भी मौजूद है पकड़े गये तो दोनों पकड़े जायेंगे।'

दोनों एक दूसरे को पहचान गये तो माधव मैदान में आ गया। बोला- 'आशा तुमने इसे पहचाना नहीं। ये उदयभान है मेरा पक्का दुश्मन है।'

'तो आप माधव की पत्नी है आपको मैंने अस्पताल में देखा था इसी अन्दाज से इधर आ गया। माधव से दो दो बातें करनी थीं।

'कहिए क्या हुक्म है ? वैसे दुश्मनी दोस्ती में बदली जा सकती है।'

'कैसे ? मेरा जो अपमान हो गया ?'

'बात तुम्हारी तरफ से बढ़ी है और मैं दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा हूँ।'

'तो भी मेरी बातें माननी पड़ेंगीं।'

'यह तुम्हारा हठ है चलो हम स्वीकार कर लेते हैं।' बीच में आशा बोल पड़ी-'यही तुम्हारी कायरता है।'

'इस कायरता में भी बाजी हारी नहीं जा सकती ।'

आशा चुप रह गई माधव ने पूछा -'उदय एक बात बतलाओ, वे मतलब तुमने मुझसे दुश्मनी क्यों पाल रखी है ?'

'मुझे तुमने नहीं बल्कि तुम्हारे कस्बे के सभी लोगों से सख्त नफरत है।'

'क्यों ?'

'यह एक लम्बी कहानी है।'

'लम्बी कहानी ?'

'एक ऐसी कहानी जिसने मुझे बागी बना दिया और मैं तुम्हारे कस्बे के लोगों का दुश्मन बन गया हूँ। '

'ऐसी क्या बात है ?' यही पूछने पर उदय ने एक चित्र निकाला और माधव को दिखाते हुए बोला -

'यह मेरी मां का है।' माधव चित्र को देखकर अपनी मां की याद करने लगा लेकिन उसे कुछ भी याद नहीं आया उसकी मां तो जब वह दो वर्श का बच्चा था ं ं ं। आह ! काश ! मां की याद होती।'

वह इतना ही सोच पाया था कि उदय कहने लगा -'बहुत दिनों की बात है मेरी मां मर रही थी। मेरी मां को लेकर कस्बे में तरह-तरह की अफवाहें उड़ा करतीं। मैं मां से पूछता तो मां टाल देती थी। लेकिन जिस दिन मां मर रही थी बोली -'बेटा तू जो पूछा करता था वे सब बातें सच हैं।' बात सुनकर मैं रो पड़ा था। मैंने कहा -'मां कह दे वे सब बातें झूठी हैं।'

'बेटा झूठ-झूठ होता है और सच, सच होता है। झूठे के सहारे सच को कब तक गुमराह किया जा सकता है। अन्त में विजय सच की होती है।' कुछ देर वह रूकी। उसने पुनः कहना शुरू किया -

'यही कारण है कि लोग मेरे चरित्र को लेकर तुझसे व्यंग्य करते हैं। मैं तेरे दिल को दुखाना नहीं चाहती थी। इसीलिए झूठ बोल देती। आज अन्त समय में तो सच कहना पड़ रहा है। तू राव वीरेन्द्र सिंह से बदला जरूर ले लेना। जिसने तुझे दूसरे बाप का बना दिया। उसने मेरी सुन्दरता का लाभ उठाकर तेरे पिता को कहीं भेज दिया इधर गुन्डे लगा दिये। मुझे इस कस्बे में लाकर दो हजार रूपये में बेच दिया। आदमी के बस में जब आदमी पड़ जाता है तो निकल भी नहीं पाता। यहां लाकर मेरे साथ जो हुआ। मैं लौटती भी तो कौन सा मुंह लेकर ? अब वह कहने से रूका ं ं ं । तो माधव ने पूछा - 'फिर ?'

'मैं मां के पेट में था मां के साथ मैं भी बिक गया। मेरी मां एक जमींदार की रखैल थी। और मैं लगेटा। वह मेरे साथ कुत्तों की तरह व्यवहार किया जाता था। मुझे उस जमींदार से सख्त घृणा थी।

मां के मरने के बाद मैंने उन सभी से बदला लेने की प्रतिज्ञा कर डाली जिन्होंने मेरी मां को कहां से कहां पहुंचा दिया।' मां के मरने के बाद एक दिन उस जमींदार से मेरी कहा सुनी हो गई। उसने मां के बारे में भला-बुरा कहा तो मैंने रात को सोते समय उसी की बन्दूक से उसकी हत्या कर दी और मैं बागी बन गया।' आशा और माधव एक चित्त हो उसकी कहानी सुने जा रहे थे। उसे देख आशा बोली -'फिर ?'

'फिर मैंने आपके कस्बे में चक्कर लगाना शुरू कर दिये। लोगों को उजाड़ना मेरा काम हो गया। मैं राव वीरेन्द्र सिंह को मारना चाहता था पर ं ं ं।

'पर क्यों नहीं मार सके ?'

'इसलिये कि उसने मेरे कुछ साथियों को मिला लिया था। मैंने सोचा इसे तो कभी भी उड़ा दूंगा। एक बार मैं उस कस्बे में एक सेठ के यहां डाका डालने भी गया था। दृश्टि वीरेन्द्र सिंह पर थी। उसकी किस्मत अच्छी निकली मौका नहीं लग पाया।'

माधव याद करते हुए बोला -'सेठ के यहां ?'

'हां सेठ के यहां। तुम ऐसे क्यों पूंछ रहे हो ?'

'उस दिन लौटते वक्त किसी युवक ने तुमसे पैसे तो नहीं मांगे थे।'

'लेकिन उस युवक को तो राव वीरेन्द्र सिंह ने फंसवा दिया था।'

'तो क्या राव वीरेन्द्र सिंह डाकुओं से मिला हुआ नहीं था ?'

'मिला हुआ तो था। हमारे दल का जो पहले सरदार था वह उसका दोस्त था। इसलिये मैं उसका कुछ न बिगाड़ पाया था। उसने मुझे समझा बुझा दिया कि फिर कभी बदला ले लेना।'

'और तुम मान गये थे।'

'सरदार की सलाह तो माननी ही पड़ती है। आज कोई मेरे दल में मेरी बात न माने तो मैं ं ं ं।'

बात सुनकर बात माधव ने बढ़ाई -'ठीक है जो हुआ, सो हुआ मैंने उसकी हत्या कर दी थी मेरे पास उसी की बन्दूक है।'

'वह शिकार मेरा था और तुम खा गये ?'

'तुमनें उसे शिकार बनाया होता तो आज मैं एक शरीफ आदमी होता। नहीं नहीं राव वीरेन्द्र सिंह तुम्हारा नहीं मेरा ही शिकार था। उसने मेरी मां को मरवा डाला था नहीं नहीं बेच दिया था। मरने की बात पिताजी कहा करते थे।'

'तब तो तुम मेरे भाई हो।'

'मुझे यही लगता है कि तुम ं ं ं तुम ं ं ं ।'

'हां उदय यह तुम्हारी भाभी है।'

'कोई भी यकीन नहीं करेगा हम दोनों ं ं ं भइया।' कहते हुये उदय ने माधव के चरण छू लिये। आशा बोले बिना न रही 'यहां भरत मिलाप हो रहा है कहीं पुलिस तो सेंध तो नहीं लगा रही। उसी समय कुछ लोग भागते हुये वहां से निकले।'

'अरे छोड़ो आशा ये मेले-ढेले हैं। फिर भी ं ं ं। तीनों उठ खड़े हुये अब ऐसी जगह पहुंच गये जहां से भाग पाना सरल था। आशा बोली -'घर चलें'

'उदय ने उत्तर दिया -'भाभी ,आज मुझे छुट्टी नहीं दोगी।'

'क्यों ?'

'आज तुम्हारी देवरानी प्रतीक्षा कर रही होगी।'

'अरे वाह ! तब कोई छोटा ं ं ं।'

'हां भाभी दो छोटे बच्चे भी हैं।'

'बच्चों की बात सुनकर माधव बोला-'लो देवी ने तुम्हारी इच्छा तो हाल ही पूरी कर दी।'

'अपनी-अपनी किस्मत है ? मैं अभी आई' यह कहते हुए आशा मेले में खो गई। दोनों वहीं खड़े रहे। थोड़ी देर बाद आशा लौटी। उसके हाथ में देवी का प्रसाद था।

'यह क्या भाभी ?'

'इच्छा पूरी हो गई तो देवी का कर्ज चुकाना ही था।'

‘भाभी ं ं ं।‘

‘इसे बच्चों के लिए लेते जाओ।‘

‘आप ही लेती चलो।‘

‘हां यह ठीक है क्यों जी दोनों ही बच्चों के पास चलते हैं।‘ सभी सोचते हुए मेले से चले गये।

उदयभान के बच्चों को देखकर दोनों बेहद खुश थे। आशा पढ़ने लिखने के लिये बच्चों को अपने गांव रखना चाहती थी बोली -‘मैं चाहती हूँ ये बच्चे मेरे साथ रहेंगे।‘

‘उदय बोला -‘कौन, मना करता है भाभी उन्हें एक अच्छा सहारा मिल गया है।‘

‘सच !‘

‘सच भाभी।‘

बागी आत्मा 14

चौदह

सीमायें सुख देती हैं। सुख देने के लिए निर्धारित की जाती हैं। गरीबी और अमीरी की भी सीमा होती है। गरीबी सीमा से नीचे सोचनीय विशय बन जाती है। इसी प्रकार अमीरी सीमा से ऊपर अमीरी भी सोचने का विशय है। कहीं अमृत लुट रहा है, कहीं जहर दिया जा रहा है। एक ओर आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आदमी का प्रयत्न दूसरी ओर ऐशो आराम के लिए तड़फन। दोनों की संवेदनाओं में फर्क है।

यही सब सोचते हुए माधव और उदय बीहड़ों में बढ़ते चले जा रहे थे। दोनों खुश थे। मजे-मजे की बातें चल रही थीं जिससे समय काटा जा सके।

‘उदय !‘ माधव ने कहा।

‘क्या दादा ?‘

‘मैंने तुमसे एक बार रूपये उधार लिये थे।‘

‘कब ? मुझे तो याद नहीं।‘

‘जब तुम मेरे कस्बे में डकैती डालने आये थे।‘

‘तो क्या हुआ तुमने तो शायद पिताजी के इलाज के लिये मांगे थे ?‘

‘उधार के नाम पर लिया गया धन वापिस करना ही चाहिये।‘ यह कहते हुए माधव ने रूपयों की एक मुट्ठी उसकी ओर बढ़ा दी और बोला -‘काश ! उस रात तुमने वो पैसे न दिये होते तो पिताजी उस रात ही संसार से विदा हो गये होते।‘

‘आप भावावेश में हैं भईया, उधार दूसरों का चुकाया जाता है।‘

माधव ने फिर कुछ न कहा रूपयों की गड्डी जेब में रख ली। पर कुछ याद आया तो उसने वह गड्डी पुनः जेब से निकाली और पुनः उसे देते हुए बोला -‘उदय जब तू घर जाये तो बच्चों के लिये मेरी ओर से कुछ लेते जाना।‘

‘दादा जब चलेंगे साथ ही चलेंगे।‘

‘पहले इसे रख तो ले।‘ यह सुनकर उसने रूपयों का बन्डल माधव से लेकर अपनी जेब में रख लिया और बोला -‘आज ये आपको क्या हो गया है ?‘

‘आज जाने मेरा मन कैसा हो रहा है इस संसार में जीने की इच्छा भी नहीं रही है।‘

भईया आप ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहे हैं जाने कैसी बातें करने लग गये हो आपकी बातों से तो मुझे भी डर लगने लगा है।‘

'मुझे क्या हो गया है यह मैं स्वयं नहीं समझ पा रहा हूँ। जब से देवी के दर्शन करके आया हूँ मन में ऐसी ही बातें हिलोरें ले रही हैं। अब तो मेरी इच्छा होने लगी है कि इस बन्दूक को ही फेंक दूं।'

'भईया यह आपको क्या हो गया है ? बागी के जीवन का सहारा बन्दूक होती है। बन्दूक को बागी संरक्षक की तरह प्यार करते हैं। जिसने बन्दूक त्याग दी। समझ लो वह जीवन की अन्तिम सांसें जी रहा है। क्योंकि उसके अभाव में वह अपने जीवन की रक्षा भी नहीं कर सकेगा।'

'रे पगले अब जीना कौन चाहता है ? सारी दुनिया जिसके मर जाने का इन्तजार करती हो वह जिये तो किसके लिए ? हां आशा के लिये जीता था पर अब तो आशा को भी ऐसा सहारा मिल गया है, जिसके सहारे उसकी जीवन नैया पार लग जायेगी।'

'लेकिन भैया इन बीहड़ों में एक कदम भी बिना बन्दूक के नहीं रखा जाता है।'

'इस बन्दूक को तुम नहीं सम्हालते तो मैं इसे फेंक देता हूँ अब मेरे से बन्दूक नहीं चलायी जायेगी।'

'क्यों नहीं चलायी जायेगी ?'

'पता नहीं मेरी आत्मा को क्या हो गया है ? ये सारी बातें मेरे अन्तः से निकली हैं। इस बन्दूक से जाने कितने पाप हुये हैं। मुझे यह इतनी भारी लग रही है कि एक-एक कदम चलना मुश्किल हो रहा है।' यह कहकर वह बन्दूक फेंकने को तैयार हो गया।

उदय बोला -'इसे फेंकें नहीं, लाइये आपको इसका बोझ लग रहा है तो मैं लिए लेता हूँ।' कहते हुए उदय बन्दूक ले लेता है।

बन्दूक उसे देकर माधव कहता है- 'उदय तुमने मेरा बहुत बड़ा बोझ हल्का कर दिया।'

'हां-हां बहुत बोझ लादे थे आप। अब आप सुखी हो गए। लेकिन यह तो बतलाइये कितना और चलना है ?'

बस आ गये यहीं कहीं होंगे सभी लोग। सभी को पता चल जायेगा।' कहते हुए चुपचाप चलने लगे। कुछ चलने के बाद राम खोह में पहुंच गये। जंगल में छोटा सा मन्दिर बना है। शाम की आरती हो रही थी। ये दोनों भी उसमंे सम्मलित हो गए। माधव सोचने लगा 'एक हाथ में माला एक में बन्दूक। यह कौन सा पन्थ है ?' जब कार्यक्रम समाप्त हो गया तब माधव बोला -

'आप लोग अच्छे रास्ते पर चल पड़े हैं।'

'यही सोचकर हमने यह शुरू कर दिया है पर सरदार यह तो बताओ आपके साथ यह कौन आये हैं ?'

'तुम लोग इसे नहीं जानते ?'

'नहीं तो ! हमने इन्हें कहां देख है ?'

'आप लोग जानना चाहते हैं ?'

बहादुर बोला -'हां ।'

'ये मेरा भाई है उदयभान।'

बात सुनकर बहादुर ने कहा -'तो क्या ये वही उदयभान हैं ? जो दुश्मनी निभा रहे थे।'

'हां बहादुर ये मेरा दुश्मन था पर अब सगा भाई निकल बैठा।'

बहादुर झट से बोला -'सरदार तुम तो कहते थे तुम्हारे कोई नहीं है।'

'जीवन में कई रहस्य छिपे रहते हैं जब रहस्य उजागर होते हैं तब ं ं ं ।'

'अरे सरदार ये सब बातें हैं। आप जो कहते हैं हम मान लेते हैं। पर आप धोखा तो नहीं खा रहे हैं ?'

'नहीं बहादुर मैं बात की गहराई तक पहुंच गया हूँ धोखे की बात नहीं है।'

'ठीक है सरदार। आप सन्तुश्ट हैं तो हमें क्या ?'

किशन माधव के पास आकर बोला -'बहूरानी तो ठीक है न ?'

'हां दादा ठीक तो है।' अब तक एक साथी भोजन ले आया तो माधव और उदय एक ही बर्तन में भोजन करने लगे। भोजन के बाद सभी मन्दिर में पहुंच गए।

माधव ने घोशणा की -'आज से हम सब का सरदार उदय रहेगा।'

'सरदार हमने बात मान ली कि वह तुम्हारा भाई होगा पर हम उसके दल में मिलना नहीं चाहते।'

'बागी अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं करते। बहादुर मैंने बन्दूक छोड़ दी है इसका मतलब यह नहीं कि ं ं ं तुम ं ं ं!

सरदार भाई बनाकर यह झांसा दे रहा है। कल तक जो दुश्मन था। आज एकदम भाई कैसे निकल बैठा।'

'इसका मतलब है बहादुर तुम मेरे ऊपर भी विश्वास नहीं कर रहे हो।'

'किशन ने बढ़ती लड़ाई को शान्त करना चाहा बोला -'सरदार बनने का हक तो बहादुर को है।'

'लेकिन मैं घोशणा कर चुका हूँ अब चाहे जो हो।'

बात सुनकर बहादुर का साहस बढ़ गया। इन दिनों दल पर माधव का उतना प्रभाव न रह गया था। माधव तो नाम-मात्र का सरदार रह गया था। बहादुर दल की बागडोर सम्हाले हुए था। सभी को यह परिवर्तन अच्छा न लग रहा था। सारा दल माधव से विपरीत हो गया।

बहादुर ने अवसर को न खोना चाहा। पर संकोच कर गया। सभी महसूस कर गये। माधव उदय का साथ दे रहा है। यहां अधिकारों की लड़ाई है। अधिकारों के लिए तो लोग जान तक दे देते हैं। सभी चुप रह गये। सभी के मन में अधिकार, मान अपमान का जहर घुल रहा था।

किशन समन्वय करता हुआ बोला -'आज से हम उदयभान को सरदार मान लेते हैं लेकिन उदय के दल की सलाह तो ले लेना चाहिए।'

माधव बोला -'हां किशन दादा की बात ठीक लगी।' तत्काल सारा दल उदयभान के दल से मिलने निकल पड़ा।

उदयभान का दल जंगल के एक बीहड़ मंे आराम कर रहा था। उदयभान ने रास्ता दिखाया सभी आराम से वहां पहंुच गये। उदय का दल यह तो मेले से ही जान गया था कि माधव और उदय भाई-भाई हैं। अब दल बल को देखकर उदय के दल के साधूसिंह ने व्यंग्य किया -

'सरदार क्या दुश्मन से मिलकर मरवाना चाहते हो।'

बात का जवाब उदय ने दिया -'साधूसिंह तुम्हारा इस तरह बोलना मुझे अच्छा नहीं लगा।'

'अब अच्छा क्यों लगेगा अब तो दूसरे दल का बल मिल गया है।'

'यह सब तुम्हारे मन की गलत फहमी है।'

'गलत फहमी है या सब बातें सच-सच हैं।'

'तुम्हारा इतना साहस बढ़ गया है।'

'जब साथी दुश्मन का दोस्त बन जाये तो वह भी दुश्मन ही हो जाता है।'

'यह उपदेश मुझे अच्छी तरह याद है।'

'कहीं इस उपदेश को तुम भूल तो नहीं गये उदय !' अपना नाम सुनकर उदय ने उसे ललकारा -'तुझे बोलने की तमीज नहीं है साधूसिंह।'

'क्यों क्या बात है ? यही न कि मैंने तुझे सरदार नहीं कहा।'

'अब हम सब को तुमसे विश्वास उठ गया है। हमारा दल अब तुम्हारा मुंह नहीं देखना चाहता।' यह कहते हुए उसने गोली चलानी चाही। माधव समझ गया। फायर मिस हो गया। अब तो साधूसिंह के प्राणों पर आ बनी थी। माधव ने उदय की बन्दूक पकड़ ली।

साधूसिंह ने अवसर का लाभ उठाया। दूसरी गोली चला दी। माधव उदय के सामने आ गया। गोली माधव के पेट में समा गई। माधव चीखा -'साधूसिंह यदि मैं उदय को न रोकता तो ं ं ं।'

लेकिन साधूसिंह अपने दल के साथ जा चुका था। माधव के बल ने उसका पीछा करना चाहा। माधव ने रोक दिया।

'नहीं ! उसे जाने दो वह तो मूर्ख है। आपस की लड़ाई-झगड़े अच्छे नहीं लगते। तुम्हें शीतला की कसम है जो आपस में लड़ो।' कहते हुये वह बेहोश हो गया।

सारा दल माधव के पास आ गया। बहादुर उसके चरणों में गिर पड़ा, 'सरदार हम उदयभान को सरदार मान लेते हैं। पर आप हमें छोड़कर न जाओ।' सभी की आंखों में आंसू थे। बहादुर बार-बार कह रहा था मेरे सरदार बनने के चक्कर में उसके गोली लगी है। और उदय आंसू बहाते हुए बिना कुछ बोले यह सब सुन रहा था। उसे याद आ रहा था पिछली घटनायें जब उन्होंने अपनी बन्दूक त्यागी और उसे फेंकना चाही।

बागी का जीवन भी क्या जीवन है ? वह मारा जाता है तो बन्दूक की गोली से ही, चाहे वह पुलिस की हो, चाहे साथी की। सभी हतप्रभ से खड़े थे। माधव को चेतना आई आंखें खोलीं बोला -

'खड़े-खड़े क्या देखते हो ? मुझे मेरी उसी झोंपड़ी में पहुंचाओ जहां, मेरे पिता ने अन्तिम सांसें लीं हैं। मैं अपने कस्बे में जाकर मरना चाहता हूँ।' सभी ने सोचा वहां ले जाने में फायदा है डॉक्टर घरू है इलाज की व्यवस्था हो सकती है।

दो आदमी दौड़ते हुए कहीं गये, लगभग एक घण्टे में एक घोड़ा ले आये। माधव को उस पर पकड़कर बिठा लिया गया। सारे लोगों की यात्रा माधव के कस्बे के लिए प्रारम्भ हो गयी। रास्ते चलते में माधव बेहोश हो जाता। कभी-कभी चेतना आ जाती अब की बार उसे काफी देर बाद चेतना आयी बोला -

'देखो ऐसे जीवन निकालना बन्द कर दो। अरे कोई रास्ता खोजो -। मेरी आशा से बात हुई है। वह प्रयास कर रही है। उसने जिला कलेक्टर ं ं ं के ं ं ं द्वारा ं ं ं सरकार ं ं ं से ं ं ं बात ं ं ं की ं ं ं है। शायद ं ं ं सफलता मिले। बस मेरी यही अन्तिम इच्छा है।'

बहादुर बोला -'सरदार आप चिन्ता न करें। अपने अस्पताल का डॉक्टर ं ं ं।' इतना ही कह पाया कि वह फिर बेहोश हो गया।

सारा दल गांव के बाहर रह गया। उदयभान व बहादुर उसे छोड़ने गये। आशा को बुला लिया गया। माधव को उन्हें सम्हलाकर दोनों कस्बे से बाहर निकल गये। आशा डॉक्टर को बुलाना चाहती थी। माधव को चेत आया बोला -'मैं कहां हूँ'

आशा झट से बोली -'आप अपने घर में हैं। मैं डॉक्टर को बुलाने भेज रही हूँ।'

'नहीं आशा डॉक्टर अब क्या करेगा ?'

'यह कैसे हो गया ?'

'आशा एक बागी की मौत बन्दूक की गोली से ही होती है। अब तो तुम्हारे लिए सहारा उदय है । उदय के बच्चे हैं। बच्चे नहीं दीखे।'

'मैंने किसी को कुछ नहीं बताया है।'

'यह तुमने अच्छा किया आशा। बच्चों ं ं ं को सम्हालकर रखनां।' और ं ं ं और उदय को आत्म-समर्पण करा ं ं ं देना।

आशा चुप रही वह कुछ क्षण बाद पुनः बोला -

'आशा !'

'हूँ ।'

'अपने अस्पताल का ध्यान रखना। वह गरीबों के लिए है।'

'हां।' कहते हुए वह सिसक-सिसक कर रो पड़ी।'

उसका रोना सुनकर वह बोला -'अरे आशा तुम रो रही हो इसलिए कि मैं मर रहा हूँ। पगली रोते हैं ?'

'आप हमें रोना तो देकर ही जा रहे हैं।'

'भाग्य के लिखे को कौन मेंट सकता है ? वैसे सभी सुख हैं उस जमाने में जब पिता जी मर रहे थे पास में पैसे नहीं थे। आज सब कुछ है बस एक बात ं ं ंऊ ं ं ंऊ ं ं ं उदय को आत्म-समर्पण ं ं ं ं करा ं ं ं देना।' कहते-कहते शान्त हो गया।

आशा समझ गई तो चिल्लाई 'माधव ं ं ं SSS' किशन माधव की खबर लेने आया था। उसे रोता देख बोला -

'बेटी, शान्त रहो। हम सब को जरा दूर निकल जाने दो, नही ंतो पुलिस आ गई तो परेशानी होगी। इनका संस्कार उदय के बड़े बच्चे से करा देना। अच्छा मैं चलता हूँ।' जाते वक्त उसने माधव के पैर छुये और चला गया।

सारे कस्बे में खबर पहुंच गई। चौकीदार आ गया। वह थाने को खबर देने चला गया। सुबह तक पुलिस आ गई। लाश को शहर ले गई। आशा साथ गई। पुलिस ने केश बनाया। माधव बागी पुलिस से मुठभेड़ में मारा गया। आशा चुपचाप देखती रही। रात्री के ग्यारह बजे तक पोस्टमार्टम के बाद लाश मिली। पुलिस ने लाश उसके घर तक पहुंचा दी।

सभी परिजनों व गांव वालों के साथ रात्री व्यतीत हुई। रात भर माधव के बारे में चर्चा होती रही और सुबह की किरणों के साथ तो उसकी अर्थी उठी। गांव के अधिकांश लोग दाह संस्कार में इकट्ठे हुए। लोगों में कानाफूसी सुन पड़ती थी। कोई पुलिस वाला न दीखता था। पुलिस ने तो उसके मृत शरीर को ले जाकर पोस्टमार्टम करवाया खाना पूर्ति की। पुलिस के द्वारा मारा हुआ फाइलों में दिखाया और लाश वापस कर दी।

पुलिस इस आदमी की जिन्दगी भर तलाश करती रही उसे मारने की योजनाएं बनाती रही। उसे जीवित पकड़ने पर इनामें घोशित करती रही। जब उसका मृत शरीर पुलिस को मिल गया। तो फाइलें रंगी गयी। पुलिस पदक प्राप्त करने के लिए, अपना शौर्य फाइलों में भर डाला।

सच तो यह है कि कानून है गरीबों के लिये। जो उससे डरते हैं उसकी चालों में फंस जाते हैं। अमीर तो पैसों के बल पर कानून को खरीद लेते हैं। जो कानून के सिकंजे मंे फंस गया। उसे कानून दण्ड देता है सजा अपराध की नहीं, कानून के सामने आने की है।

लोग अलग तरह से सोचने में लगे थे। दाह संस्कार के बाद सभी लोग मरघट से लौट पड़े। गांव वालों ने खूब भावुकता दिखाई। आपस में कई प्रकार की चर्चाएं बहस का कारण बन गईं।

बागी आत्मा 15

पन्द्रह

सारे दिन उदयभान खन्दक में पड़ा रहा। इतने बड़े जीवन में उसे कभी दुःख नहीं हुआ था। वह तो दूसरों को दुःख देता था। पर आज उसे स्पश्ट अनुभव हो रहा था कि दुःख क्या होता है ? मां के रहस्यमय जीवन ने उसे निश्ठुर बना दिया था। मां के मरने के बाद मां का दुःख भी नहीं हुआ बल्कि यह मां के साथ समाज ने जो कुकृत्य दिये थे उसका बदला लेने को बेचैन हो उठाा था।

आज स्थिति बिलकुल विपरीत थी। जीवन में रहस्यमय ढंग से एक भाई से मुलाकात हुई। कुछ भी उसका सुख न मिल पाया कि आपस की लड़ाई में मारा गया। भाभी ं ं ं भाभी सच में देवी हैं। आज दिन भर उनकी क्या स्थिति रही होगी पुलिस के डर से भाभी को सांन्तवना देने गाव तक न जा सका था अभी तो भाभी जवान ही हैं। कैसे निकालेगी सारी जिन्दगी।

यह अच्छा हुआ है मेरे बच्चे उनके पास हैं अन्यथा उन्हें जीवन निकालना और मुश्किल पड़ जाता। भाभी देवी हैं तभी तो वे अपने पति को सुपथ पर लाने के लिये जीवन भर प्रयत्न करती रहीं। उनसे एक ऐसा काम करवा लिया आज तक न कोई बागी ने ऐसा काम करवाया होगा।

मैं ं ं ं मैं ं ं ं कितना नीच निकला कि सारी जिन्दगी लोगों को सताता रहा। माधव को बदनाम करता रहा। लूट-पाट हत्या में ऐशो-आराम में मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य था। मैं भइया का दुश्मन बन गया। भइया मुझे अच्छे रास्ते पर लाने का प्रयास करते रहे। मैं अपने साथियों को उसके प्रति भड़काता रहा। उनकी मौत का कारण बना मैं।

मेरे कारण ही उन्हें गोली मारी गई । साधूसिंह को दोश देना उचित नहीं है। भइया मुझे सरदार बनाना चाहते थे। बहादुर उनके विपरीत कभी न जाता। कुछ सोचकर रह गया। मेरे साथियों ने सोचा होगा। मैं इस गैंग से मिलकर उन्हें मरवाना चाहता हूँ। साधू सिंह भी तो सरदार बनना चाहता था। उसे मौका मिला वह मौके का लाभ क्यों छोड़ता ?

जो हुआ सो किस्मत से हुआ। अगर भइया जीवित रहते तो आत्म-समर्पण वाली बात पूरी करा डालते। भाभी यह सब करा देगी भाभी समझदार बहुत हैं। किसी से बात करने में डरती नहीं हैं अस्पताल उनकी ही योजना है।

भईया की अर्थी में कितने सारे लोग गये थे। इतने आदमी तो राव वीरेन्द्र सिंह की अर्थी में भी न गये होंगे। सारी कहानी का जड़ तो राव वीरेन्द्र सिंह ही है। भईया भी अजीब थे। दुश्मन की पत्नी को अस्पताल की अध्यक्षा बना गये हैं। यह फायदा तो इससे अवश्य होगा कि दुश्मनी बढ़ने की अपेक्षा दुश्मनी घटेगी ही। सुना है कस्बे के लोग कहते रहते हैं कि वे माधव से अधिक रूश्ट नहीं है। कस्बे के सभी लोग भईया की प्रशंसा करते हैं।

इस प्रकार के विचारों के क्रम में वह सारे दिन खोया रहा। न कुछ खाया, न पिया। रात होने की व्यग्रता से इन्तजार करता रहा जिससे वह घर जा सके। डरा-डरा सा रहा, कहीं पुलिस उन्हें खोजने के लिए निकल न पड़े।

दिन बड़ी मुश्किल से व्यतीत हुआ। शाम हो गई। अब मन में धीरज आया। अन्धेरा सा हो गया तो बिना किसी की परवाह किये वह कस्बे की ओर चल दिया।

जब वह घर पहुंचा तो वह ठिठककर रूक गया। किवाड़ बन्द थे। आवाज लगाना खतरे से खाली नहीं था। जल्दी ही घर के अन्दर भी दाखिल हो जाना चाहता था। उसने किवाड़ को धक्का दिया। अन्दर से कुन्डी बन्द नहीं थी। वह समझ गया मेरी प्रतीक्षा में ही कुन्डी खुली छोड़ी गई है। किवाड़ खोलकर अन्दर दाखिल हो गया। सभी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी फुसफुसाकर रोने लगे। जोर से इसलिये न रो पाये कि कोई सुन न ले कि कौन आया है। थोड़ी देर में उदय के समझाने पर सभी शान्त हो गये।

आशा अपनी देवरानी की ओर निर्देश कर बोली -'भागवती इनके लिए खाना तो दे। बेचारे सारे दिन भूखे प्यासे किसी खाई में पड़े रहे होंगे।

'भाभी शायद किस्मत मंे यही लिखाकर आया हूँ ऐसा ही जीना है ऐसे ही मर जाना है।

'कल से मैं आप लोगों के समर्पण के लिये प्रयास करने ग्वालियर के कलेक्टर के पास जा रही हूँ। देखें सफलता मिलती है या नहीं।'

'भाभी यदि यह काम हो जाये तो भईया की आत्मा को शान्ति मिल सकेगी।'

इतनी ही बातें हो पाई थीं कि भागवती खाना परोस लाई। उदय भोजन करने लगा। सोचने लगा भाभी कितनी विचार शील महिला हैं फिर क्यों इन्होंने एक डाकू से शादी कर डाली ? अभी यह बात पूछना ठीक नहीं है।

तभी आशा बोली -'क्या सोच रहे हो ?'

'कुछ नहीं भाभी।'

'कुछ तो भईया के बारे में !'

'नहीं।'

' तो फिर ?'

'आपके बारे में।'

'मेरे बारे में क्या सोचते हो ? मुझे मेरी नहीं तुम्हारी, भागवती की ओर इन बच्चों की चिन्ता है।'

'तुम्हें मेरे रहते तो चिन्ता करनी ही नहीं चाहिये।'

'आप भी तो अधिक चिन्तित दिखाई दे रही हैं।'

'मेरी क्या है ? मैंने तो जिस दिन एक बागी से शादी की, उसी दिन जानती थी कि ये होगा। जो जिन्दगी भर दूसरों को रूलाने के लिए बागी बना है। उसके लिये भी रोना है। हां उसकी तुम लोगों के आत्मसमर्पण। कीइच्छा पूरी हो जाये।'

'बहुत ही मुश्किल काम है ! एक ओर कड़ा कानून है दूसरी ओर सुधारवादी मांग ? कानून हमारी क्यों सुने ? वह अपनी कहेगा।'

'उदय तुम इसके लिये चिन्तित मत हो। मैं प्रयास कर रही हूँ।'

'भाभी !'

'उदय मैं चाहती हूँ तुम सभी बागियों को आत्मसमर्पण के लिए तैयार करो। जब अधिक संख्या में बिना शर्त लोग आत्मसमर्पण करेंगे तो कानून के ठेकेदार अवश्य सोचेंगे। वे चाहें तो वैसा कानून भी बना सकते हैं, जिससे हमें थोड़ी बहुत सुविधा मिल जाये।'

'ठीक है भाभी सभी को समझाऊंगा।'

'सभी से मेरा नाम लेना कि भाभी ने कहा है। सभी मान जायेंगे फिर तुम्हें भईया की त्रयोदश भी तो करनी है।'

यह बात सुनकर उदय बोला -'भाभी यदि मेरा आत्मसमर्पण हो जाये। इससे अच्छी त्रयोदशी भईया की और क्या हो सकती है ?'

' उदय ! तुम भी अब भईया की तरफ बातें करने लगे हो। अच्छा है इससे भगवती की मांग में सिन्दूर भरने का अधिकार तो बना रहेगा।'

'हां, अगर सरकार मान गई तो।'

'मेरा विश्वास तो है कि सरकार मान जायेगी।'

‘और सरकार न मानी तो ?‘

‘तो क्या जंगल में बन्दूक से मरने से, कानून द्वारा दी गई मौत श्रेश्ठ होती है।‘

‘तुम चाहती हो भाभी मुझे फांसी हो ?‘

‘चाहती तो नहीं हूँ फिर भी यदि फांसी होती है तो ़ ़ ़ ?‘

‘मेरी कोई बात नहीं है भाभी ! पर अन्य बागी फिर आत्मसमर्पण के लिए तैयार न हांगे।‘

‘जब तुम तैयार हो गये हो तो वो क्यों नहीं होंगे ? इकट्ठे सभी को एक साथ फांसी पर लटकाने के प्रश्न पर सरकार अवश्य विचार करेगी।‘

‘कानून अन्धा होता है वह तो साक्ष्य पर निर्भर करता है।‘

‘हम अपने विचार पर दृढ़ हैं। बांकी सब ऊपर वाले की इच्छा पर है जो हो ़ ़ ़।‘

‘अच्छा भाभी अब तो नींद आ रही है सुबह फिर जल्दी उठकर जंगलों में भटकना है।‘

‘तो उठो बिस्तर तैयार है हां जागते सोना ! पुलिस का चक्कर भी लग सकता है।‘

‘आज तो पुलिस ने एक बहुत बड़े बागी को मारा है आज तो वे चैन से सोयेंगे। आज चक्कर लगाने यहां कौन आता है ?‘

‘यह आलश्य अच्छा नहीं है ?‘

‘अच्छा भाभी मैं सचेत सोऊंगा ।‘ कहते हुए वह अपने बिस्तर पर जा लेटा और सोचते-सोचते सो गया।

बागी आत्मा 16

सोलह

आत्मसमर्पण के सम्बन्ध मं चर्चा अपना प्रभाव जमाने लगी थी। आशा की भाग दौड़ सफल होती दिख रही थी। आशा मुख्यमंन्त्री जी से मिली। अपनी बात को उनके सामने रखा। सभी ओर से उसे अनुकूल उत्तर मिले। रेडियो पर प्रतिदिन शाम की न्यूज में विद्युत गति से यह बात फैल गई। अखबारों में तरह-तरह की चर्चायें आने लगीं। सरकार की ओर से शीघ्र ही आत्मसमर्पण की तारीख घोशित कर दी गई। कोई भी अखबार में एक लेख प्रकाशित हुआ उसका सार इस प्रकार है।

चम्बल नदी जो 205 मील लम्बी, इस क्षेत्र में बहती है। यह क्षेत्र जो 205 मील लम्बा है। 5 से 10 मील तक भूमि को पानी के बहाव ने ऐसा काटा है कि 10 फीट से लेकर 100 फीट गहरे गड्ढे बना दिए हैं। जहां खेती नहीं हो सकती है। जीविका-उपार्जन डकैती, चोरी, अपहरण इत्यादि कुकृत्य बन गये हैं। कुछ पहाड़ियों की श्रृंखलाएं भी इसमें सम्मिलित हो गई हैं। जिससे इस क्षेत्र में विशालता और भी आ गई है। इसके प्रभाव में भारत के मध्य का काफी बड़ा भाग आ जाता है। प्रदेश के हिसाब से मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा तक प्रभाव में आ जाते हैं।

इन बीहड़ों में कोई भी उपज व्यवसाय के नाम पर नहीं होती है। जो लोगों को रोजी और रोटी दे सके। यहां तो रोजी-रोटी का निर्णय -‘जिसकी लाठी उसकी भैंस‘ के अनुसार ही होती है। जिसके हाथों में जोर है, बस जर जोरू जमीन उसी की हो जाती है। यहां का पानी आदमी के क्रोध में वृद्धि करता है। आदमी की सहन शक्ति समाप्त हो जाती है। आदमी छोटी-सी बात पर मरने मारने पर उतारू हो जाता है।

यहां के लोग डकैती डालते हैं। चोरी करते हैं और पुलिस के डर से इन भारी भरकम बीहड़ों में जा छिपते हैं। यह क्रम सैकडो वर्शों से इस क्षेत्र में चला आ रहा है। इतना लम्बा इतिहास इस क्षेत्र की भूमि ने अपने अन्तः में छिपा रखा है सारा का सारा इतिहास चोरियों और डकैतियों का ही मिलेगा।

कुछ अखबारों में छपा कि ‘बागी सरदार उदयभान आज जौरा के बीहड़ों में बागी बहादुर, साधूसिंह, किशन तथा अन्य पन्द्रह बागियों के साथ आत्मसमर्पण के सम्बन्ध में विचार-विमर्श कर रहे थे। कुछ लोगों का कहना था- उदयभान जिसके कारण इस पूरे क्षेत्र में आतंक था वह कभी आत्म-समर्पण करेगा ? लोगों को यह असम्भव सा लग रहा है।

कुछ लोगों ने इन चर्चाओं को बेबुनियाद तक बता दिया था। सरकार की तरफ से तारीख निश्चित कर दी गई और जौरा में ही इस सब प्रक्रिया के लिये स्थान निश्चित किया गया है। घोशित दिनांक यहां श्री जयप्रकाश नारायण जी पधार रहे हैं। उनके सामने बागी आत्म-समर्पण करेंगे। सारे क्षेत्र का ध्यान उसी ओर लग गया था। यह सब कैसे होगा ? एक प्रश्न चिन्ह बन गया था।

संयोग से माधव की त्रयोदशी वाली तारीख ही आत्म-समर्पण के लिए घोशित हुई। सरकार से बातचीत करने के बाद आशा बीहड़ों में गई। वहां उसने बागियों से बातचीत की और उन्हें आत्म-विश्वास दिलाया। आत्मसमर्पण के सम्बन्ध में सरकार ने जो घोशणायें की उनके बारे में उनसे चर्चा की।

सरकार ने जौरा क्षेत्र को विशेश क्षेत्र घोशित कर दिया। आत्म-समर्पण के सम्बन्ध में बागियों को सलाह देने सरकार की ओर से कुछ लोग नियुक्त कर दिये गये। शान्ति किशन का सहयोग लिया गया। आशा शान्ति मिशन में सक्रिय कार्यकर्ता बन गई। सभी बागियों को आत्मसमर्पण के लिये सलाह देने का काम कर रहे थे।

इस विशेश क्षेत्र में जनता के आदमी बन्दूक लेकर नहीं जा सकते थे। बागियों पर से सभी प्रतिबन्ध उठा लिये गये। वे अपन हथयारें के साथ कहीं भी घूम फिर सकते हैं।

इस घोशणा के बाद तो इस क्षेत्र में बागी खुले आम घूमते-फिरते नजर आने लगे। जो बागी इस बात पर विचार नहीं कर रहे थे। वे भी इस बात पर विचार करने लगे। जो समझदार थे इस सम्बन्ध में आगे आने के लिए उत्सुक हो उठे।

जौरा के आसपास का लगभग 10 मील का क्षेत्र विशेश क्षेत्र घोशित कर दिया गया जिसमें ग्रामीण व पुलिस वाले बन्दूक लेकर नहीं जाते थे। ऐसा लगने लगा था कि एक ही दिन में इस समस्या का अन्त हो जायेगा।'

पर किसी समस्या का अन्त न दिन में हुआ है न होगा। हां एक चिनगारी उत्पन्न हो गई है जो भविश्य में जलती रहेगी। शायद कभी समस्या का अन्त हो सके।

निश्चित दिनांक को उक्त कैम्प में अपार भीड़ थी। ऐसे लगता था जैसे सारा का सारा चम्बल क्षेत्र यहां आकर इकट्ठा हो गया हो। पुलिस तो वहां थी पर डन्डा पुलिस थी। वह भी बागियों कि लिये नहीं दर्शकों के लिए लगाई गई थी। वहां उपस्थित जन समुदाय की निगाहें उसी मंच की ओर लगी हुई थीं।

मंच पर एक तरफ महात्मा गांधी का चित्र लगा हुआ था। मंच के एक तरफ रामायणों और गीताओं का ढेर लगा हुआ था। यह ढेर क्यों लगाया गया है ? यह कोई भी नहीं समझ पा रहा था। कुछ लोग जो समझ रहे थे। वे सोच रहे थे यह सम्भव नहीं है जिनके हाथों में बन्दूकें रहती थीं वे रामायण और गीता पढ़ा करेंगे।

शाम के ठीक 5 बजे जयप्रकाश नारायण जी घटना स्थल पर आ पहुंचे। उनके आने पर सारे कैम्प में सन्नाटा छा गया। 'महात्मा गांधी की जय' का नारा गूंजने लगा।

कुछ क्षणों तक मंच पर कुछ सलाह-मशवरे हुये। इसके बाद आत्म-समर्पण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। जयप्रकाश जी ने अपना भाशण दिया। सरकार से जो वचन उन्हें मिले उनके बारे में चर्चा की इसके बाद उन्होंने आत्म-समर्पण का अर्थ बताया कि जो बागी आत्म-समर्पण कर रहे हैं वह आत्मा से है जिस काम को आप आज तक करते रहे उसकी पुनरावृत्ति न हो।

इस भाशण के तुरन्त बाद सूचना दी गई कि अब बागी सरदार उदयभान अपनी ओटोमेटिक बन्दूक के साथ आत्म-समर्पण कर रहे हैं। अब सभी ने देखा एक लम्बा पूरा जवान बन्दूक लिये मंच पर आ गया। वह बिना किसी हिचकिचाहट के माईक के सामने आ रूका। उसने एक नजर आशा भीभी पर डाली। वे मंच के एक कोने में चुपचाप बैठी थीं। सूचना हुई बागी उदयभान आप सभी के सामने कुछ निवेदन करना चाहते हैं। सभी दर्शक सुनने को उत्सुक हो उठे।

अब उदयभान ने जनता के सामने हाथ जोड़कर कहना प्रारम्भ किया। बन्दूक गले में डाली थी। वह बोलने लगा -

'हम लोग आज तक जो कुछ भी कुकृत्य करते रहे आप सभी इस बात से परिचत हैं। हम सभी आत्मसमर्पण करने वाले बागी सच्चे मन से उन सभी कामों पर शर्मिन्दा हैं। हमने आप लोगों के साथ मानवोचित व्यवहार भी नहीं किया और हम सभी यह आशा लेकर आत्म-समर्पण कर रहे हैं कि आप लोग हम लोगों एवं हमारे परिवार वालों से अच्छा व्यवहार करेंगे।

इस घटना की सूत्रधार एक महिला है। उनका नाम आशा है। वे बागी माधव की पत्नी हैं। वही माधव जिसने कभी गरीबों को नहीं सताया। हमें यह रास्ता भरने के लिए दिखा गया है कि सभी इस रास्ते पर चलें। यह उनकी अन्तिम इच्छा थी। आज उनकी त्रयोदश्ज्ञी का दिन भी है। हम आत्म-समर्पण कर उनकी त्रयोदशी कर रहे हैं जिससे उनकी आत्मा को शान्ति मिल सकेगी।

आज हम लगभग बीस बागी एक साथ आत्म-समर्पण कर रहे हैं। आशा है आप हमें क्षमादान प्रदान करेंगे।

इसी विश्वास के साथ ं ं ं। वाक्य अधूरा छोड़कर उदयभान ने अपनी बन्दूक महात्मा गांधी के चित्र के सामने डाल दी और आगे बढ़कर आशा भाभी के पैर छू लिये। अब वह जयप्रकाश जी के सामने पहुंच गया। उन्होंने उसे रामायण और गीता की एक-एक प्रति दे दी।

उन्हें स्वीकार कर मंच के एक ओर खड़ा हो गया। एक एक करके सभी ने महात्मा गांधी के चित्र के सामने अपनी बन्दूक डाल दी और आशा भाभी के चरण छुये। जयप्रकाश जी के सामने पहुंच गये। उनके रामायण गीता की प्रतियां स्वीकार करके उदयभान के बगल में खड़े होते गये। जब यह क्रम पूरा हो गया तो दो शब्द बोलने के लिए श्रीमती आशा देवी का नाम लिया गया।

आशा स्पीकर के सामने पहुंच गई। आशा ने अपने भाशण में कहना प्रारम्भ किया -

आप सभी के सामने बागियों ने आत्मसमर्पण किया। आप सभी का सक्रिय सहयोग मिला तो वे निश्चित रूप से देश के अच्छे नागरिक बन सकेंगे। समय की बात थी कि वे बागी बने। आप सभी को सताते रहे। लेकिन आज आप लोगों के सामने आत्म-समर्पण कर दिया है। मैं आप सभी की ओर से इन बागियों को, सुपथ पर चलने के लिए आशीर्वाद प्रदान करती हूँ।

न्याय उन्हें जो भी दण्ड देगा इन लोगों ने उसे स्वीकार करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। तभी यहां समर्पण किया है। मुझे विश्वास है न्याय इन सभी के साथ हमदर्दी का व्यवहार करेगा। उसी अगाध विश्वास के साथ ़ ़ ़। 'जय हिन्द !'

भाशण समाप्ति के बाद पुलिस एस0 पी0 मंच पर पहुंच गया। सभी आत्म-समर्पित बागियों को निर्देश देकर बोला -'मंच से नीचे आप सभी का इंतजार पुलिस की गाड़ी कर रही है कृपया लाइन से चल कर उसमें बैठ जायें।'

यह सुनकर उदयभान चल दिया तो सभी लाइन से उसके पीछे हो लिये। मंच से उतरकर सभी पुलिस की गाड़ी के पास आ गये। आशा भी मंच से उतर आई थी वह पुलिस की गाड़ी के पास आकर खड़ी हो गई थी। जब सभी गाड़ी में बैठने को हुए तो आशा बोली 'मैं बहुत खुश हूँ आज बीस दूल्हे एक साथ अपनी ससुराल जा रहे हैं।' बात सुनकर सभी बागियों के चहरों पर मुस्कराहट आ गई थी।

ččč